संसार और मेरा भर्तार



प्रकाशक – श्री निजानन्द आश्रम रतनपुरी

Nijanand App



श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार

आखरूल जमां इमाम मेंहदी

पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानन्द श्री प्राणनाथ जी

का मुक्ति धाम (दरगाहे मुकद्दस)

श्री पद्मावती पुरी (पन्ना)

Nijanand App

संसार
और
मेरा भर्तार

लेखक – **धर्मवीर जागनी रत्न**
श्री जगदीश चन्द्र जी
संरक्षक – **श्री निजानन्द आश्रम रतनपुरी**
उत्तर प्रदेश
एवम्
श्री निजानन्द आश्रम बड़ोदरा
गुजरात

प्रकाशक – **श्री निजानन्द आश्रम रतनपुरी**
ट्रस्ट रजिस्टर्ड, मुजफ्फरनगर
उत्तर प्रदेश

Nijanand App

विषय सूची

क्रमांक	विषय	पृष्ठ संख्या
1. प्रथम तरंग	क्षर ब्रह्माण्ड	4
2. दूसरी तरंग	बेहद का ब्रह्माण्ड	21
3. तीसरी तरंग	श्रीकृष्ण – तत्व	21
4. चौथी तरंग	श्रीकृष्ण की हकीकत	60
5. पांचवी तरंग	संसार अक्षरातीत को नहीं जानता	84
6. छठी तरंग	श्री प्राणनाथ जी की पहचान	94
7. सातवीं तरंग	बुद्ध और बुद्ध निष्कलंक अवतार	123
8. आठवीं तरंग	श्री कृष्ण और श्री प्राणनाथ में अन्तर	136
9. नवीं तरंग	जीव और आत्मा का भेद	166
10. दसवीं तरंग	श्री प्राणनाथ जी की महिमा	173
11. ग्यारहवीं तरंग	श्री कुलजम स्वरूप की महिमा	186
12. बारहवी तरंग	श्री पद्मावती पुरी धाम की महिमा	196
13. तेरहवीं तरंग	श्री निजानन्द सम्प्रदाय की महिमा	203
14. चौदहवीं तरंग	गादी और श्री प्राणनाथ	213
15. पन्द्रहवीं तरंग	श्री कृष्ण पूर्ण ब्रह्म हैं ही नहीं	228
16. सोलहवीं तरंग	तारतम परिचय	242
17. सत्रहवीं तरंग	श्री पद्मावती पुरी (पन्ना) मन्दिर या मुक्तिधाम	258
18. अठारहवीं तरंग	'सतगुरू की पहचान'	266

Nijanand App

भूमिका

श्री प्राणनाथ जी सहाय

बन्दौं सतगुरू चरण को, करूं सप्रेम प्रणाम।
असुभ हरन मंगल करन, श्री देवचन्द्र जी नाम।।
श्री प्राणनाथ निज मूल पति, श्री मेहेराज सुनाम।
तेज कुवंरी स्यामा युगल पलपल करूं प्रणाम।।"

बालपन में माता–पिता जी की प्यार भरी गोद में पलते समय यह भी ज्ञान आने लगा कि मनुष्य तन बड़े भाग्य से चौरासी लाख योनियों के बाद मिलता है। घर में ही श्री निजानन्द सम्प्रदाय का, श्री प्राणनाथ जी का मन्दिर होने के कारण बड़े–बड़े महान परमहंसों एवं महान् संत पुरूषों का आगमन प्रायः होता रहता था, जिनके चरणों की अपार कृपा एवं वचनों से मेरे संस्कार जागृत होते गए। दस बारह वर्ष की आयु होने पर परमहंस महाराज श्री मेहर दास जी का शुभागमन हुआ। वह मुझे अधिक ही प्यार से समझाते थे। बालपन तो था ही, फिर भी उनकी प्यारी–प्यारी बातें, मानों मेरे आध्यात्मिक जीवन की नींव बन गई। उनके चले जाने के बाद अन्दर जीव तड़फने लगा और ज्ञान होने लगा कि मनुष्य तन किसी खास कार्य के लिए ही मिला है। यह दुनियां का झमेला शादी–मकान–बच्चे और कमाना–खाना, यह तो पशु पक्षी भी इन्सान से कहीं अच्छा कर रहे हैं, पर यह सोचना भी तो हर एक मनुष्य के बस का नहीं, बुद्धि भी हर एक की एक जैसी नहीं होती है। संस्कारों से, सत्संग से इसका विकास होता है "बिनु सत्संग विवेक न होई।" समय बदलता गया, पढ़ाई लिखाई का क्रम पूरा हुआ। साथ ही साथ हनुमान और भगवान राम की भक्ति करने का कुछ समय मिला ही था कि अनहोनी घटनाओं के कारण जो इतिहास मे कभी नहीं हुआ था, यानी, राजा तो बदलते रहे पर प्रजा नहीं बदली थी, वह समय आ पहुँचा और घर–बार मातृ भूमि सब छोड़ना पड़ा, क्योंकि देश का विभाजन हो गया और हमें

Nijanand App

हिन्दुस्तान आना पड़ा। संसार में नए सिरे से बसना, घर बार बनाने में और जीवन के निर्वाह करने के साधन जुटाने में भारी से भारी संकटों का सामना करना पड़ा, पर वह तड़फ ठंडी नहीं हुई थी कि मनुष्य तन किसी खास काम के लिए मिला है। इसी लक्ष्य की तरफ बढ़ते हुए, मैंने इलाहाबाद में हुनमान जी की साधना शुरू की, जिसके फलस्वरूप मुझे उनके साक्षात् दर्शन हुए, किन्तु इतना होने पर भी मुझे शान्ति नहीं मिल सकी, तड़प लगी ही रही।

एकाएक वहां एक संत से बातों ही बातों में यह ज्ञान मिला कि उत्तम पुरूष अक्षरातीत के बिना भवसागर से कोई भी पार नहीं कर सकता, तो वह अक्षरातीत परमात्मा कौन है, कहां रहता है, और संसार के दूसरे देवी देवता क्या परमात्मा नहीं? का विचार मन मे उठा कि इनमें और उनमें क्या अन्तर है? यह बड़ा भारी भेद बतलाने वाले गुरू की खोज शुरू कर दी। कई स्थानों पर भटकने के बाद अन्त में परमहंस महाराज श्री रामरतन दास जी शेरपुर, जड़ौदा पाण्डा, जिला सहारनपुर के चरणों में जाने का अवसर प्राप्त हुआ।

पूज्य महाराज श्री जी के प्रथम मिलन में ही जब उन्होंने मेरे धूल और पसीने से भरे शरीर (क्योंकि मई के महीने में कड़कती धूप और गर्मी में पग यात्रा कर, ननौते स्टेशन से शेरपुर आश्रम आया था) होने पर भी उन्होंने उठ कर गले लगा लिया तो उस समय मेरी अन्तरात्मा तड़प उठी और आवाज आयी कि ऐसी घृणित दशा में गले लगाने वाला कोई महाराज या गादीपति नहीं है, क्योंकि कई स्थानों पर जाने के कारण ज्ञान हो गया था कि गादीपति महाराज लोग तो प्रणाम भी स्वीकार बड़ी कठिनाई से करते हैं। मैंने उनके अन्दर बैठी हुई महान शक्ति का उनके प्रेम भरे स्वरूप से अनुभव किया और उनके चरणों मे अपना सर्वस्व समर्पण कर दिया।

दूसरे ही दिन पूज्य महाराज श्री से मैंने विधिवत् तारतम ग्रहण कर यह ज्ञान समझा कि आज मेरी आत्मा का सम्बन्ध पारब्रह्म से हो गया है। पर अभी तक इस ज्ञान को ले कर भी संशय मिटाने का अवसर नहीं मिल सका था कि यहां के देवी देवताओं और पारब्रह्म में अन्तर क्या

Nijanand App

मैंने अपने सतगुरू को रिझाने के लिए सबसे कठिन मार्ग सेवा को अपनाया, जिसके फलस्वरूप सतगुरू महाराज जी ने मेरी सच्ची सेवा पर प्रसन्न हो कर संसार के कुल देवी देवताओं से परे उस पारब्रह्म अक्षरातीत की सच्ची पहचान करा दी।

मेरी आत्मा ने सतगुरू महाराज की अपार कृपा से जो पारब्रह्म का ज्ञान प्राप्त किया, उसको अपने टूटे फूटे शब्दों में इस ग्रन्थ के द्वारा सब साथियों तक पहुंचा दूं, इसे ही अपना कर्तव्य समझ कर प्रयास कर रहा हूँ।

इस गहरे भवसागर, जिसे कोई भी गोपियों के बिना पार न कर सका और न कर सकता है, इसके अन्दर एक गोताखोर (मरजिया) हो कर जिसने हमें निकाला तथा अपनी निसबत (सम्बन्ध), वाहेदत (एक दिली) और खिलवत की सुध दी एवं इस दुनियां के लिए अपना नाम, धाम, स्वरूप और लीला जाहिर करने के साथ ही सारे ब्रह्मांड को अखण्ड मुक्ति देने का वचन दिया। उस पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानन्द धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी को जाहिर करना हमारा आत्मिक कर्तव्य है – **"मैं भूलों तो तू मुझे पल में दीजे बताए"** की भावना से प्रेरित हो कर धाम धनी की मेहर से शान्ति और ज्ञान के प्रतीक, बेला के फूलों का यह श्वेत पुष्पहार रूपी "संसार और मेरा भर्तार" नामक ग्रंथ श्री प्राणनाथ जी को समर्पित करके सब साथियों तक पहुंचाने की प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ। प्रीति की रीति झांझा प्यार से आप सब इसे अविधारेंगे और अपना अज्ञानी साथी समझ कर त्रुटियों को क्षमा करने की कृपा करेंगे।

आपकी चरण–रज
धर्मवीर जागनी रत्न
जगदीश चन्द्र
संरक्षक–श्री निजानन्द आश्रम रतनपुरी
मु० नगर यू० पी०
एवम्
श्री निजानन्द आश्रम वड़ोदरा
(गुजरात)

Nijanand App

प्रथम तरंग

क्षर ब्रह्मांड

प्रथम लागूं दोऊ चरण को, धनी ए न छुड़ाईयो खिन।
लांक तले की लाल एड़ियाँ, मेरे जीव के एही जीवन।।

अनादि काल से यह सृष्टि के बनने और मिटने का चक्र चल रहा है और अनादि काल तक चलता रहेगा। अनगिनत प्राणियों से युक्त इस दुनियां की विचित्रता को देख कर मनुष्य यह सोचने को मजबूर हो जाता है कि इस मिटने वाले संसार की हकीकत क्या है? इस सृष्टि को चलाने वाला कौन है? वह अपने आप को भी इस बन्धन में पड़ा हुआ देखता है। तो फिर यह बन्धन क्या है? यह कैसे हुआ? इसकी स्थिति कैसे है? और इससे मुक्ति कैसे मिल सकती है? अनात्मा (प्रकृति) क्या है? परमात्मा किसे कहते हैं? और उनका विवेक कैसे होता है और इस संसार चक्र में मनुष्य किस प्रकार भटक रहा है? यदि वह इसके बारे में ध्यान से सोचता है, तो वह इस निर्णय तक पहुँचता है कि—

मैं अनेकों बार जन्म मरण को प्राप्त हो कर नाना प्रकार के गर्भों में रह चुका हूं, अनेकों प्रकार के भोजन कर चुका हूँ। मैनें अनेक माताओं का दूध पीया है, अनेक माता–पिता और मित्र हर जन्म में देखे हैं। मैंनें गर्भ में नीचे मुख और ऊपर पैर कर के न सहने योग्य पीड़ाओं को सहन करते हुए जन्म लिया है।

अनेक वार तरफडी मरीने, दुख देखी आव्या छो पार।
लाख चौरासी भमीने आव्या, आंहीं मध्य देस वेपार।।

को नाम बन्धः कथमेष आगतः
कथं प्रतिष्ठास्य कथं विमोक्षः।
कोऽसावनात्मा परमः क आत्मा
तयोर्विवेक कथमेतदुच्यताम्।।

विवेक चुड़ामणि श्लोक ५१

Nijanand App

अनेक बार तड़प–तड़प कर मरने के बाद बहुत अधिक दुःख का अनुभव करने के बाद इस मनुष्य तन में आए हो। चौरासी लाख योनियों में घूमने के बाद इस मृत्यु लोक में भव से पार होने के लिए आए हो।

माया का यह रूप असत (मिटने वाले), जड़ और दुःखमय इन तीन प्रकार वाला माना गया है। इसके विपरीत पारब्रह्म सत्, चित् और आनन्द लक्षणों वाला है।

यह सारा संसार जो पांच तत्वों से बना हुआ है "व्यक्त" कहलाता है और प्रतिदिन इसका क्षरण (नाश) होता रहता है इसलिए इसे "क्षर" कहते है।

इससे अलग जो तत्व है उसे अविनाशी "अक्षर" कहा जाता है। इस प्रकार उस अव्यक्त अक्षर से पैदा हुआ यह व्यक्त (जिसका वर्णन हो सके) नाम वाला मोहात्मक (मोह से भरा) जगत्, क्षरित (मिट जाने वाला) होने के कारण "क्षर" नाम धारण करता है।

जिस प्रकार मकड़ी जाले को अपने अन्दर से बनाती है और फिर उसे अपने अन्दर ही समेट लेती है। जिस तरह पृथ्वी पर पेड़–पौधे उत्पन्न होते हैं, उसी प्रकार उस अक्षर के मन स्वरूप अव्याकृत से इस संसार

मृतश्चाहं पुनर्जातो जातश्चाहं पुनर्मृतः।
नानायोनि सहस्राणि मयोषितानि यानि वै।।
आहारा विविधा भुक्ताः पीता नानाविधास्तनाः ।
मातरो विविधा दृष्टाः पितरः सुहृदस्तथा।।
अवाङ्मुख पीडयमानो जन्तुश्चैव समन्वितः।

निरूक्त १३/१६

असज्जड़ च दुखं च माया रूपं त्रिधा स्मृतम्।
अतस्तद्विपरीतं हि सच्चिदानन्द लक्षणम्।।

पुराण संहिता १३/४२

कृत्स्नमेतावतस्तात क्षरते व्यक्त संज्ञितम्।
अहन्यहनि भूतात्मा ततः क्षर इति स्मृतः

महाभारत शा० प० ३०२/३५

Nijanand App

में प्रत्येक चीज पैदा होती है। उपनिषद् के इस कथन में मकड़ी के दृष्टान्त से यह समझाया गया है कि जिस प्रकार मकड़ी के शरीर से जाला बनता है और फिर उसी में लीन हो जाता है उसी प्रकार उस अक्षर ब्रह्म की प्रकृति से अनगिनत ब्रह्माण्ड उत्पन्न होते हैं, और मिट जाते हैं, इससे अक्षर ब्रह्म के निज स्वरूप में किसी भी प्रकार का बदलाव नहीं आता, क्योंकि वह केवल सृष्टि का निमित्त (मुख्य) कारण है।

अछर सरूप के पल में, ऐसे कई कोट इंड उपजे।
पल में पैदा करके, फेर वाही पल में खपे।।

किरंतन : ७४/२६

अर्थात् अक्षर ब्रह्म के एक पल में करोड़ों ब्रह्माण्ड बनते हैं और नष्ट हो जाते हैं।

वह अक्षर ब्रह्म न तो किसी इच्छा और न ही किसी कर्त्तव्य के अधीन होकर ब्रह्माण्ड की रचना करते हैं, क्योंकि वह मोह, लोभ, आदि मायावी गुणों से बिल्कुल जुदा हैं। जैसे कोई बालक खेलने के लिए खिलौना बनाता हैं और मिटा देता है, उसी प्रकार अक्षर ब्रह्म करोड़ों ब्रह्माण्डों की रचना करते है और सदा चेतन स्वरूप, परम शुद्ध, अविनाशी वह अपने द्वारा बनाये ब्रह्माण्डों को पल भर में ही नष्ट कर देते हैं।

जिसके द्वारा सृष्टि की उत्पत्ति, पालन और संहार होता है। वही अक्षर ब्रह्म है।

वेदान्त – १/१/३

इस सृष्टि से पहले एक अनादि अखंड अद्वैत ब्रह्म के बिना और किसी का भी स्वरूप (अस्तित्व) नहीं था। यह जगत सृष्टि से पहले अन्धकार से भरा हुआ और अनजान लक्षणों वाला था। उस समय यह

एतदक्षरमित्युक्तं क्षरतीदं यथा जगत्।
जगन्मोहात्मकं प्राहुरव्यक्ताद् व्यक्तसंज्ञकम्।।

म० शा० पर्व० ३०२/३६

यथोर्णनाभिः सृजते गृह्णते च यथा पृथिव्यामोषधयः सम्भवन्ति।
यथा सतः पुरूषात्केशलोमानि तथाक्षरात्संभवतीह विश्वम्।।

मु० उ० १/६

Nijanand App

तर्क द्वारा जाना नहीं जा सकता था, बल्कि सब जगह कोई भी इसकी पहचान का निशान नहीं था।

मनुस्मृतिः १/५

निज लीला ब्रह्म बाल चरित्र-जाकी इच्छा मुलप्रकृत।।

प्रकाश हिन्दुस्तानी ३७/१५

और अपनी इच्छा से रूप को बनाने वाली यह मूल प्रकृति ही सब कारणों का परम कारण है।

पुराण सहिता। १२/१५

अब सुनियो मूल वचन प्रकार, जब नहीं उपज्यो मोह अहंकार।
नाहीं निराकार नाहीं सुन्य, ना निरगुन ना निरंजन।।

प्रकाश हिन्दुस्तानी प्र० ३७ चौ० १४

अब आप परमधाम के उन मूल वचनों को सुनिए, जब मोह तत्व और, अहंकार की रचना नहीं हुई थी। उस समय निराकार, निर्गुण, निरंजन और शून्य, भी नहीं था। शून्य, निराकार, निर्गुण और निरजंन मोहतत्व

न कस्येच्छां न कर्तव्या निर्गुणः प्रकृतेः परः।
तथापि बालवत् क्रीडन कोटि ब्रह्मांड संहतीः।।
सृजते संहरत्येषः कटाक्षाक्षेपमात्रतः।
चिन्मात्रः परमः शुद्धः कुटस्थः पुरूषः पर।।

माहेश्वर तन्त्र १/४६–४७

जन्माद्यस्य यतः।

वे० द० १/१/३

ब्रह्म वा इदमग्र आसीत् ।

शत० ११/१/११/१

आसीदिदं तमोभूतमप्रज्ञातमलक्षणम्।
अप्रतर्क्यमविज्ञेयं प्रसुप्तमिव सर्वतः।।

मनु० १/५

कारणानां च सर्वेषां कारणं चरमं हि सा।
मूल प्रकृतिरेवेयमिच्छा रूपत्वमागता।।

पु० सं० १२/१५

Nijanand App

के ही अलग अलग नाम हैं, क्योंकि

मोह अज्ञान भरमना, करम काल और सुंन।
ए नाम सारे नींद के, निराकार निरगुन।।

कलश हिन्दुस्तानी प्र० २४ चौ० १६

मोहतत्व, अज्ञान, भ्रम, कर्म, काल, निराकार और निर्गुण आदि यह सभी नाम नींद अर्थात् मोह तत्व के ही है।

मोह उपज्यो इतथें, जो सुन्य निराकार।
पल मीच ब्रह्मांड किया, कारज कारन सार।।

कलश हिन्दुस्तानी प्र० २४ चौ० १८

अक्षर ब्रह्म के हुक्म से मोह तत्व या शून्य निराकार की उत्पति हुई है। अक्षर ब्रह्म के पलक झपकते ही रूहों को इश्क रब्द के कारण इस झूठे खेल में उतारा गया है।

पार्वती जी कहती हैं—आपने पहले जो कहा है कि मोह ही इस संसार

यत्त्वयोक्तं पुरा मोहोजगत्कारणरूपकः।
यथा बीजादुद्भवन्ति पत्र पुष्प फलादयः।।
एवं मोहात्समुद्भूतं सदेवासुर मानुषम्।
अज्ञान प्रभावो मोहो मोहाज्जातं चराचरम्।।

मा० त० ५/८–१

इच्छया ससृजे निद्रा त्रिगुणा मोहरूपिणी।
तया विसंसितज्ञानो मुमोह जगदीश्वरः।।

मा० त० ८/६

मोहरूपं तदज्ञानं यस्य शक्तिद्वयं प्रिये।
आवरणा प्रथमा देवि विक्षेपात्मा परा मता।।
स्वप्रकाशं यथा दीपमभ्रपन्नावृतिर्यथां।
निगुह्येतं जितानेन नाना भावान्प्रदर्शयेत्।।
एवं कुटस्थ पुरूषमाव्त्यावरणात्मिका।
ततो विक्षेपरूपेणं विश्वमात्मन्यदर्शयत्।।

मा० त० ८/२, ३, ४

Nijanand App

का कारण रूप है, जैसे बीज से पत्ते, फल, फूल आदि प्रगट होते हैं, इसी प्रकार मोह तत्व, से देवी–देवता, मनुष्य, असुर सभी उत्पन्न होते हैं।

मोह अज्ञान से पैदा होता है और मोह से चर–अचर संसार पैदा होता है।

माहेश्वर तन्त्र ८/१

अक्षर ब्रह्म ने इच्छा से त्रिगुणात्मक मोह रूपी नींद को उत्पन्न किया।

माहेश्वर तन्त्र ८/६

वह अज्ञान मोह रूप है। जिनकी दो शक्तियों में से पहली आवरण शक्ति और दूसरी विक्षेप (चित भ्रमित) करने वाली शक्ति है, जिस प्रकार से दीपक को किसी ढकने वाली वस्तु से ढक दिया जाए तो यह उसी प्रकार अपने प्रकाश को ढक कर अनेक भावों को प्रदर्शित करता है।

माहेश्वर तन्त्र ८/२–३–४

इसी प्रकार जब तक कुटस्थ (अक्षर ब्रह्म के चित्त स्वरूप) सबलिक ब्रह्म के अन्दर स्वप्न का संसार बनाने की भावना उत्पन्न नहीं होती, तब तक संसार की रचना नहीं होती। सबलिक ब्रह्म के अन्दर जो स्वप्न के ब्रह्माण्ड बनाने की शक्ति है, उसे चिदानन्द लहरी कहते है।

अक्षर ब्रह्म – प्रपंच से रहित, निर्विकार, निर्मल–स्वतः प्रकाशित और ज्ञान स्वरूप है। उसमें अज्ञान कभी हो ही नहीं सकता, अतः उस अक्षर ब्रह्म में अज्ञान से उत्पन्न मोह नहीं हो सकता।

जिस प्रकार अंधकार सूर्य को घेरने में किसी प्रकार भी समर्थ नहीं है, उसी प्रकार स्वयं प्रकाशित अक्षर ब्रह्म को अज्ञान आवरण करने में (ढांपने में) समर्थ नहीं हो सकता। जैसे स्वप्न में देखा गया आदमी अकेले स्वप्न देखने वाले को नहीं जानता है, उसी प्रकार सारे प्रमाण भी अक्षर ब्रह्म को नहीं लगते कि उसमें अज्ञान है, इसलिए ऐसी कोई युक्ति नहीं करनी चाहिए जो श्रुति के विरूद्ध हो। जिस प्रकार केवल सत्य और केवल झूठ से सांसारिक व्यवहार नहीं चलता है, बल्कि सत्य और असत्य को मिलाने से ही सांसारिक व्यवहार चलता है। असत्य ही अज्ञान है और केवल सत्य ही ब्रह्म है। भूसी से अंकुर नहीं निकल सकता है और न

Nijanand App

हकीकत में अक्षर ब्रह्म का मूल स्वरूप परमधाम में है। उस स्वरूप पर नींद या मोह का कोई भी असर नहीं पड़ता है। अक्षर ब्रह्म के अन्तःकरण, मन, चित्त, बुद्धि और अहंकार (अव्याकृत, सबलिक, केवल और सत् स्वरूप) हैं। मोह तत्व के अन्दर अक्षर ब्रह्म के मन का स्वरूप अव्याकृत भी अपने स्वरूप को भूल जाता है। अक्षर ब्रह्म अद्वैत है – पारब्रह्म का सत् स्वरूप है और उसके हुक्म मात्र से ही करोड़ों ब्रह्माण्ड एक पल में बनते और मिटते हैं।

ऐसे कोट ब्रहमाण्ड होवें पल में, अद्वैत के हुकम।
ए कहावें ब्रह्म सुध नहीं ब्रह्म घर की, द्वैत अद्वैत नहीं गम।।

किरंतन ३१/६

यह सभी ब्रह्माण्ड अक्षर के मन के स्वरूप से बनते हैं! अक्षर ब्रह्म में स्वप्न किस प्रकार सम्भव है, उसको इस दृष्टान्त से समझा जा सकता है?

ब्रह्माण्ड चौदे तबक, सब सत का सुपन।
इन दृष्टांते समझियो, विचारो वासना मन।।

कलश हिन्दुस्तानी २४/२७

यह चौदह तबकों (लोकों) का ब्रह्माण्ड अक्षर ब्रह्म के मन स्वरूप अव्याकृत का सपना है। इस दृष्टान्त से ही आत्मा और जीव के अन्तर का विचार किया जा सकता है।

सुपन सत सरूप को, तुम कहोगे क्यों कर होए।
ए विध सब जाहेर करूं, ज्यों रहे न धोखा कोए।।

कलश हिन्दुस्तानी २४/२८

आप यहां यह कहोगे कि अक्षर ब्रह्म तो सत है, तो इन्हें सपना कैसे आता है? इसकी भी हकीकत जाहिर लिखी है जिससे कोई भी संशय बाकी न रह जाए।

एक तीर खेंच के छोड़िये, तिन बेधाए कई पात।
सो पात सब एक चोटें, पाव पल में बेधात।।

कलश हिन्दुस्तानी २४/२९

एक तीर खींच कर छोड़ने से बहुत सारे पत्ते छिद जाते हैं, किन्तु सभी पत्ते एक पल के चौथाई हिस्से में ही छिद जाते हैं।

Nijanand App

बाकी न रह जाए।

एक तीर खेंच के छोड़िये, तिन बेधाए कई पात।
सो पात सब एक चोटें, पाव पल में बेधात।।

कलश हिन्दुस्तानी २४/२६

एक तीर खींच कर छोड़ने से बहुत सारे पत्ते छिद जाते हैं, किन्तु सभी पत्ते एक पल के चौथाई हिस्से में ही छिद जाते हैं।

पर पेहेले पात एक बेध के, तो दूजा बेधाए।
यामें सुपन कई उपजे, बेर एती भी कही न जाए।।

कलश हिन्दुस्तानी २४/३०

उसमें भी एक पत्ते से दूसरे पत्ते को छेदने मे जितना समय लगंता है, उससे भी कम समय में अनेकों सपने के ब्रह्मांड बन जाते हैं और फिर मिट जाते हैं।

तो बेर एक की कहा कहूं, इत हुआ कहां सुपन।
पर सत ठौर का असत में, दृष्टांत नहीं कोई अन।।

क० हि० २४/३१

जब इतने कम समय में कई ब्रह्मांड बन जाते हैं, तो एक ब्रह्मांड के बनने में कितना समय लगेगा, उसके बारे में क्या कहूं, अर्थात् इसको स्वप्न तो कहा ही नहीं ज़ा सकता। परन्तु अखण्ड धाम का इस झूठे संसार में स्वप्न के अतिरिक्त और कोई भी दृष्टान्त नहीं दिया जा सकता है।

कूटस्थ अक्षर ब्रह्म के हृदय (चित्त) सबलिक से उत्पन्न सुमंगला शक्ति ने महा मोह रूप नींद को प्रगट किया। इस नींद रूप महा मोहतत्व में उस अव्याकृत से मन का रूप नारायण के रूप में प्रगट होता है। यह

हृदयाकाश निलयात्प्रादुर्भूता सुमङ्गला।
निद्रामुत्पादयामास महामोहमयीं दृढाम्।।
तस्मिन्विमोहजल धावशेत पुरूषो महान्।
तस्मादेव समुत्तस्थौ भूत्वा नारायणः स्वयम्।।
पञ्चावयवसंयुक्तः स एव प्रणवाभिधः।
पञ्चावयव संस्थाना ब्रह्माद्याः पञ्चदेवताः।।

Nijanand App

नारायण ही पांच देवताओं का मूल स्वरूप प्रणव कहलाता है। नारायण रूप प्रणव से ही सदाशिव, ईश्वर, विष्णु, ब्रह्मा और महादेव इन पांच देवों की उत्पत्ति होती है।

पुराण संहिता, अध्याय २४

श्लोक २७ से २६

अव्याकृत ब्रह्म में नाना प्रकार के भाव नहीं होते हैं। माया रूपी उपाधि का संयोग होने से अनेक प्रकार के भाव पैदा होते हैं। उन भावों का जब अलगाव हो जाता है, तो मात्र अव्याकृत ब्रह्म बाकी रह जाता है, उसी की प्रकृति ही माया कहलाती है। इसलिए माया भी नित्य कहलाती है।

यह प्रकृति शुद्ध सत् प्रधान, निर्मल और ज्ञान रूप वाली होती है। उस में सबलिक ब्रह्म का जो प्रतिबिम्ब होता है, वेद के सिद्धान्तों को जानने वाले उसी को पुरूष कहते है। वही काल रूप में बदल कर प्रकृति में क्षोभ (खलबली) पैदा करता है। उसी पुरूष से नारायण की उत्पत्ति होती है, और उसी का दूसरा नाम प्रणव (ओंकार) है। विद्वान लोग उसे

शुद्ध सत्व प्रधाना हि निर्मला ज्ञानरूपिणी।
तत्र यः प्रतिबिम्बोभूदक्षरस्य परात्मनः।।
तमाहुः पुरूषं देवि श्रुति सिद्धान्तवादिनः।
स एव कालरूपेण प्रकृतिक्षोभकारकः।।
तस्मान्नारायणो जज्ञे से एव प्रणवाभिधः।
हिरण्यगर्भमपि तं प्रवदन्ति मनीषिणः।।
शब्दब्रह्मयं प्राहुस्तमेवागमवेदिनः।
तस्माद्वेदाः प्रवर्तन्ते शब्द ब्रह्मात्मना प्रिये।।

मा० ता० २०/२५–२८

वर्षयुग सहस्रान्ते तदण्डमुदकेशयम्।
कालकर्म स्वभावस्थो जीवोऽजीवमजीवयत्।।
स एव पुरूषस्तस्मादण्डं निर्भिद्य निर्गतः।
सहस्रोर्वङघ्रिबाहवक्षः सहस्राननशीर्षवान्।।

मा० २/५/३४–३५

Nijanand App

ही हिरण्यगर्भ भी कहते हैं। शास्त्रों के ज्ञाता लोग उसी को "शब्द ब्रह्म" भी कहते है– उसी शब्द ब्रह्म से वेद प्रगट होते हैं।

माहेश्वर तन्त्र अध्याय २०

श्लोक – २५ से २८

नार–मोह जल को कहते है और नर रूप पुरूष से उत्पन्न होने के कारण उसे नार कहते हैं। उसी मोहतत्व में अक्षर ब्रह्म के मन अव्याकृत के स्वप्न के स्वरूप में मन के रूप को नारायण कहते है।

मनुस्मृति १/१०

मोहजल के अन्दर अण्डा रूप आश्रय स्थान में (हिरण्यमय) विराट पुरूष एक हजार दिव्य वर्षो तक विराजमान रहा ।

भागवत सकन्ध ३/अध्याय ६/ श्लोक ६

वह अण्डा एक हजार दिव्य वर्षो तक गहरी नींद मोहजल में पड़ा रहा। पुनः काल, कर्म और स्वभाव को स्वीकार करने वाले (सबलिक स्वभाव) ने उसे चेतन कर के जागृत किया। उस अण्डे को फोड़ कर उसमें से वही विराट् पुरूष निकला, जिसकी टांगे–चरण–भुजा–नेत्र–मुख और सिर हजारों की संख्या में हैं।

भागवत स्कन्ध २/ अध्याय ५/ श्लोक३४–३५

भागवत के इस श्लोक में जीव शब्द का प्रयोग सबलिक सूरत (ईश्वर) के लिए हुआ है। जीवयति सर्वान् प्राणिनः इति जीवः, जो सब प्राणियों

आपो नारा इति प्रोक्ता आपो वै नरसूनवः।
ता यदस्यायनं पूर्वं तेन नारायणः स्मृतः।।

मनुस्मृति १/१०

हिरण्मयः स पुरूषः सहस्रपरिवत्सरान्।
आण्डकोश उवासाप्सु सर्वसत्त्वोपबृंहितः।।

भा० स्क० ३ अ० ६ श्लोक ६

आदि जीवो महाजीवो विष्णवाख्यः परिकीर्तितः।
स एव सर्व जीवाख्यः आभासात्मा परस्यतु।।

मा० त० ६/२३

Nijanand App

को जीवन प्रदान करता है, उसी ईश्वर को ही जीव कहा जाता है, या वही जीव है।

आदि जीव–महा जीव विष्णु को कहा गया है वह सभी जीव कहे जाने वालों का अपना दूसरा प्रतिबिम्ब है।

माहेश्वर तन्त्र अध्याय ६/श्लोक २३

इस सम्बन्ध में तारतम प्रणालिका का कथन महत्वपूर्ण है – तब चिद्रूप सबलिक ब्रह्म की सबलिक सूरत ने अव्याकृत में होकर महामोह में जो अण्डा था, उसमें आकर प्रवेश किया।

प्रकृती पैदा करे, ऐसे कई इंड आलम।
ए ठौर माया ब्रह्म सबलिक, त्रिगुन की परआतम।।

किरंतन ६५/१०

यह सबलिक ब्रह्म ऐसे करोड़ों माया के ब्रह्मांड बनाते और मिटाते हैं। यही सबलिक ब्रह्म, प्रकृति और त्रिगुण का मूल ठिकाना है।

तारतम की प्रणालिका के अनुसार – सबलिक ब्रह्म को चिद्रूप अक्षर ब्रह्म कहते हैं। (अक्षर का चित्तस्वरूप) चतर्भुज श्याम स्वरूप लक्ष्मी युक्त जुगल है, जिसकी दृष्टि से अव्याकृत से करोड़ों ब्रह्मांड पलक के झपकने में धूल के कणों की भाँति उपज कर नष्ट हो जाते हैं। यह अनन्त कोट ब्रह्मांडों का कर्त्ता सबलिक ब्रह्म है, जो नित्य केवल ब्रह्म के दर्शन को आता है। इसके तीन शरीरों (स्थूल, सूक्ष्म और कारण) में तीन प्रकार की लीला है। इसके सूक्ष्म शरीर में चिदानन्द लहरी है। उस चिदानन्द लहरी में तीन स्थान हैं। इसके कारण शरीर में गोलोकी बाल कृष्ण (बाल मुकुन्द) की लीला है और सूक्ष्म में चित्तरूप ब्रह्म की लीला है और इस चित्तरूप ब्रह्म के स्थूल में जो सामग्री है, उसे वेद और शास्त्र मे सत स्वभाव कहते हैं और उसके सूक्ष्म शरीर को चिद् लक्षण कहते हैं और कारण शरीर में गोलोक की लीला है इसलिए इसको आनन्द लक्षण कहते

तस्य नाभेर भूतपदमं तत्र जातश्चतुर्मुखः।
प्रवरो वेद विदुषां बीजं संसार भुरूहः।।

मा० त० १६/४६

Nijanand App

हैं। इस प्रकार चित्‌रूप अक्षर को ही शास्त्रों और वेदों के ज्ञाता लोग सत्+चित्त+आनन्द (सच्चिदानन्द) कहते हैं और श्रीप्राणनाथ जी की वाणी में इस चित्तरूप ब्रह्म को पारब्रह्म के सत स्वरूप अक्षर का चित्तरूप कहा गया है जिसे सबलिक ब्रह्म कहते हैं और इसी के स्थूल स्वरूप को अव्याकृत, प्रकृति–पुरूष या सतरूप माया कहते हैं।

इस प्रकार श्री मुख वाणी और तारतम प्रणालिका के कथनों से सबलिक ब्रह्म ही माया और त्रैगुण का मूल ठिकाना सिद्ध होता है।

इत अछर को विलस्यो मन, पांच तत्व चौदे भवन।
यामें महा विष्णु मन मन थें त्रैगुन, ताथें थिर चर सब उतपन।।

प्रकाश हिन्दुस्तानी ३७/२४

इस मोह सागर के अन्दर अक्षर ब्रह्म के मन के स्वरूप अव्याकृत के मन ने प्रवेश किया, जिसके कारण यह पांच तत्व तथा चौदह लोक का ब्रह्माण्ड बना। इसमें अव्याकृत के मन का स्वरूप महा विष्णु (आदि नारायण) बने और फिर इस के तीन गुणों से ब्रह्मा, विष्णु और शिव उत्पन्न हुए और उनसे ही यह सारा संसार बना है।

नारायण की नाभि से कंमल निकलता है और उससे ब्रह्मा प्रगट होते हैं। वह ब्रह्मा वेदों के सर्वश्रेष्ठ ज्ञाता कहलाते हैं और संसार रूपी वृक्ष के बीज हैं।

माहेश्वर तन्त्र १६/४७

नाभि अहंकार को कहते हैं। कमल की नाल इच्छा शक्ति और कमल का फूल उनके मन का प्रतीक है।

आदि नारायण के मन में जब यह इच्छा हुई कि मैं अनेक हो जाऊं, तो उससे अहंकार उत्पन्न हुआ, जिससे यह मिटने वाला संसार खड़ा

तस्माद्वा एतस्मादत्मनः आकाशः सम्भूतः।
आकाशाद्वायुः। वायोरग्निः। अग्नेरापः। अदभ्यः।
पृथिवी। पृथिव्या ओषधयः। ओषधिभ्यो अन्नम्।
अन्नाद्रेतः। रेतसः पुरूषः। स वा एषः पुरूषो अन्नरसमयः।।

तै० उ० ब्र० ब० अनु० १

Nijanand App

है। अहंकार रूपी कड़ी जब तक नहीं छूटती, तब तक संसार झूठा होते हुए भी सच्चा लगता है और उसे कोई छोड़ना नहीं चाहता। स्फटिक पत्थर पर यदि लाल रंग का फूल रख दिया जाए, तो वह पत्थर भी लाल रंग का दिखाई देने लगता है। उसका लाल रंग तब तक नहीं जाएगा, जब तैक वह फूल न हटाया जाए, इसी प्रकार जब तक जीव का अहंकार नष्ट नहीं होगा तब तक उसके आवागमन का चक्र समाप्त नहीं होगा, भले ही करोड़ों कल्प क्यों न व्यतीत हो जाएं।

माहेश्वर तन्त्र, अध्याय २१

सात्विक, राजस और तामस इन तीन प्रकार के अहंकार से जड़ आकाश बनता है आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल, जल से पृथ्वी का निर्माण और पृथ्वी से सब उत्पन्न होते हैं। नारायण से लेकर जीवों तक यह सारी सृष्टि मोह (अज्ञान) रूप है। श्रुतियों के द्वारा गान किया गया है कि ब्रह्म एक और अद्वितीय है।

अज्ञान अवस्था में मोह से सारा संसार प्रतीत, होता है। इस सृष्टि प्रक्रिया में २४ तत्व (प्रकृति, महत्तत्व, अहंकार, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध, दस इन्द्रियां, पांच स्थूल भूत–आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी तथा मन) प्रगट होते हैं। इन तत्वों से चौदह लोकों का निर्माण होता है सात ऊपर के लोक और सात नीचे के लोक – चौदह लोक कहे जाते है। अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल और पाताल ये सात नीचे के लोक हैं तथा मृत्यु लोक (भू लोक) भुवर्लोक, स्वर्ग लोक, महर्लोक, जन लोक, तप लोक तथा सत लोक (बैकुण्ठ) ये सात ऊपर के लोक

नारायणादि जीवन्ता सृष्टिर्मोहावधिस्थिस्ता।
एकमेवाद्वितीयं च ब्रह्मेति श्रुतयो जगुः।।

मा० त० ६/१६

हिरण्यगर्भं जगदीशितारं नारायणं यं प्रवदन्ति सन्तः।
सर्वस्य धातारमनन्तमाद्यं प्रधान पुंसोरपि हेतुमीशम्।।
न कारणं तावदुपैति शान्तिं चराचरस्यापि च बीजभूतम्।
यावन्महाकारणमंबिके तत् न शान्तिमायाति च बीजबीजम्।।

मा० त० १/५६–६१

Nijanand App

है। शिव लोक, देव लोक आदि इन ऊपर के लोकों के अन्दर ही हैं। जिस प्रकार रस्सी में सर्प का भ्रम दूर हो जाने पर उस रस्सी से पुनः व्यक्ति को डर नहीं लगता है, उसी प्रकार जीव को ब्रह्म ज्ञान हो जाने पर मोह से बने इस प्रपंच रूप जगत् को वह सत्य नहीं मानता है।

माहेश्वर तन्त्र अध्याय१

जिस नारायण को दुनिया वाले संसार का स्वामी कह कर गुणगान करते हैं। वह सभी जगत के चराचर को बनाने वाला अन्नत, प्रधान पुरूष परमात्मा है।

माहेश्वर तन्त्र अध्याय १ श्लोक ५७,६१

इस सम्बन्ध मे कबीर जी ने भी कहा है–

एक अण्ड ऊँकार, ते सब जग भया पसार।
कहें कबीर सब नारि है, अविचल पुरूष भरतार।।

बीजक रमैनी/२७

सारे जगत का कारण, मोह तब तक नहीं मिट सकता, जब तक बीज का बीज महाकारण (अव्याकृत ब्रह्म का सपना) शान्त नहीं होता, तब तक यह संसार रहेगा।

प्रश्नः-

१. ना ईश्वर ना मूल प्रकृती, ता दिन की कहूं आपा बीती।
निज लीला ब्रह्म बाल चरित्र, जाकी इछा मूल प्रकृत।।

प्रकाश हिन्दुस्तानी ३७/१५

२. मूल प्रकृती मोह अहंथे, उपजे तीनों गुन।
सो पांचो में पसरे, हुई अंधेरी चौदे भवन।।

किरंतन २१/२

भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च।
अहंकारं इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा।।

गीता ६/८

Nijanand App

३. जोगबाई जेती इन अंग की, सो सब मूल प्रकृती मांहें।

प्रकाश हिन्दुस्तानी

४. प्रले प्रकृती जब भई, तब पांचों चौदे पतन।
मोह अहं सबे उड़े, रहे सरगुन ना निरगुन।।

किरंतन २१/३

५. प्रकृती पैदा करे, ऐसे कई इंड आलम।
ए ठौर माया ब्रह्म सबलिक, त्रिगुन की परआतम।।

किरंतन ६५/१०

इन सभी चौपाइयों में एक ही प्रकृति शब्द कई बार आया है, तो क्या इनके अलग अलग अर्थ हैं या एक ही अर्थ है?

उत्तर :–

पहली चौपाई में मूल प्रकृति अक्षर ब्रह्म की इच्छा को कहा गया है, जिससे कोटों ब्रह्मांड बनते और मिटते हैं, क्योंकि इसी चौपाई के चौथे चरण में कहा गया है कि **'जाकी इच्छा मूल प्रकृत'**। दूसरी चौपाई में भी यही बात कही गई है। पांचवीं चौपाई में जिस प्रकृति का वर्णन है, उसका मूल सबलिक ब्रह्म है, जिसके सूक्ष्म मे चिदानन्द लहरी का स्थान है, एवं उसके व्यक्त रूप को ही अव्याकृत के महाकारण में "सुमंगला शक्ति" कहते हैं, जिससे मोह तत्व बनता है। इस प्रकार पांचवीं चौपाई में कही हुई प्रकृति का मूल स्थान सबलिक ब्रह्म है, किन्तु तीसरी चौपाई में काल माया के अन्दर की कुल प्रकृति के पैदा होने का स्थान मूल प्रकृति बताया है। चौथी चौपाई में भी इसी काल माया की प्रकृति का वर्णन है, जिसका महाप्रलय में नाश हो जाता है।

इस चौदह लोक के ब्रह्मांड को चारों ओर अष्टावरण ने घेर रखा है। गीता में इस जगत् को आठ आवरणों वाला कहा गया है – पृथ्वी–जल–अग्नि, वायु आकाश, मन–बुद्धि और अहंकार। यह आठ प्रकार की मेरी अपरा प्रकृति है।

गीता ७/४

Nijanand App

इस ऊपर के ज्ञान के अनुसार ऐसे ऐसे असंख्यों ब्रह्मांड जो बनते और मिटते हैं, और नाशवान हैं। यहां की जमीन और आसमान के लोक नाशवान है, यहां का कुल ज्ञान स्वप्न की बुद्धि से बना है, इसलिए कोई भी भव से पार न हो सकता है, न किसी को पार करने की शक्ति रखता है, तो फिर मेरे मन में शंका पैदा हो गई कि इस सारी दुनियां के लोग सब देवी–देवताओं, (जिनका महाप्रलय में लय होना लिखा है), की ही पूजा में क्यों लगे हैं? तो फिर मैंने यह खोज की और मुझे सतगुरू महाराज जी ने बताया कि लोग हर कार्य में सब से पहले गणेश की पूजा क्यों करते हैं? क्योंकि इनके पास ऋद्धि सिद्धि देने की शक्ति है, पर वह संसार से पार नहीं कर सकते। हनुमान जी भय आदि से छुड़ा कर सांसारिक इच्छाएं पूर्ण करते हैं, पर स्वयं तो बार–बार राम भगवान से प्रार्थना करते हैं कि मैं जब–जब जन्म लूं, आपका दास बनूं, तो जो स्वयं जन्म–मरण की इच्छा में पड़े हैं, वह हमारे जीव को मुक्ति कैसे देंगें?

राम चरित्र मानस से

राम भगवान स्वंय विष्णु के अवतार हैं– और विष्णु भगवान स्वयं भवसागर से पार नहीं जा पाते क्योंकि–

नेति नेति जेहि वेद निरूपा-निजानन्द निरूपाधि अनूपा।
शम्भु विरंचि विष्णु भगवाना, उपजे जासु अंश ते नाना।।

रामायण बाल काण्ड

अर्थात् वेदों ने उस पारब्रह्म का जो केवल भवसागर से पार कर सकता है, नेति नेति (यहां नहीं है–यहां नहीं है) कह कर वर्णन कर दिया और जो अपने आनन्दमय स्वरूप में सारी उपाधियों अर्थात् नाम, तत्व, गुण और षट प्रमाण से परे है, उसी के सत्, अंग, अक्षर ब्रह्म के मन के स्वरूप के स्वप्न के रूप आदि नारायण के अंश से करोड़ों ब्रह्मा, विष्णु, शिव पैदा होते हैं। परन्तु राम भगवान विष्णु के अवतार होने के कारण से इस संसार के झूठे सुख ही दे सकते हैं, अखण्ड मुक्ति नहीं।

लक्ष्मी, जो विष्णु के ही आनन्द का स्वरूप हैं। समय समय पर भक्तों का कार्य सिद्ध करने के लिए इनको ही विष्णु भगवान सृष्टि में भेजते हैं। यह अपने भक्तों को सांसारिक नष्ट होने वाली वस्तु, माल, धन–मान

Nijanand App

इत्यादिं देती हैं, क्योंकि यह संसार की मालकिन हैं, इसलिए इनकी पूजा सब संसारी लोग करते हैं, पर अखंड गोलोक का ज्ञान जिसका ध्यान सदा ब्रह्मा, विष्णु, महेश करते हैं, प्राप्त करने के लिए सात कल्पांत तपस्या करने पर भी प्राप्त नहीं कर सकी, तो जीव को मुक्ति कहां से देंगी? अर्थात् नहीं दे सकती। अब श्री कृष्ण जो स्वयं विष्णु भगवान के सोलह कला सम्पूर्ण शक्ति के अवतार हैं। अर्जुन के जन्म मरण से छुटकारा मांगने पर स्वयं कहते हैं — "करोड़ पुत्र दे सकता हूं, सारी सृष्टि का धन मांग! दे सकता हूं, स्वर्ग ले चल सकता हूं, बैकुंठ ले जा सकता हूं, पर जन्म और मरण से छुड़ा कर भव से पार करने वाला अन्य पुरूष, उत्तम पुरूष ही केवल एक परमात्मा है। वह अनन्य प्रेम लक्षणा से प्राप्त हो सकता है।" फिर महाभारत खण्ड ६ अश्वमेध पर्व, अध्याय १६ श्लोक ६ से १३ में स्पष्ट कह दिया है कि मैं उस ज्ञान को दुबारा कहने मे असमर्थ हूं अर्थात् मैं पारब्रह्म का ज्ञान नहीं जानता। मैं तो स्वयं उस ब्रह्म की भक्ति में उस समय लगा था और उनकी कृपा से मैनें वह ज्ञान तुमसे कह दिया था।

तो अब सुन्दर साथ जी! मेरे साथियों! यह स्पष्ट सिद्ध हो गया है कि पारब्रह्म सच्चिदानन्द अक्षरातीत के ज्ञान के बिना इस जन्म मरण वाले भवसागर से यहां के किसी भी परमात्मा या देवी देवता की भक्ति–पूजा हमें भव से पार नहीं कर सकती।

माहेश्वर तन्त्र के पांचवें अध्याय में कहा गया है कि केवल व्रत, उपवास, नियम, विविध तप, स्वाध्याय, अध्ययन, दान, तीर्थ या अन्य साधन, ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ, सन्यास आदि का आचरण करने से भी मुक्ति नहीं होती है। अगाध अज्ञान के समुद्र में जीव भटकते रहते हैं। न तो कोई भी जीव इसके पार गया है और न जायेगा। परम आनन्दमय पारब्रह्म ही सबके स्वामी हैं। वे जिस पर कृपा की दृष्टि से देखते हैं, वे अवश्य ही इस भवसागर से पार हो जायेगें। जिस प्रकार रस्सी को अंधेरे में सर्प समझा जाता है, किन्तु प्रकाश के द्वारा स्पष्ट दिखाई दे जाने पर सर्प का भ्रम दूर हो जाता है, उसी प्रकार शुद्ध ज्ञान हो जाने पर जगत का प्रपंच रूप समाप्त हो जाता है और केवल पारब्रह्म ही शेष रहते हैं।

यह प्रथम तरंग सम्पूर्ण हुई।

Nijanand App

दूसरी तरंग

बेहद का ब्रह्मांड

यह वह अखण्ड ब्रह्माण्ड है, जहां से असंख्य मिटने वाले ब्रह्मांड बनते मिटते रहते है, जिनको कालमाया या हद का ब्रह्मांड कहते हैं। हद का ब्रह्मांड, उसे कहते हैं, जहां हर वस्तु बनती और मिटती हैं और सीमा के अन्दर है। यहां की हर वस्तु काल के आधीन हैं, दिन, रात, ऋतु, चांद, सूर्य सभी परिवर्तनशील हैं। सब देवी–देव भी काल के अधीन हैं, इसलिए ऐसे ब्रह्मांड को हद का ब्रह्मांड कहते है। इसके उल्टा बेहद का वह ब्रह्मांड है, जो निराकार शून्य से परे सदा अखण्ड, अविनाशी, नूरमयी है, वहां न तो कोई जन्मता है, न मरता है, न ही खाना, पीना इत्यादि का कर्म है–न ही ऐसे चांद–सूर्य हैं। वहां हर वस्तु अखण्ड, अविनाशी, एक ही नूरमयी तत्व से हैं। इसलिए वहां जो वस्तु बन जाती है, वह कभी नष्ट नहीं होती। यह सारा ब्रह्मांड निराकार के परे अव्याकृत से लेकर सत् स्वरूप तक है। इसमें अक्षरब्रह्म के मन–चित–बुद्धि और अहंकार की शक्ति के स्वरूप अव्याकृत ब्रह्म (मन) सबलिक ब्रह्म (चित्त) केवल ब्रह्म (बुद्धि) और सत्स्वरूप ब्रह्म (अहंकार) की लीला है। यद्यपि अक्षर ब्रह्म रहते अवश्य परमधाम में है परन्तु उन की लीला यहां योग माया में (बेहद के ब्रह्मांड में) अखंड रूप से होती है। परमधाम में केवल आनन्द की लीला हैं। पारब्रह्म अक्षरातीत का स्वरूप एक ही हैं। लीलाएं दो हैं– एक आनन्द की, जो दिव्य ब्रह्म पुरधाम में नूरमयी इश्क की होती है, तो जहां इश्क है, वहां सत्ता की लीला नहीं हो सकती, इसलिए उनके सत अंग के स्वरूप अक्षर ब्रह्म की लीला इस बेहद के अखंड ब्रह्मांड में होती हैं।

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्र तारकं

नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः।

तमेव भान्तमनुभाति सर्व,

तस्य भासा सर्वमिदं विभाति।

कठो० ५/१५ मुण्डको० २/२/१०

Nijanand App

यहां इश्क की लीला नहीं होती। वेदों के अनुसार यह सारा काल माया का ब्रह्मांड अव्याकृत के द्वारा बनता मिटता है और इस बेहद के बाकी तीनों भाग सबलिक, केवल ब्रह्म और सत् स्वरुप ब्रह्म, चेतन, प्रकाशमयी, अखण्ड और अविनाशी हैं। इनके ऊपर दिव्य ब्रह्मपुर (परमधाम) है, जहां अक्षरब्रह्म का भी मूल स्वरुप विराजमान है।

प्रश्न :– अक्षर ब्रह्म के अन्तःकरण–मन–चित–बुद्धि और अंहकार के अनुसार सत् स्वरुप को मन का, केवल ब्रह्म को बुद्धि का, सबलिक को चित्त का, और अव्याकृत को अंहकार का स्वरुप समझना चाहिए? क्योंकि कुछ विद्वान ऐसा कहते हैं।

उत्तर :– यहां यह तो सिद्ध हो गया कि केवल ब्रह्म अक्षर की बुद्धि का स्वरुप है और सबलिक चित्त का स्वरुप है, बाकी सशंय रहा अव्याकृत और सतस्वरुप का, कि इनमें कौन मन का स्वरुप है और कौन अहंकार का स्वरुप हैं?

हकीकत में सृष्टि की रचना मन से ही होती है। जब तक मन में कोई भाव नहीं उठता, तब तक कोई भी कार्य नही होता तो होने और मिटने का कार्य तो केवल मन ही करता है।

मन उपजावे मन ही पाले, मन को मन ही करे संघार।
पांच तत्व इंद्री गुन तीनों, मन निरगुन निराकार।।

किरंतन ४७/३

पुरुष एवेदं सर्व यद भूतं यच्च भाव्यम्।
पादोस्य सर्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ।।

ऋ० १०/६०/१२, यजु० ३१/२, साम०आरण्यक का० ६/४/५

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत पुनः।

यजु० ३१/४

दिव्ये ब्रह्मपुरे हि एषः व्योम्नि आत्मा प्रतिष्ठितः ।।

मु० उ० २/२/७

Nijanand App

अव्याकृत अक्षर ब्रह्म के मन का स्वरुप है, उसी के मन के स्वप्न–स्वरुप आदि नारायण है। आदि नारायण इस हद के ब्रह्मांड को बनाता और मिटाता है। वही सभी प्राणियों का संहार कर अपने में समा लेता है। पांच तत्व, दस इन्द्रियों तथा तीनों गुण, मन के ही स्वरुप हैं और ये सभी अन्त में निराकार, निगुर्ण में समा जाते हैं (जैसे स्वप्न देखने वाला जब जागृत होता है तो स्वप्न की कोई भी चीज नहीं रहती)।

इत अछर को विलस्यो मन, पांच तत्व चौदे भवन।

यामें महाविष्णु मन मन थें त्रैगुन, ताथें थिर चर सब उतपन।।

प्रकास हिन्दुस्तानी ३७/२४

इस चौपाई में महा विष्णु (आदि नारायण) अक्षर ब्रह्म के मन को सपने के स्वरुप को कहा गया हैं। महाविष्णु की पहुँच अव्याकृत के महाकारण (सबलिक के स्थूल) से आगे नहीं हैं।

ए ठौर माया ब्रह्म सबलिक, त्रिगुन की परआतम।।

किरंतन ६५/१०

पारब्रह्म अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी की इस वाणी के कथनानुसार– यह सशंय मिट गया कि ब्रह्मा, विष्णु, महेश महाप्रलय में आदि नारायण में समा जाते हैं और आदि नारायण का मूल ठिकाना अव्याकृत है, तो अव्याकृत ही अक्षर का मन स्वरुप है। जो बनाने और मिटाने का काम करता है और सत् स्वरुप अहंकार स्वरुप है। जिस स्वरुप में अपनी पूर्ण शक्ति का अनुभव होता है, उसे ही अहंकार का स्वरुप माना जाता है, इसी प्रकार सत स्वरुप ही अहंकार का स्वरुप है न कि अव्याकृत है।

जिस प्रकार हर व्यक्ति के अहंकार में ही (अहं में ही) उसके मन–चित्त और बुद्धि के द्वारा सब कार्य होते है और अहंकार के समाप्त होने पर सब क्रिया रहित हो जाते हैं, उसी प्रकार सत् स्वरुप के बिना अव्याकृत, सबलिक एवम् केवल ब्रह्म में कोई भी कार्य नहीं हो सकता।

जिस प्रकार अंहकार के बिना कोई भी व्यक्ति अपने मन में किसी भी प्रकार का संकल्प नहीं कर सकता, उसी प्रकार जब तक अक्षर ब्रह्म के अहं के स्वरुप में सृष्टि रचना का भाव नहीं आता, तब तक न तो मोह तत्व की उत्पत्ति होगी, न ही अक्षर ब्रह्म का मन (अव्याकृत) अपने स्वप्न में जाएगा। स्वप्न मन में आता

Nijanand App

है, अहंकार के स्वरुप में नहीं। इसलिए अव्याकृत ही मन का स्वरुप है। इस प्रकार सत् स्वरुप (अहंकार) की इच्छा के बिना अव्याकृत (मन) स्वरुप कार्यशील नहीं होता।

तारतम प्रणालिका के अनुसार–अक्षर ब्रह्म जो इच्छा करते हैं, वही इच्छा सत् स्वरुप (योगमाया) में आ जाती है, फिर वही इच्छा बुद्धि–चित्त (केवल ब्रह्म और सबलिक) में हो कर मन के स्वरुप अव्याकृत में आ जाती है, फिर वहां उसी से मोह तत्व (नींद) की उत्पत्ति होती है। फिर आदि नारायण नींद के स्वरुप में " एकोऽहं बहु स्याम " का भाव लेते हैं, यही उनके अहंकार का रुप है। बेहद वाणी के अनुसार–

"मोह तत्व कह्या नींद को सूरत अंहकार"।

के कथन का सम्बन्ध इसी आदि नारायण से है और उसी से आगे तीन गुण और पांच तत्व की उत्पत्ति होती हैं।

महाप्रलय में सब नष्ट हो कर आदि नारायण के अहंकार के रुप में समाता है, फिर अहंकार लय हो कर मोह तत्व में समा जाता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि अव्याकृत अक्षर ब्रह्म का मन स्वरुप है। इस कारण अव्याकृत से स्वप्न स्वरुप काल माया का ब्रह्मांड बनता मिटता है। स्वप्न मन में आता हैं अहंकार में नहीं। यह प्रमाण प्रश्न उपनिषद् में लिखा हैं।

प्रश्न :– पराशक्ति और परा विद्या, अपराशक्ति और अपराविद्या में क्या अन्तर हैं ?

उत्तर :– गीता अध्याय ७/४ के अनुसार पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि एवं अहंकार को अपराशक्ति कहा जाता हैं क्योंकि यह बनते और मिटते हैं। यह मिथ्या नाशवान शक्ति हैं।

अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकतिं विद्धि में पराम्।

जीव भूतां महाबाहो ययेदं धार्यते जगत्।।

गीता ७/५

अत्रैष देवः स्वप्ने महिमानमनुभवति।

प्रश्नोपनिषद् ४/४६

Nijanand App

पराशक्ति– गीता अध्याय ७/५ के अनुसार इस अपरा से परे दूसरी चेतन अखंड शक्ति है, जिससे सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड बनता है।

पुराण संहिता के अनुसार–जिससे करोडों ब्रह्माण्ड पैदा होते हैं और नष्ट होते हैं उसे ही पराशक्ति कहते है।

पुराण संहिता १/३३–३४

अपराविद्या और परा विद्या, यह दो विद्याएं हैं। अपराविद्या में चारों वेद एवं इसके छः अंग आते हैं। शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त (वेद का शब्दकोश)–छन्द–ज्योतिष की विद्या अपरा के अन्दर मानी जाती हैं। ये स्वप्न की बुद्धि से हैं।

मुण्डक १/४–५

पराविद्या वह विद्या है, जो जागृत बुद्धि है और उसी से ही अक्षर ब्रह्म को जाना जाता है।

मुण्डक १/५

सर्वं ब्रह्मैव नानात्वं नास्तीति निगमा जगुः।

यस्माद्भवन्ति ब्रह्माण्ड कोटयो न भवन्ति च।।

यदुन्मेषनिमेषाभ्यां जगतां प्रलयोदयौ।

भवेतां सा परा शक्तिर्यदाधारतया स्थिता ।।

पुराण संहिता १/३३–३४

तद्रत्वा सा परा शक्तिः स्मर्तव्या च सुमङ्गला।

तत्प्रसादेन तिमिरं महा शुन्यं तरिष्यथ।।

पुराण संहिता १२/६८

द्वे विद्ये वेदितव्ये इति ह स्म यद् ब्रह्मविदो वदन्ति

परा चैवापरा च। तत्रापरा ऋग्वेदो यजुर्वेदः

सामवेदोऽथर्व वेदः शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दो ज्योतिषमिति।

मु० उ० १/४.५

अथ परा यया तदक्षरमधिगम्यते।

मु० उ० १/५

Nijanand App

परा विद्या उपनिषदों में लिखी है। वेदों को अपरा विद्या में गिनने का कारण यह है कि उनमें परा के ज्ञान के अतिरिक्त सांसारिक ज्ञान अधिक दिया है। वेदों का मूल बीज अव्याकृत के अन्दर है किन्तु इस संसार में आदि नारायण तथा सभी जीवों की बुद्धि सपने की है, जिसके कारण वेदों को अपरा बुद्धि के अन्दर जाना जाता हैं।

सुकजी और सनकादिक, कई और भी साध।

तिन खोज खोज के यों कहया, ए तो अगम अगाध।।

बेहदवाणी चौ० ८

शुकदेव जी और अन्य सनकादिक ऋषियों ने खोज–खोज कर आखिर में यही निर्णय लिया है कि बेहद पराविद्या जागृत बुद्धि अगाध ज्ञान हैं।

न तो आए बुध के सागर, गुन खट ग्यानी।

भगवान जी को महादेवजी, पूछे बेहद बानी।।

बेहद वाणी –३

यद्यपि इस ब्रह्मांड में छः शास्त्रों की हकीकत जानने वाले, बुद्धि के सागर कहलाने वाले, बड़े–बड़े ज्ञानी, त्रिदेवा इत्यादि हो चुके हैं, लेकिन निराकार से परे बेहद भूमि का ज्ञान कोई भी स्पष्ट नहीं जान सका। तारतम ज्ञान के बिना उस शब्दातीत बेहद के बारे में यहां के मन और बुद्धि से स्पष्ट वर्णन नहीं किया जा सकता। श्री मुख वाणी और तारतम प्रणालिका के अनुसार बेहद का संक्षिप्त में वर्णन इस प्रकार हैं।

बेहद मण्डल–पराशक्ति एक ही चीज़ हैं। इसमें अक्षर ब्रह्म के मन का स्वरूप है अव्याकृत जिसमें अक्षर के सत् स्वरुप के सत की विशेषता है। सबलिक में चित्त की प्रधानता हैं और केवल ब्रह्म में सत् स्वरुप के आनन्द की लीला होती है। इसमें आनन्द की प्रधानता है और सत् स्वरुप में सत, चित्त और आनन्द तीनों का योग है, इसलिए यह सत् स्वरुप ही अक्षर का अहंकार स्वरुप हैं।

तो साथियों ! इतना स्पष्ट ज्ञान होने के बाद प्रश्न उठता हैं कि यह सारा संसार इन देवी–देवताओं और इनके झूठे कर्मकाण्ड की पूजा में ही क्यों रस लेता हैं ?

तो सतगुरु जी ने बताया कि जैसे खारे समुद्र के जीवों को दूध और घृत

Nijanand App

के सागर में आप रखना भी चाहें तो वे खारे सागर को छोड़ेंगे नहीं और यदि उन्हें छुड़ाकर दूध या घृत में रखें तो वे प्राण त्याग देंगे, क्योंकि उनका जन्म खारे सागर के खारे तत्वों से होने के कारण वे इसे सहन नहीं कर सकते। इस प्रकार सारे संसार के मनुष्यों की उत्पत्ति झूठे मोह तत्व से हुई है, इसलिए इस मोह सागर के जीव झूठे देवी–देवताओं की पूजा छोड़कर उस पारब्रह्म अक्षरातीत की शोभा, इश्क, इलम और मेहर के सागर में गोता लगाकर उसका रस नहीं ले सकते।

दूसरी तरंग सम्पूर्ण हुई।

Nijanand App

तीसरी तरंग

श्री कृष्ण-तत्व

निजधाम (दिव्य ब्रह्मपुर) में उस पारब्रह्म अक्षरातीत सच्चिदानन्द की आनन्दमयी लीला होती है, जहां सत् अंग अक्षर ब्रह्म का भी स्वरुप है, जो अपनी इच्छा से, अखंड योगमाया की शक्ति से अव्याकृत और सबलिक के द्वारा मिथ्या ब्रह्मांडों को बनाने और मिटाने की लीला करते हैं और चिद्घन, नूरमयी और इश्कमयी तत्व से वह पारब्रह्म स्वयं है और उनके दिल के आनन्द का स्वरुप श्री श्यामा महारानी जी हैं, जिससे परमधाम में आनन्द ही आनन्द अर्थात् इश्क की लीला होती है–

उस परम धाम के नूरमयी तत्व की ये विशेषताएं है–सत (अखंड), अनादि, चेतन, आनन्दमयी, कोमल और सुगन्धिमयी है।

इसलिए, वहां जो भी लीला होती है, इश्क ही इश्क की होती है। इश्क चार प्रकार का कहा जाता है–

१, इश्के हिरसी – जो भौतिक काल माया के तन से विकारी भोग होता हैं।

२, इश्के नफ्सी – जो केवल दिल और आंखों से होता हैं जो हीर–रांझा, शशि–पुनू इत्यादि ने किया।

३, इश्के हकीकत – जो परमात्मा से गोपी भाव द्वारा अनन्य प्रेम से होता हैं, भक्ति भाव से होता हैं। जैसे मीराबाई, रसखान, सूरदास इत्यादि।

४, इश्के मारफत – यह केवल परमधाम में पारब्रह्म अपनी आत्माओं से करते हैं, जो उनके ही निज स्वरुप हैं, जैसे–सागर और सागर की लहरें, सूर्य और सूर्य की किरणें।

परमधाम में केवल इश्के मारफत हैं, जहां द्वैत नहीं, आशिक ही माशूक और माशूक ही आशिक है। वहां वार्तालाप भी इश्क का ही होता है, तो उस वार्तालाप में अनादि से (कदीम से) चल रहा था कि रूहें कहती थीं–इश्क हमारा बड़ा है और पारब्रह्म कहते थे कि इश्क मेरा बड़ा है। वाहेदत (अद्वैत) के अन्दर

Nijanand App

घट बढ़ हो ही नहीं सकती तो इश्क का बेवरा कैसे होता? इस कारण उस अक्षरातीत ने अपने दिल में अपनी आत्माओं को परमधाम की साहेबी और इश्क क्या हैं? दिखाने को सोचा तो यह चाहना सब रूहों और अक्षरब्रह्म के दिल में भी आ गई, क्योंकि वहां एक दिली है। रूहों ने कालमाया का खेल, जो अक्षर की लीला है, मांगा और अक्षर ब्रह्म जो सत् अंग है, उन्होनें अपने धनी के आनन्द की लीला, जो अपनी रूहों से करते हैं, देखना चाहा, तो वे तन तो एक दूसरे से परमधाम में जुदा हो ही नहीं सकते अतः कालमाया के ब्रह्मांड में अक्षर ब्रह्म की आत्मा और आनन्द अंग श्यामा महारानी और उनके अंग रुहें, जो अर्श में हैं, उनकी सुरता को उतारा और माया के तनों में इनका प्रवेश करा कर खेल दिखाया।

इसका प्रमाण माहेश्वर तन्त्र में भी अध्याय ७/८१–८५ तक लिखा है और पुराण संहिता में अध्याय २३ के श्लोक नं० –

७,१०,११,१५,१६,१७,२८,३२,३३,३४,३५,३६,३७,३८,३६,४०,४१,४२,४३,४४,४५,४६,४७, ४८,४६,५०,५१,५२,५३,५४,५५,५६,५६,७५,७६,७७,७८,७६ एवं अध्याय २४ के श्लोक नं० – १०,११,१२,१६ में विस्तार से वर्णित है जिसका हिन्दी भावार्थ इस प्रकार है–

निश्चय ही धाम में सर्वत्र आनन्द और चेतनता है। वहां ही परमानन्द व्यापक है। जब आनन्द उपस्थित होता है, तो ज्ञान छिप जाता है। जहां ज्ञान उपस्थित होता है, तो वहां आनन्द छिप जाता है। रस स्वभाव से लीला दो के द्वारा ही सम्पन्न होती है। इसी प्रकार एक अद्वैत पारब्रह्म की लीला भी दो प्रकार से होती है। सच्चिदानन्द लक्षणों वाला एक ही पारब्रह्म श्रुतियों में कहा गया है, फिर दो ब्रह्म का वर्णन कैसे किया जाय? इस प्रकार अव्यक्त अक्षर ब्रह्म चेतन और प्रकाशमय प्रदर्शित किया जाता है। उससे परे, व्यक्ति भेद से निश्चय ही परमानन्द है । सत्ता और आनन्द हमेशा साथ जुड़े हुए हैं । इस प्रकार अक्षर ब्रह्म सत् और चेतन है। हमेशा आनन्दमय रहने वाले अक्षरातीत आकर्षण शील और सत्ता वाचक हैं। यह सारा विश्व क्षर है, एक मात्र अक्षर ही ब्रह्म है और अक्षरातीत पूर्णब्रह्म कहे जाते हैं। अक्षर ब्रह्म के चित्त में सुमंगला नामक शक्ति के जागृत होने पर उसके द्वारा दर्शन की इच्छा से प्रतिदिन जाते हैं। अक्षरातीत के रंगमहल से दूर स्थित हो कर हाथ जोड़ कर यह सोचते हुए वापिस अपने स्थान लौट आते हैं – "दत्त चित्त हो कर तुम्हारी लीला को मैं देख नहीं

Nijanand App

पाता हूँ। हे महाराज ! दृष्टि में न आने वाली उस लीला को दिखाइए। "इस प्रकार बहुत समय बीत जाने पर करोड़ों सूर्य के समान उज्जवल धाम में नव भूमियों वाली प्रकाशमय चन्द्रशाला में सुशोभित आधार भूमिका में उत्तम रत्न सिंहासन पर स्थित एक बार अक्षरातीत ने श्यामा जी तथा सखियों के साथ अनेक सुन्दर लीलाएं की। उनके द्वारा उचित विलासों और आनन्द की अरस–परस लीला के द्वारा आनन्दित किए हुए कामनाओं को पूर्ण करने वाले अक्षरातीत ने कहा – "मैं आज तुमसे बहुत प्रसन्न हूँ। कुछ अद्भुत खेल दिखाऊगां, जो हमेशा मेरे मन में बना हुआ है। परम आनन्दमय धाम में कुछ भी दुर्लभ नही है, फिर भी मैं जो कुछ करूँगा, वह तुम्हारे लिए होड़ करने योग्य है। इस प्रकार प्रियतम (श्री राजजी महाराज)के अमृतमय वाक्यों को कानों से पीकर प्रेम और लज्जा से युक्त मुख वाली प्रियाओं (सखियों) ने गम्भीर भाव से कहा। सखियां बोली – हे प्राणपति ! यहां कुछ भी दुर्लभ कैसे हो सकता है ? हम सब पूर्ण हैं, पूर्ण काम हैं । हम आप से किस बात की इच्छा कर सकती हैं? जब यह कह कर प्रियाएं (सखियां) चुप हो गई, तब इच्छा शक्ति ने उनके मन में प्रवेश किया (उनके मन में इच्छा हुई)। इसके बाद स्वामिनी (श्यामा महारानी) और सभी प्रियाएं मोहित हो गई। इस बीच साक्षात् स्वामिनी ने अपने पास आई हुई मोहित हुई मिहिला सखी से कहा। स्वामिनी (श्यामा जी महारानी) बोली – हे मिहिला ! मैं जो कुछ तुझ से कहती हूँ, वैसे ही तुम्हें कहना चाहिए। साक्षात् कहने में मैं लज्जा करती हूँ, इसलिए आप सब के मुख से कहलवाना चाहती हूँ कि यदि अक्षरातीत प्रसन्न हैं, तो हमारे हृदय की चाहना पूरी करें। हम सब अतुलनीय प्रपंच की लीला को देखना चाहती हैं। इस प्रकार सभी प्रियाएं इकट्ठी होकर कहो। स्वामिनी (श्यामा जी महारानी) की आज्ञा लेकर मिहिला ने उन सभी प्रियाओं के प्रति समझाकर कहा। इसके बाद वे सभी अक्षरातीत से बोलीं – हे प्राणनाथ! प्रियाधार ! हमारी बात सुनिए ! इस परम आनन्दमय धाम में हमारे लिए कुछ भी दुर्लभ नहीं है। तुम्हारे स्वरूप के अमृत रस के पान से मतवालों को किस वस्तु की चाहना हो सकती है? जहां यह उपलब्ध ना हो वहां ही इच्छा होनी चाहिए। हे नाथ ! इस पूर्ण आनन्दमय पद में कुछ भी दुर्लभ नहीं है, लेकिन हे नाथ ! तुम्हारी प्रियाओं में एक बहुत बड़ी इच्छा हो गई है। हे बड़ी भुजाओं वाले! उस महान चाहना को पूर्ण कीजिए । अक्षर ब्रह्म की प्रकृति की जो विचित्र लीला होती है, उसे देखने की इच्छा है । हमारे चित्त को शान्त कीजिए और

Nijanand App

बिना कुछ सोचे हमें आज ही उस लीला को दिखाइए। हे प्राणनाथ ! यदि आप प्रसन्न हैं तो प्रियाओं की इस प्रार्थना को पूर्ण कीजिए। प्रियाओं की इस प्रार्थना को सुन कर हंसते हुए पारब्रह्म ने कहा – हे सखियों ! तुम विचारों से रहित होकर किस के द्वारा ठगी गई हो? भला! प्रकृति (माया) की उस लीला को कैसे दिखाया जा सकता है ? प्रकृति की लीला मोहित करने वाली और अपने आत्मिक आनन्द के टुकड़े–टुकड़े करने वाली है, जहां प्रवेश मात्र से ही अपनी बुद्धि नहीं रहती है। जहां काम, क्रोध, आदि छः डाकू हैं, जो क्रूर कार्यों में फंसा कर बल पूर्वक लूट लेते हैं। तुम खिले हुए कमल वाले जलाशय के जल को छोड़ कर मृग– तृष्णा के जल के लिए दौड़ती हो। मेरे आनन्द को छोड़ कर वहां तुम पत्थर की पूजा करोगी। आनन्द और लीला विहार के रस, रूप, आनन्द के अनुभव को त्याग कर दीन, हीन और दुःख आदि से भरे हुए शरीर को प्राप्त होओगी। भंयकर अंधकार वाले मार्गो में कहां मारी मारी फिरोगी? तुम्हें लीला के विहार को त्याग कर दुष्ट कर्म करने पड़ेंगे। अतः हे सखियों ! ऐसे दुःखमय संसार में मत जाओ। वहां तुम गुण, सौन्दर्य और चतुरता के विपरीत हो जाओगी। मुझे कहीं भी नहीं देखोगी और सदा ही मुझे भूली रहोगी। निश्चय ही तुम्हें परमधाम, मन्दिर एवं सखियों का प्रेम भूल जायेगा । इस प्रकार तुम्हारा अशुभ करने वाली, मिली हुई सपने की बुद्धि क्या तुम्हारे लिए शोभा की चीज है? इसलिए इस चाहना को छोड़ कर निजपद (परमधाम) में विहार करो।

तब सखियों ने कहा – हे प्रियतम ! जिस प्रकार चीनी (खांड) कभी भी बालू नहीं हो सकती, अमृत कभी भी विष नहीं हो सकता, चिन्तामणि कभी पत्थर नहीं बन सकता, दिन कभी भी रात्रि नहीं हो सकता तथा समुद्र कभी भी सूखा स्थल नहीं हो सकता, उसी प्रकार प्रिय कभी भी अप्रिय नहीं हो सकता। चन्द्रमा कभी भी भंयकर किरणों वाला नहीं हो सकता और दया कभी भी निर्दयता के रूप में नहीं हो सकती है, किन्तु हे प्रियतम ! तुम प्रियाओं का अप्रिय करने वाले क्यों हो रहे हो ? हे प्रियतम ! यह जान कर चित्त में बेचैनी हो रही है। हम आत्माएं निरन्तर आपका ही स्मरण करने वाली और आपके लिए ही चित्त को समर्पित करने वाली हैं। आपसे विमुख (अलग) हो कर माया में कैसे मोहित (फंस) हो सकती हैं?

यह सारी बातें परमधाम में ही रूहों ने की। उनको नफा–नुकसान, भला–बुरा, अपना–पराया, झूठ–सत्य, दुःख–सुख इत्यादि में क्या अन्तर है? यह

Nijanand App

ज्ञान नहीं था, क्योंकि पारब्रह्म की आनन्दमयी लीला के अंग होने के कारण उनको (रूहों को) सत अंग की बनाई यह लीला है, इसका ज्ञान कैसे होता?

रूहें बेनियाज थीं, बीच दरगाह बारे हजार।

जाने ना आप अर्स की, साहेबी अपार ।।

खुलासा प्र० १७ चौ० ४६

उस अद्वैत परमधाम में बारह हजार रूहें इस मिथ्या माया की लीलाओं से परिचित नहीं थी और न ही उन्हें अपने परमधाम की साहेबी और धनी के इश्क का ही ज्ञान था, और उधर अक्षर ब्रह्म भले ही परमधाम में ही अक्षर धाम में रहते हैं और हर रोज प्रातः प्रणाम करने अपने धनी को आते हैं, पर उनकी स्वलीला से अपरिचित थे कि अक्षरातीत के महल में क्या लीला है तो –

"तब अछर मन उपजी एह आस, देखूं धनी जी को प्रेम विलास।

तब सखियों मन उपजी एह, खेल देखें अछर का जेह।।"

प्र० हि० प्रगटवाणी

अक्षर के मन में यह चाहना उपजी कि अपने धनी की प्रेममयी लीला को देखूं और रूहों के दिल में यह उपजा कि हम अक्षर की बनाई माया क्या है? उसको देखें। यह खेल बनने के दो कारण हो गए।

तब दोनों अंगों, सत् अंग को आनन्द की लीला और आनन्द अंग को सत् अंग की बनाई माया की लीला दिखाने के लिए स्वंय अक्षरातीत ने कहा –"मैं तुम्हें अपने चरणों तले बिठा कर एक ख्याल अर्थात् स्वप्न दिखाउंगा और मैं भी तुम्हारे साथ रहूँगा, तो अब सोचना यह है कि क्या अक्षरातीत जन्म ले सकते हैं? जब कि सारे शास्त्रों में कहा है कि पारब्रह्म वही है, जो जन्म और मरण से परे है। सच्चिदानन्द हैं, तो उन्होंने अपने हुक्म की कारीगरी से अपने आने और रूहों और अक्षर को उतारने का खेल स्वंय मूल प्रकृति को आज्ञा दे कर बनवाया तो उसमें तन धारण किए बिना लीला कैसे होती? तो जन्म और मरण के लिए विष्णु भगवान अवतार लेते हैं, इसलिए कंस के कारागृह में वसुदेव और देवकी को पूर्व जन्म के दिए वरदान के अनुसार चतुर्भुज स्वरूप बैकुण्ठ के नाथ विष्णु भगवान ने आकर साक्षात् दर्शन दिया और कहा कि दिए हुए वरदान के अनुसार मैं अब तुम्हारे गर्भ से जन्म लूंगा ।

अब सोचना यह है कि जो स्वयं कहता है, मैं जन्म लूंगा और फिर मरूंगा

Nijanand App

तो क्या वह परमात्मा है? अवतार केवल जीव का होता है, आत्मा का नहीं होता। तो जो जीवों का मालिक है, वह कैसे पूर्ण ब्रह्म अक्षरातीत हो सकता है? गीता में भी कृष्ण स्वयं कहते हैं कि हे अर्जुन! इस सारी दुनियां के मनुष्यों के अन्दर तथा प्राणियों के अन्दर, आदि सनातन जब से दुनियां बनी है, मेरा ही अंश सब के अन्दर है अर्थात् मैं स्वयं एक जीव हूँ।

गीता १५/७

हे अर्जुन ! मेरे और तुम्हारे अनेकों जन्म हो चुके हैं, जिनको मैं जानता हूँ, तुम नहीं जानते।

गीता ४/५

उस विष्णु भगवान ने कारागृह में कहा कि मेरे जन्म लेने पर मुझे गोकुल में नन्द के घर पहुँचा देना। यह कह कर अदृश्य हो गए और देवकी के गर्भ से जन्म ले कर "देवकी नन्दन" कहलाये। जन्म के उस समय वृष राशि और रोहिणी नक्षत्र था। देवी–देवताओं ने पुष्प बरसाये और मन्त्र बोले। "ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय" अर्थात् वासुदेव भगवान विष्णु जिनका जन्म हुआ है, प्रणाम करते हैं।

इस तन को आज्ञा अनुसार जब नन्द जी के घर गोकुल में पहुंचाया गया तो उस समय मृगशिर नक्षत्र और मिथुन राशि दिन बृहस्पतिवार (गुरूवार) था। तब उसी रात इसी तन में–

"सो सुरत धनी को ले आवेस, नन्द घर कियो प्रवेस"।

प्रगटवाणी

इससे स्पष्ट जाहिर है कि हम जो परमधाम की आत्माएं हैं, उनका नाता इस तन के अन्दर बैठे अपने धनी से है और जीवों का नाता इस झूठे तन और नाम से है।

ममेव अंशो जीव लोके, जीव भूतः सनातनः।

गीता १५/७

बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जून।
तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परंतप।।

गीता ४/५

Nijanand App

उधर वृषभान जी के घर राधिका नाम की एक कन्या, जिसकी आयु उस समय लगभग १२ वर्ष थी, उस तन में परमधाम की श्यामा महारानी की आत्मा ने प्रवेश किया।

ज्यों नींद में देखिए सुपन, यों उपजे हम बृज वधू जन।
उपजत ही मन आसा घनी, हम कब मिलसी अपने धनी।।

प्र० हि० प्रगटवाणी चौ० २६

बाकी सब आत्माओं ने ब्रज और गोकुल के अन्दर युवा कन्याओं के तनों में प्रवेश किया। समय रात्रि का होने के कारण आत्मायें तड़प उठी कि रात घोर अंधेरी है, कब दिन होगा? कब हम अपने धनी से मिलेंगी? अभी परमधाम की पूरी याद थी। जैसे–तैसे रात काटी। प्रातः होते ही अपने धनी के दर्शन के लिए पोहोर दिन चढ़ते बधावा लेकर परमधाम की आत्माएं इस माया के मिले झूठे किशोर तनों से नन्द जी के घर गई। तो आगे अक्षरातीत, अक्षर की आत्मा सहित बाल तन में मिलें। यह नाटक की लीला कौन जानेगा? क्या यह भेद व्यास जी ने खोले कि युवा कन्याओं का पति क्या आठ घण्टे का बालक हो सकता है?

साथियों ! यदि इस भेद और ब्रह्म लीला का सच्चा रस लेना है, तो अपने सपने की अहंकार वाली अन्धी बुद्धि का परित्याग कर जागृत बुद्धि से सोचें तो स्पष्ट हो जाता है कि गोपियों के अन्दर बैठी हुई आत्माओं का नाता केवल उस विष्णु के तन के अन्दर बैठे अक्षरातीत से है ना कि उस तन से। वह तन तो मरने जन्मने वाले विष्णु भगवान ने धारण किया है। अब हिन्दू संस्कृति के अनुसार जन्मे हुए बालक का नामकरण संस्कार होता है, तो नन्द जी के घर जन्में बालक का नाम गर्गाचार्य जी ने अपने पत्रे में देखा और मृग शिर नक्षत्र और मिथुन राशि में जन्मे बालक जिसके अन्दर अक्षरातीत विराजमान हुए थे, का नाम कृष्ण रखा गया।

साथियों ! अब यदि सांसारिक बुद्धि से भी सोचें तो तन का नाम कृष्ण रखा गया या अन्दर बैठी शक्ति का ? तो आप ही बताए – कृष्ण जो झूठे तन का नाम है, क्या पूर्ण ब्रह्म हो सकता है ? नहीं ! केवल इस तन को धारण कर अक्षरातीत पूर्णब्रह्म ने अपनी आत्माओं को लीला दिखाई, तो जो झूठे तन की बुद्धि से भी रहित है। वह विचारें! चले ज्ञानी बन कर दुनियां को कृष्ण पूर्ण ब्रह्म है, का ज्ञान सुनाने। जिससे स्पष्ट जाहिर है कि गूंगा गुड़ के रस का जो ब्यान

Nijanand App

करे या अन्धा हाथी के स्वरूप का ब्यान करे। वह हमें क्या बता सकता है कि हकीकत क्या है?

स्वप्न की बुद्धि जब स्वप्न का ही वर्णन नहीं कर सकती तो जागृत ज्ञान का क्या वर्णन करेगी।

अब प्रश्न उठता है कि श्री कृष्ण तो एक तन का नाम है, तो हम कैसे समझें कि इसके अन्दर पूर्ण ब्रह्म विराजमान हैं? तो आइए! भागवत से समझें।

शुक सागर के दसवें स्कन्ध में बराबर लिखा है कि अभी कृष्ण थोड़े दिन के ही थे कि शंकर भगवान जो एक पलक में सृष्टि का संहार करते हैं, वह भी पारब्रह्म के दर्शनों के लिए नन्द के घर एक योगी (भिखारी) का रूप धारण करके आए और डमरू को बजाया, तो यशोदा माता दासी के हाथ हीरे और मोती का थाल भर कर भिक्षा भेजी, तो शंकर भगवान ने इन्कार कर दिया और कहा कि ये काले पत्थर हमारे किस काम के? तब यह वचन यशोदा जी (कृष्ण जी की माता जी) सुन कर बाहर आई और कहा – हे बाबा! तो फिर क्या चाहिए? तब शंकर जी ने कहा– मैं तुम्हारे बालक के दर्शन करने आया हूँ। बहुत आग्रह करने पर यशोदा जी ने दर्शन कराया। साथियों ! सोचना यह है कि क्या महादेव जी विष्णु भगवान के दर्शन करने योगी का रूप धारण करके आ सकते हैं ? नहीं ! इस तन के अंदर पूर्ण ब्रह्म आये हैं, यह ज्ञान उनको था इसलिए–

ले गोपाल निकली नन्द रानी, योगी दर्शन पाया है री।

पांच बार परिकरमा करके, सिंगी नाद बजाया है री।।

शुक सागर स्कन्ध १० अध्याय ५

सांसारिक दृष्टि वाली यशोदा ! जो उसके लड़के कृष्ण के तन के अंदर विराजमान हैं, मोह के कारण वह उन्हें पहचान न सकी। महादेव जी ने पहचाना और अपना इष्ट जान कर परिक्रमा की।

भागवत स्कन्ध १० अध्याय १३ में ब्रह्मा जी जो नश्वर जगत की कुल बुद्धि अर्थात् ग्रन्थों के ज्ञान के दाता हैं, कृष्ण के तन में विराजमान पूर्ण ब्रह्म की पहचान न कर सके और उल्टा उनकी परीक्षा लेने आए कि देखता हूँ कि यह कैसे पूर्ण ब्रह्म हैं, तो अपने बल से गाय–बछड़े और ग्वालों को हरण करके जैसे ही ले चले, तो उधर ज्यों के त्यों अक्षरातीत के हुक्म से बन गए।

Nijanand App

ज्यों हरे ब्रह्माएं बाछरू, गोवाला संघातें।

ततखिन सो नए किए, आप अपनी भांतें।।

श्री मुखवाणी–बेहद वाणी ४०

बाद में ब्रह्मा जी को संसार की बुद्धि से परमात्मा होने का अभिमान जब टूटा, तब उनके प्रसाद के लिए, जूठन के लिए –

कोट यतन बह्मा कर थाके, सो जूठन नहीं पाए।

कभी मछली बने, कभी कौआ बने, तब चरणों में आकर दंडवत प्रणाम कर क्षमा याचना करने पर माफ़ कर दिया।

अब सोचना यह है कि क्षमा किस से मांगी ? तन से या अन्दर की विराजमान शक्ति से। तो इसी तरह आज शास्त्रों के ज्ञाता अपने संस्कृत के पढ़े चन्द ग्रन्थों के ज्ञान से ब्रह्मा का रूप धारण किए हैं, क्योंकि उन्हीं की सन्तान सारा जगत है, तो फिर आप विचारो कि ये आज कलियुग में पधारे साक्षात् पूर्ण बह्म स्वरूप श्री प्राणनाथ जी को क्या अपनी भौतिक मिथ्या स्वप्न की बुद्धि, अपरा ज्ञान की शक्ति से पहचान लेंगे ?

कभी नहीं! कभी नहीं! और कभी नहीं!

इससे स्पष्ट हो जाता है कि विष्णु भगवान जी तन धारण कर हाजिर रहे। महादेव जी योगी का रूप धारण कर दर्शनों को आए और ब्रह्मा जी ने भी थोथा अभिमान टूटने पर जिनके चरणों में दण्डवत, प्रणाम किया और भूल मानी कि हम पहचान नहीं सके। वह पूर्ण ब्रह्म ही उस तन में विराजमान थे, क्योंकि त्रिदेवा पारब्रह्म के बिना किसी के सामने नहीं झुक सकते और भागवत में भी स्कन्ध १० अध्याय २४, २५, २७ मे स्पष्ट लिखा है कि किस तरह पारब्रह्म ने अपनी आत्माओं जो गोपियों के रूप में उनके साथ लीला कर रहीं थीं, उनको इन्द्र का पूजन नहीं करने दिया और अपना दूसरा रूप बना कर गोवर्धन पर्वत पर विराजमान हो कर पूजन कराया। यह देख कर अभिमानी इन्द्र से सहन नहीं हुआ और सात दिन–सात रात गोकुल और ब्रज पर प्रकोप दृष्टि से मूसलाधार पानी, पत्थर गिराया, पर पूर्ण बह्म ने गोवर्धन पहाड़ को अपनी उंगली पर उठा कर उसका विस्तार रूप बना कर ब्रज–गोकुल को अपनी शरण में लिया जिससे इन्द्र भगवान का अभिमान टूटा और उन्होंने भी चरणों में क्षमा मांगी तो अब साथियों आप ही विचारें कि श्री कृष्ण के तन में कौन विराजमान था?

Nijanand App

आज के ज्ञानी, व्याकरणाचार्य, जगत गुरू और झूठे ग्रन्थों के अभिमानी पंडित जो केवल इस महान ज्ञान को पेट पालने का साधन बनाए बैठे हैं, क्या वे कृष्ण नाम वाले तन के अन्दर बैठे पारब्रह्म को पहचान सकते हैं? नहीं ! उन्हें तो केवल कृष्ण नाम बेच कर अपना पेट पालने का धन्धा करना है। यदि वे हकीकत जान भी लेंगे तो जाहिर कैसे करेंगे ? यदि जाहिर करेंगे, तो भूखों मरेंगे। इसलिए हम ऐसे लोगों के ज्ञान में न ही फंसे।

आइए! अब उधर, उनके साथ उनकी आत्माएं जो आई थीं, उनको इन्द्र के प्रकोप के समय गोवर्धन को उठा कर ब्रज–गोकुल को बचाया और इन्द्र के प्रकोप से बाकी सृष्टि का लय हुआ, जिसकी भागवत वालों को भी सुध नहीं है, क्योंकि कोई रहा ही नहीं और फिर ज्यों के त्यों रच कर तीन साल और लीला की। आप कहोगे, यह ज्ञान कहां और किस ने कहा ? कृष्ण के तन में पूर्ण ब्रह्म अक्षरातीत आए थे। उस समय उनकी लीलाओं से उन्हें कोई पहचान नहीं सका। अब दुबारा उन्हीं का कलियुग में श्री विजियाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक के रूप में आना, जो लिखा है, वही तो पूर्णब्रह्म प्राणनाथ जी अपनी वाणी में कहते हैं–

दो बेर दुनियां नई कर, किन दो बेर डुबाई जहान।
तुमको लैलत कदर में, दो बेर किन बचाए तोफान।।

सिनगार – प्र० २६ चौपाई ४.

अर्थात् हे परमधाम की आत्माओं! किसने दुनियां को दो बार डुबा करके(महाप्रलय करके) दुबारा नई दुनियां बनाई और तुम्हें लैलतुल–कद्र की इस रात में महाप्रलय में से दो बार किसने बचाया ? एक बार हूद तूफान में गोवर्धन पर्वत के नीचे बचाया और दूसरी बार योगमाया के ब्रह्माण्ड में ले जा कर सुरक्षित किया।

उधर अपनी रूहों के साथ ग्यारह वर्ष तक बराबर जमुना तट पर बंसी बजाना और अनेकों प्रकार की प्रेममयी लीला करते रहने पर वह परमधाम की आत्माएं जो यहां गोपियों के तनों में प्रगट हुई थीं, धीरे धीरे माया के प्रबल प्रवाह में मूल सम्बन्ध को भूल गईं। ऐसी बहीं कि लीला में अपनापन भी भूल गयीं, तब उस अक्षरातीत प्राणनाथ जी ने जो कहा था कि मैं तुम्हारें साथ रहूँगा, पर जब तुम्हें माया का तन और भ्रमित करने वाली स्वप्न की बुद्धि मिलेगी तो मूल

Nijanand App

सम्बन्ध और प्रेम को भूल जाओगी, तो इसे पूरा करने के लिए ग्यारह वर्ष के बाद जब गोपियों के दिल से हकीकत निकल चुकी थी तो श्री कृष्ण जी ने कहा "आज रात्रि मेरे साथ वृन्दावन में चलो। वहां जा कर रास की लीला करेंगे"। तो लोक–लाज–मर्यादा में फंसी गोपियों के तन धारण की हुई आत्माएं भूल वश बोलीं–"हम आपके साथ आधी रात्रि के समय नहीं जा सकती। तुम निर्लज्ज हो, बेशर्म हो, कामी हो, परपुरूष हो। हम कुलवन्ती नारी हैं, हमारे पति हमारे घर हैं। यह श्री प्राणनाथ जी ने स्वयं आ कर कहा कि ये वचन गोपियों ने मुझे कहे थे।

गलियन में दुरजन देखे, तोमें नहीं विचार ।
तूं कामी कछू ना देखहीं, पर सासुड़ी दे मोहे गार ।।

किरंतन – प्र० ४६ चौ० –३

ऐसे गोपियों के वचन सुन कर श्री धाम के धनी ने उस दिन के पश्चात् न तो फिर यमुना तट पर जा कर बांसुरी बजाई और ना ही गोपियां वहां गईं बावन दिन तक श्री कृष्ण नाम के तन में धाम धनी श्री प्राणनाथ जी ने बाट देखी। गोपियों ने पास रहते हुए भी धनी को भुला कर वियोग देखा। जब बावन दिन व्यतीत हो गए तो सांय काल जब वन से गौवें लेकर अपने भाई बलदाऊ जी और कल्याण जी के साथ आ रहे थे, तो बस मन में ले लिया कि अब इस ब्रह्माण्ड में नहीं रहना। जिन के कारण आना हुआ है, वे ही मूल सम्बन्ध भूल गई हैं तो फिर क्या रहना? तब बलदाऊ जी के पास जा कर कहा–"आप गौवें लेकर चलो। मैं कल्याण भैया के साथ आ रहा हूँ"। इस प्रकार ये दोनों भाइयों से साथ छुड़ाकर वहीं वन में ही बैकुण्ठ के नाथ, जिन्होंने माया का तन धारण कर जन्म लिया था, उन्हें प्रगट होने का आदेश किया, तो तुरन्त विष्णु भगवान जी सामने प्रगट हो गए। तब पारब्रह्म अक्षरातीत की उस शक्ति ने जो उस मिथ्या तन में थी, कहा –"हे विष्णु ! तुमने जो हमारे कारण गर्भ का दुःख उठाया और इतने दिन हमारी सेवा में हाजिर रहे, हम अब इस ब्रह्माण्ड को छोड़ कर योगमाया जो निराकार के पार अखण्ड है, वहां जा रहे हैं। आपको इस कष्ट के बदले अखण्ड करेंगे"। तो विष्णु भगवान दण्डवत् प्रणाम कर बैकुण्ठ सिधारे। तब तुरन्त ही श्री राजजी महाराज अक्षर की आत्मा के साथ योगमाया में पहुँचे और अब वह तन जिसका नाम कृष्ण है, आप ही सोचें! उसका क्या हुआ? विष्णु का जीव बैकुण्ठ चला गया। अक्षर की आत्मा और धनी जी की शक्ति योगमाया में चली गई तो

Nijanand App

बाकी मिट्टी का तन वहीं नष्ट हो गया, जिसका नाम कृष्ण था ।

भागवत स्कन्ध १०/ अध्याय २६– श्लोक १,२,३

में वल्लाभाचार्य जी की सुबोधिनी टीका के अनुसार– शरद ऋतु के कारण जहां मालती के फूल खिल रहे थे, उन रात्रियों को अच्छी प्रकार देख कर अर्थात् जब अपनी आत्माओं का वियोग सहन नहीं हुआ तो योगमाया को साथ लेकर श्री कृष्ण जी के तन में विराजे श्री अक्षरातीत ने अक्षर को लीला दिखाने के लिए मन में चाहना ली।

भावार्थ – श्री कृष्ण ने रमण करने के लिए नया मन अर्थात नया तन धारण किया। उसके साथ नया चन्द्रमा भी बना ।

(२) बहुत अधिक समय से बिछुड़ा हुआ पति मिलने के बाद जिस प्रकार अपनी प्यारी का दुःख दूर करता है, उसी प्रकार उस समय ठंडक देने वाली किरणों से युक्त नूरमयी चन्द्रमा उदय हुआ ।

(३) अखंड मंडल वाली योगमाया में, जहां कि सुन्दरता अति न्यारी है, नव केशर के समान लाल, आनन्द देने वाले चन्द्रमा से सुसज्जित वृन्दावन सजाया और वह किशोर तन धारण किया, जिससे अक्षर को परमधाम के प्रेम की लीला दिखानी थी। अपनी प्यार भरी आनन्द की स्वरूपा सखियों को बुलाने के लिए अति प्यार भरी बांसुरी बजाई, जो सारे ब्रह्माण्ड ने सुनी।

ब्रह्मा, विष्णु, महेश, दिनेश, गणेश, शेष आदि सबने सुनी पर आत्माओं के बिना कोई भी यह नहीं जान सका कि ऐसी बांसुरी कौन और कहाँ बजा रहा है ? केवल वह परमधाम की आत्माएं जो गोपियों के तनों में थीं, अपने प्रीतम

भगवानपि ता रात्रि : शरदोत्फुल्लमल्लिकाः ।

वीक्ष्यरन्तुं मनश्चक्रे योगमायामुपाश्रितः ।।

तदोडुराजः ककुभः करैर्मुखं प्राच्या विलिम्पन्नरूणेन शन्तमैः।

स चर्षणीनामुदगाच्छुचो मृजन् प्रियः प्रियाया इव दीर्घदर्शनः।।

दृष्टवा कुमुद्वन्तमखण्डमण्डलं रमाननाभं नवकुङ्कुमारूणम्।

वनं च तत्कोमलगोभिरञ्जितं जगौ कलं वामदृशां मनोहरम्।।

भा० १०/२६/१,२,३.

Nijanand App

के वियोग में बावन दिन से तड़प रही थी। एक दम (ततखिन) जिन्होंने अपना सर्वस्व त्याग कर लोक–लाज और तनों (मिथ्या) को छोड़ कर, भवसागर पार कर नित्य योगमाया में अपने जीवों सहित प्रवेश किया, ऐसे स्वभाव की सखियों को तामसी सखियां कहते है। जिन्होंने थोड़ा श्रृगांर करना चाहा कि प्रीतम के पास जाना है, पर चित्त तो बांसुरी ने खैंच रखा था, इस लिए उलट–पुलट श्रृंगार कर वे भी भवसागर से पार उतरी। ऐसे स्वभाव की सखियों को राजसी सखियां कहते हैं और जो लोक लाज की मर्यादा के डर से तुरन्त न निकल सकीं, तो उनके माया के पतियों और परिवार वालों ने बंधन डाले, परन्तु वे सखियां विरह की अग्नि में तड़फ तड़फ कर तनों को छोड़ी और भवसासगर से पार उतरीं ऐसे स्वभाव वाली सखियों को स्वांतसी सखियां कहते हैं। परन्तु साथियों! यह स्वभाव तो हमारे अहं भरे माया के तनों के यहां के हैं न कि परमधाम के। वहां तो केवल नूरमयी तत्व ही है। स्वभाव जुदा होने का सवाल ही पैदा नहीं होता, परन्तु यहां देखने में आया है कि जो लोग अपने गुण गाते हैं और गादियों के प्रभाव से औरों को गुमराह करते हैं, उनका कहना है कि परमधाम में भी तीन स्वभाव हैं, जिसे उन्होने मूल मिलावे का अपना मन घड़न्त नक्शा बना कर वहां तामसी, राजसी और स्वांतसी सखियों को तीन हारों में बैठा दिखाया है, जो बिल्कुल गलत और न मानने योग्य है वहां तो दाडिम की कलियों के समान जुड़ कर रूहें बैठी हैं जिसका निर्णय वाणी से स्पष्ट होता है।

गले बाथ सब लेय के, मिल बैठेंगे एक होए।

तो फरामोसी कहा करे, होए न जरा जुदागी कोए।।

खिलवत १६/४७

ए मेला बैठा एक होए के, रूहें एक दूजी को लाग।

आवे ना निकसे इतथें, बीच हाथ न अंगुरी माग ।।

सागर प्रकरण २ चौपाई ६

महामत कहें बैठियां देख के, हक हँसत हैं हम पर ।

कहें देखो इन विध खेल में जाकर, भेलियां रहे क्यों कर ।।

सागर प्र० २ चौ० ३६

अब जो पारब्रह्म अक्षरातीत की वाणी को झूठा सिद्ध कर देने वाले ऐसे गुरूओं का पल्ला पकड़ कर क्या मिलेगा ? यह भी वाणी में स्पष्ट कहा है –

Nijanand App

बैठत सतगुर होए के, आस करें सिष्य केरी ।

सो डूबे आप सिष्यन सहित, जाए पड़े कूप अंधेरी ।।

किरंतन प्रकरण २६ चौपाई ६

कालमाया से योगमाया में कैसे ले गए?

ए लीला यामें एते दिन, कालमाया को ब्रह्माण्ड ।

एह कल्पांत करके, फेर उपज्यो अखंड ।।

कलश हि० प्रकरण १६/६३

अब जोत पकरी न रहे, दूजा बेधिया आकास।

जाए लिया इंड तीसरा, जहां अखंड रजनी रास ।।

कलश हि० प्रकरण २० चौपाई

ऊपर की चौपाई से सिद्ध हो गया कि वह व न्दावन अखंड योगमाया के ब्रह्माण्ड में है, वह इस काल माया के बह्माण्ड में नहीं था जिसका प्रमाण पुराण संहिता श्लोक २८/५६,– २६/४५ में है।

जिस व न्दावन का भागवत निर्णय नहीं कर सकी कि वह वन कहां है ? निर्णय करती भी कैसे? निराकार की अपरा बुद्धि, परा शक्ति जाग त बुद्धि के बिना वर्णन नहीं कर सकती।

अब कलियुग में स्वयं वही प्राणनाथ जो उस समय क ष्ण नाम के तन में विराजमान थे, आ कर स्वंय बतायें कि मैंने किस और कहां, कौन से व न्दावन में रास खेला था?

एह सरूप ने एह व ंदावन, एह जमुना त्रट सार ।

घर थी तीत ब्रह्माण्ड थी अलगो, ते तारतमे कीधो निरधार ।।

रास–प्रकरण १० चौपाई ३६

ए पिउ सरूप नौतन, नौतन सिनगार ।

नेह हमारा नौतन, नौतन आकार ।।

ए बन सुंदर नौतन, नौतन वाओ वाए ।

जल जमुना नौतन, लेहेरां लेवें बनराएं ।।

सुगंध बेलियां नौतन, जिमी रेत सेत प्रकास ।

Nijanand App

नेहेकलंक चंद्रमा नौतन, सकल कला उजास ।।

नौतन रंग पसु पंखी, बानी नई रसाल ।

नौतन बेन बजावहीं, नए सुख देवें लाल ।।

प्रकाश हि० – बेहद वाणी – प्र० ३१ चौ० ११२–११५

अब प्रश्न उठता है कि परमधाम से सत् अंग और आनन्द अंग की सखियों की इच्छा पूर्ण करने के लिए पारबह्म श्री प्राणनाथ जी ने दुनिया में आ कर कालमाया का कलेवर पहना। उसके अन्दर अक्षर की आत्मा थी, तो वह सुख कैसे देखे? साथियों ! पारब्रह्मके ज्ञान श्री मुख वाणी (कुलजम स्वरूप) के आ जाने के बाद कोई संशय रहता ही नहीं, जिस कारण से इसको बेशक इल्म भी कहा है। उसमें यह भी कहा है –

दिन कयामत के पूरे कहे, सो खास उमत वालों ने लहे।

क्यों लहे जाको लिखी दोजक, जावे नहीं तिनों की सक।।

बड़ा कयामतनामा प्र० २३ चौ०–१

केवल अब दोजख में जल कर मरने वालों के बिना सब को यकीन आ जाएगा। तो साथ जी! अक्षर ब्रह्म अपने धनी के साथ उनकी लीला का पूरा–पूरा रस लेने के लिए कालमाया के अन्दर आये, तो अपनी नई चौबीस हजार सुरताएं धारण की –

और कुमारका बृज वधु संग जेह, सुरत सबे अछर की एह।

जो व्रत करके मिली संग स्याम, मूल अंग याके नाहीं धाम।।

प्रगटवाणी – चौ० ३६

इन पारब्रह्म की सखियों के साथ जो कुमारिका सखियां थी, वे सब अक्षर ब्रह्म की धारण की हुई सुरताएं थी। ये व्रत करके श्री कृष्ण जी को पति रूप

योगशक्तिस्तथोद्भूता भगवत्यखिलात्मनि ।

पिबन्ती विश्वमखिलं मण्डलं समरीरचत् ।।

पु० सं० २८/५६

ग्रस्तः प्रपञ्चो निःशेषः कालशक्ति विनिर्मितः ।

योगशक्त्या तदा मोहमृते शिष्टं न किञ्चन ।।

पु० सं० २६/४५

Nijanand App

में मान कर योगमाया में पहुंचीं। इनके मूल तन धाम में नहीं हैं।

कालमाया के ब्रह्माण्ड में ये तन धारण कर लीला देखीं, और ब्रह्माण्ड का प्रलय होने से पहले इन्होंने पूर्ण ब्रह्म के रूप श्री कृष्ण जी से चीर हरण के समय वरदान पा लिया था कि इनके साथ भी लीला होगी। इस तरह से ये पार तो उतर गईं, पर उस ब्रह्माण्ड में इनके साथ लीला क्यों नहीं हुई और फिर हुई तो कहां? ये भेद आगे खुलेंगे।

कुमारिका सखियां और चीर हरण लीला'-

कालमाया के ब्रह्माण्ड में अक्षर बह्म ने लीला देखने के लिए जो नई सुरताएं धारण की थी, उनको बाल तन दिए गए थे। नौ–दस वर्ष तक अपने शारीरिक सम्बन्ध से वे गोपियों के साथ यमुना तट पर जाती थीं और लीला देखा करती थी। अब जब वे युवा अवस्था अर्थात् चौदह–सोलह वर्ष की आयु में आ गईं तो सोचने लगीं कि श्री कृष्ण जी हमारे संग लीला क्यों नहीं करते हैं ? तब उन्होंने मिल कर श्री कृष्ण जी से कहा – हे कन्हैया ! हमारे साथ भी गोपियों की तरह लीला करो। तब श्री कृष्ण जी ने कहा – यह नहीं होगा। तब सब ने मिल कर व्रत लिया कि कल यमुना जी में नग्न स्नान करें, तो इससे सारे ब्रज और गोकुल में श्री कृष्ण जी की निन्दा होगी। तो ये डर के मारे हमारे साथ भी लीला करेंगे। कुमारिकाओं ने दूसरे दिन ऐसा ही किया। अपने वस्त्र उतार कर यमुना तट पर रख दीं और यमुना जी में नग्न स्नान करने लगीं। अब इस बात की सूचना जब श्री कृष्ण जी को मिली तो वह यमुना तट पर आए और कुमारिकाओं के वस्त्र (चीर) उठा कर वृक्ष पर चढ़ बैठे और बोले कि जो जो हमारे संग लीला करना चाहती हैं, जल से बाहर आयें, क्योंकि श्री कृष्ण जी जानते थे कि युवा कन्या कभी भी किसी के सामने बिना वस्त्रों के नहीं आ सकती, भले ही उसका मरण क्यों न हो जाए। तब श्री कृष्ण जी ने कहा कि आप तो कहा करती थीं कि आप हमारे पति हो, यदि ऐसा है तो बाहर आओ। तब उन सखियों के भाव पूरे नहीं उतरे और वह सब क्षमा मांगते हुए बोली कि हम भविष्य में कभी भी नग्न स्नान नहीं करेंगी। परन्तु हे प्रभु ! हमारी प्रार्थना तो स्वीकार करो। तब श्री कृष्ण जी ने कहा– बोलो! क्या चाहती हो? तब उन्होंने मांगा कि हमारे साथ भी गोपियों जैसी लीला करो। तब वहां उनको श्री कृष्ण जी ने कहा– मैं वचन देता हूँ कि तुम्हारे साथ भी लीला होगी। उस दिन से कुमारिकाओं ने नग्न स्नान न करने का व्रत लिया।

Nijanand App

इस वस्त्र (चीर) हरण की लीला में हकीकत क्या है? अब आप समझ ही गए होगें कि यह कोई सांसारिक कुभाव नहीं था। कुमारिका सखियां श्री कृष्ण जी को अपने पति भाव से मानती थीं, मगर उनका वह भ्रम मिट गया और उन्हें ज्ञान हो गया कि यह हमारे प्रभु हैं, पति नहीं और श्री कृष्ण जी भी कोई सांसारिक व्यक्ति नहीं थे। उनके अंदर अक्षर की सुरता और अक्षरातीत का जोश था, जिनको कभी भी विकार भाव आ ही नहीं सकता। इसलिए इस चीर हरण की लीला को जो संसारी भाव से देखता है, वह केवल कोरा जीव है और उसके पास संसार की संशय भरी स्वप्न की बुद्धि है।

आओ ! अब थोड़ा रास मंडल का भी आनन्द लें। पहले यह बताया जा चुका है कि –

एह सरूप ने एह वृंदावन, ए जमुना त्रट सार।
घर थी तीत ब्रह्माण्ड थी अलगो, ते तारतमे कीधो निरधार।।

रास प्रकरण १० चौ० ३६

अर्थात् यह वृन्दावन न तो कालमाया के ब्रह्माण्ड में था, न ही परमधाम में है। इस ब्रह्माण्ड से अलग और परमधाम से दूर नित्य योगमाया के ब्रह्माण्ड में नया बनाया। नौतन वृन्दावन, नौतन चांदलो (चन्द्रमा) अति सुन्दर निकुंज बेलियां, कल्प वृक्ष और नूर ही नूर से भरपूर सजाया और अपना भी रूप अनोखा, निराला, नटवर बनाया, क्योंकि अक्षर ब्रह्म को नाटक करके प्रेम लीला दिखानी थी।

योगमाया की कूल भूमि नूरमयी और अखंड है, अर्थात् वहां जो चीज बन जाती है, उसका कभी भी नाश हो ही नहीं सकता। वहां नाम, तत्व का गुण नहीं है। कालमाया से प्रत्येक वस्तु विपरीत है, क्योंकि श्री अक्षरातीत को ब्रज की लीला में पहली बार माया का तन धारण कर लीला करनी पड़ी, तब उस तन का नाम गर्गाचार्य ऋषि ने कृष्ण रखा और श्री प्राणनाथ जी को कृष्ण नाम से लीला करनी पड़ी, जिससे उनकी हकीकत को न कोई ब्रज में जान सका और न ही रास में।

भले ही कालमाया के ब्रह्माण्ड का प्रलय हो गया, पर यहां भी श्री प्राणनाथ जी अक्षरातीत ने उसी नाम से और सब सखियों ने भी ब्रज वाले नामों से लीला की, परन्तु तन यहां पर सब के अखंड थे, तो अब विचारें कि नाटक लीला में

Nijanand App

श्रृंगार कैसा था? जब पहले ब्रह्मांड का प्रलय ही हो गया था तो व्यास जी महाराज वृन्दावन की लीला के पात्र कैसे बनते ? यह सब भेद अब इस कलियुग में स्वयं श्री प्राणनाथ जी ने आकर खोले और कहा कि मैं ही वहां था और मैंने ही नया रूप धारण करके लीला की थी, जो आज भी अखंड है। उस नाटक की लीला करने वाले तन का नाम कृष्ण है। हकीकत में मैं अक्षरातीत हूँ। वहां नाम, तत्व, गुण, षट प्रमाण, मन, वचन और कर्म जा ही नहीं सकते। अब आपको भागवत के अन्धकार से हटा कर सत्य अर्थात् अखंड ज्ञान की जानकारी देता हूँ कि वहां मैंने कैसे और क्या लीला की और फिर अक्षर की मांग करने पर वह लीला और तन वहीं छोड़ कर हम अपने घर वापिस कैसे गए?

यह सब प्रमाण अब आप श्री मुख वाणी कुलजम स्वरूप साहिब से देखें कि श्री प्राणनाथ जी ने वहां कौन सा श्रृंगार धारण किया? रास प्रकरण ८ के अनुसार – केसरिया रंग की सूथनी (जो काठीयावाड़ – सौराष्ट्र में आज भी पुरूष लोग पहनते हैं), कमर के ऊपर पीली पटोली, चरणों में झांझरी, घुंघरी, काम्बी और कड़ला है, गले में चार हार – दो हीरे के, तीसरा सोने का और चौथा मोतियों का है, हाथों में पोहोंची और बाजूबंध है, उंगलियों में सात अंगूठियां हैं और बालों में चोटी गूंथी है, जिसमें अति सुन्दर गोफनड़े और फुमक लटक रहे हैं। चोटी इतनी लम्बी है कि पीठ तक लटक रही है। शीश पर सुन्दर मुकुट मणियों और रत्नों से जड़ित है। कानों में कुण्डल हैं और मुख पर सुन्दर बांसुरी, जिसके तीन रंग हैं। मुख के भाग में नीला, मध्य में लाल और छेदों के पास आसमानी रंग है। किनारे पर फुमक लटक रहा है। ऐसा नटवर भेष बना कर बांसुरी बजा कर सखियों को कालमाया से योगमाया में बुलाया था –

तहां (वृन्दावन में) जाए के बेन बजाई, सखियां सबे लई बुलाई।
तामसियां राजसियां चर्ली, स्वांतसियां शरीर छोड़ के मिर्ली।।

प्रगट वाणी चौ० ३५

वे भवसागर से पार योगमाया की सीमा पर पहुंचीं, परन्तु आज्ञा के बिना प्रवेश नहीं कर सकीं। वहां श्री कृष्ण जी अति सुन्दर किशोर रूप धारण कर जब सखियों के सामने आए, तो उनकी सुन्दरता, मोहिनी छवि और उस पर बावन दिन के वियोग ने सखियों को ऐसी तड़प लगा दी कि एक दम अपने प्रीतम से जा मिलीं, परन्तु इतने में श्री कृष्ण जी ने वहां आकर कहा–

Nijanand App

उथले वचन-

जैसे ही गोपियों की आत्मायें भवसागर पार कर योगमाया की सीमा पर पहुँचीं, तो श्री कृष्ण जी ने उनका स्वागत करते हुए कहा आओ! पतिव्रता सोहागनियों! आओ ! हम आपका स्वागत करते हैं। आधी रात्रि के समय एक पर–पुरूष के पास कुलवन्ती नारियों का आना शोभा नहीं देता। आप सब मिलकर आई हो। तुम्हारे ब्रज गोकुल में कुशल मंगल तो है ? इस समय अपने घर–बार, बाल–बच्चों और पतियों को छोड़ कर इस व्याकुलता से आना पतिव्रता धर्म के विरूद्ध है। जाओ, अपने घरों में लौट जाओ। तुम्हारे पति तुम्हारी राह देख रहे होंगे। बच्चे माताओं के बिना व्याकुल हो रहे होंगे। तुमने ब्रज और गोकुल को छोड़ते समय न तो अपने पीहर की लोक लाज को सोचा और न ही अपनी ससुराल –की मान मर्यादा को देखा। इसलिए तुम्हें तुरन्त वापिस लौट जाना चाहिए। तब कोमल दिल वाली सखियां ऐसे शब्द सुन फिर मूर्छित हो गईं। तब तामसियों की सिरदार सखी इन्द्रावती जी बोली – हे कृष्ण कन्हैया ! कुछ और प्रवचन बाकी है या पूरा हो गया? तब श्री कृष्ण जी बोले–मैंने जो कुछ कहा, वह वेद शास्त्रों के अनुसार ही तो कहा कि पतिव्रता नारी का पति भले ही लूला हो, लंगड़ा हो, गूंगा हो, बहरा हो, अंधा हो, सब प्रकार के अवगुणों से युक्त हो और भले ही पति बनने के योग्य भी न हो तो भी उसे छोड़ कर पर पुरूष के पास आधी रात को नहीं जाना चाहिए। तब इन्द्रावती जी बोली– हे प्रियतम ! यह तो इतना ऊँचा ज्ञान आपने झूठी देह के पतियों के लिए सुनाया तो यह बताइये कि क्या आप हमारी आत्मा के सर्वगुण निधान, सर्वशक्तिमान, अखंड पति नहीं हो? तो अब आप को छोड़ कर हम कहां जाएं? तब श्री कृष्ण जी उनके इस प्रश्न का उत्तर नही दे सके। देते भी क्या, हँस कर कहा कि–सखियों! आओ, मैं तो आपकी ही राह देख रहा था और यह वचन तो इसलिए कहे कि कहीं माया अभी भी आपको लगी तो नहीं है।

तब श्री कृष्ण जी ने योगमाया को आज्ञा दी कि जैसा मेरा सुन्दर शरीर और श्रृंगार है, ऐसा ही इन आत्माओं को धारण कराओ। आज्ञा देने की देरी थी सब आत्माएं और श्यामा जी ने योगमाया में प्रवेश कर नए तन धारण किए।

जोगमाया नो देह धरीने, श्री स्यामा जी थया तैयार।

ततखिण तिहां तेणे ठामे, मारे साथे कीधो सिणगार।।

Nijanand App

जैसे ही गोपियों ने योगमाया में प्रवेश किया तो काल माया के ब्रह्माण्ड का प्रलय कर दिया।

या विध मुक्त इनों की भई, कुमारका सखियां जो कही।

ए जो अग्यारे बरस लो लीला करी, कालमाया तितही परहरी ।।

प्रगट वाणी प्र० ३७ चौ० ३८

तब श्री प्राणनाथ जी, जो कृष्ण के तन में नटवर भेष धारण करके बैठे थे, सखियों को लेकर वृन्दावन में गए और कहा– देखो! मैंने तुम्हारे साथ रास लीला करने के लिए कितना सुन्दर वृन्दावन सजाया है? वहां पहुंचते ही सब रास की रामतों में मग्न हो गए? अब वह रामतें क्या थी ? वह तो रास ग्रन्थ श्री कुलजम स्वरूप से ही पढ़ कर आनन्द ले सकते हैं।

उस आनन्दमयी वृन्दावन में अति सुन्दर स्वरूप के साथ रास लीला के प्रेम रस में अक्षर की आत्मा और सखियां इतनी मग्न हो गई कि अपनी हकीकत को भी भूल गईं । अक्षर ब्रह्म की आत्मा ने समझा कि मैं साक्षात् परमधाम के अन्दर ही लीला देख रहा हूँ।

फेर मूल सरूपें देख्या तित, ए दोऊ मगन हुए खेलत।

जब जोस लियो खेंच कर, तब चित चौंक भई अछर।।

प्रकाश हि० प्रगट वाणी– प्र० ३७ चौ० ४१

जैसे ही श्री राज जी महाराज ने परमधाम से देखा कि यह तो बेसुध हो कर दोनों (अक्षर और सखियां) रास लीला में मग्न हो गए है। इनको याद कराने के लिए उस तन में से अपनी शक्ति को वापिस खींचा, तो उसी समय जो वृन्दावन में श्री कृष्ण के तन में अक्षर की आत्मा थी, वह चौंक उठी और वृन्दावन को और सखियों को अपने सामने देख कर, जो कभी भी परमधाम में देखा नहीं था, बोला –

कौन बन कौन सखियां कौन हम, यों चौंक के फिरी आतम।

रास आया मिने जाग्रत बुध, चुभ रही हिरदे में सुध।।

प्रगट वाणी – चौ० ४२

Nijanand App

अब अक्षर ब्रह्म की आत्मा यह सोचने लगी कि यह कौन सा बन है ? यह मेरे सामने सखियां कौन हैं और यह मेरा श्रृंगार आज कैसा है? इस तरह अक्षर की आत्मा को होश आई। ओ हो ! मैंने तो धनी से उनकी प्रेम की जो लीला मांगी थी, वह देख रहा हूँ। यह लीला और जो ब्रज की लीला देखी है, यह तो मैंने कभी नहीं देखी। बहुत ही आनन्ददायक है, इसलिए अपने धनी से यहां अखंड करा लूं, तो सदा इसका आनन्द लिया करूंगा। यह सोच कर अक्षर बह्म की आत्मा ने अपने धनी श्री अक्षरातीत से इन दोनों लीलाओं ब्रज और रास, जो देखी है, अखंड कर देने की मांग की –

कई सुख रास में खेले रंग, सो हिरदे में भए अभंग।

या बिध रास भयो अखंड, थिरचर जोगमाया को ब्रह्माण्ड।।

प्रगटवाणी–चौ० ४३

तब अक्षरातीत श्री राज जी महाराज ने बताया कि यह तन, जिससे वृन्दावन में रास हो रही है, यह तो अखंड कृष्ण तत्व से ही है। ये तन कभी नाश नहीं होंगे। लीला भी अखण्ड होती रहेगी। रहा सवाल ब्रज का, जिस कालमाया में लीला कर रहे थे, उसमें से ब्रज, गोकुल और मथुरा के कुल जीवों को वहां की सामग्री सहित योगमाया में ले आओ। जिस तरह हमने अपनी आत्माओं को कालमाया से योगमाया में लाकर नए तन दिए और जिनसे अखंड रास लीला हो रही है उसी तरह, आप वहां के जीवों को योगमाया के नए तन दे दो। उनसे वही लीला होती रहेगी। तब अक्षर की आत्मा ने फिर कहा कि वहां तो उस तन का नाश हो गया, उसमें जीव तो विष्णु का था और अंदर हम और आप (अक्षर ब्रह्म की आत्मा और श्री राजजी महाराज का जोश) बैठ कर लीला कर रहे थे, तो अब कृष्ण कौन बनेगा? तब तुरन्त ही अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी ने कहा कि उस विष्णु भगवान के जीव को योगमाया में लाकर बाल स्वरूप (ग्यारह वर्ष और बावन दिन) वाला दे दो। ब्रज की भी लीला अखंड हो जायेगी। इस प्रकार अक्षर ब्रह्म ने किया और ब्रज की लीला भी योगमाया में अखंड हो गई।

तो अब यहां और प्रश्न उठ रहा है कि माहेश्वर तन्त्र और पुराण संहिता जैसे प्रसिद्ध ग्रन्थों में तो श्री कृष्ण जी को ही पूर्ण ब्रह्म कहा गया है, तो यदि कृष्ण पूर्ण ब्रह्म है, तो अब यह निर्णय कीजिए कि पूर्ण ब्रह्म एक है या अनेक? क्योंकि दो तो ब्रज और रास में अपनी अपनी राधिका जी के साथ अखंड हैं

Nijanand App

और फिर भागवत के अनुसार एक कृष्ण और चाहिए, जिसने कंस को मारा और चौथा वह जो रूक्मिणी का हरण कर माधवपुर ले गया और उससे शादी की। द्वारिका जी में एक सौ बारह वर्ष राज्य करने के बाद जिसको वन के शिकारी ने अपने तीर से मार दिया, तो इस प्रकार चार कृष्ण होते हैं और यह सिद्ध होता है कि कृष्ण केवल तन का नाम था, जो आज भी योगमाया के अखंड तत्व का तन धारण कर बाल मुकुन्द और बांके बिहारी के रूप में लीला कर रहे हैं और पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानन्द केवल अनादि, अखंड, किशोर स्वरूप में ही दिव्य ब्रह्मपुर धाम (परमधाम) में अपनी आनन्द स्वरूपा श्री श्यामा जी महारानी और सखियों के साथ विराजमान हैं, जहां कोई नाम, तत्व, गुण और प्रमाण नहीं लगता।

आओ ! जरा उन सखियों को भी समझें कि उनका इस अन्तर्ध्यान के समय क्या हुआ?

साथियों ! जब अक्षरातीत पारब्रह्म ने दोनों को (सखियों और अक्षर की आत्मा को) चौकस करने के लिए अपनी शक्ति (जोश) खींचा तो वह तन अदृश्य हो गया। इससे पहले राधा जी का मान भी तोड़ना जरूरी था। वह समझती थी कि श्री कृष्ण केवल मेरे ही हैं, तो कृष्ण जी पहले राधिका जी के पास गए और कहा कि मैं आपको बहुत चाहता हूँ, इसलिए आप मेरे साथ और आगे वृन्दावन में, एकान्त में चलो। वहां चल कर और आनन्द की लीला करेंगे। तब राधिका जी ने कहा– हे प्रीतम ! अब मैं थक गई हूँ, कोई साधन हो तो मैं चल सकती हूँ। तब श्री कृष्ण जी ने कहा कि आओ! मेरे कंधे पर बैठो। कृष्ण जी नीचे बैठ गए, तब राधिका जी के मान की सीमा का ठिकाना ही नहीं रहा। जैसे ही एक पग ऊपर उठा कर रखना चाहा तो नीचे से वह अदृश्य हो गए और राधिका जी नीचे गिर पड़ी और मूर्छित हो गई।

उधर सब गोपियां, जिनके तन में एक तो परमधाम की आत्मा जिसने तन धारण किया और दो दो अक्षर की सूरताओं ने बैठ कर उस तन से लीला देखी। एक दम श्री कृष्ण जी को अन्तर्ध्यान पाकर व्याकुल हो उठीं। उन्होंने देखा कि श्री राधिका जी हमारे बीच नहीं हैं, फिर सोचा कि वे ही श्री कृष्ण जी को लेकर कहीं वन में चली गई हैं। जैसे ही खोजते–खोजते वे सब आगे बढ़ीं, तो क्या देखा कि राधिका जी तो वहां मूर्छित पड़ी हैं। दौड़ कर श्री जमुना जी का जल ला कर छिंटा दिया तो उनको होश आ गई। तब सब सखियों के पूछने पर जिस

Nijanand App

प्रकार वह कृष्ण जी द्वारा इस लीला में ठगी गई, वह सब को बताया। तब गोपियां यह वार्ता सुन कर कि कृष्ण तो राधिका जी को भी छोड़ कर चले गए, तो सबने वृन्दावन के एक एक पत्ते को छान मारा, परन्तु कृष्ण जी वहां नहीं मिले। तब कोई तो इतना दुःखी हो गई कि मानो उसके प्राण ही निकल गए हों। तब इन्द्रावती सखी कहती है–सखियों! उदास मत होओ और कहती हैं –

एम रे सखियों तमे कां करो, बेहेनी दृढ करो कां न मन।
आपणने मूके नहीं, जेहेनूं नाम श्रीकृष्ण ।।

रास – प्र० ३२ चौ० २२

हे सखियों ! तुम ऐसा क्यों करती हो (इतना दुःखी क्यों होती हो) मन में दृढ़ता रखो। जिन अक्षरातीत का नाम श्री कृष्ण हुआ है, वह निश्चय ही हमें नहीं छोड़ेंगे।

सखी जाइए आपण वनमां, एम रे थैयो तमे कांए।
जेनूं नाम श्रीकृष्ण जी, ते बेठा छे आपण मांहें ।।

रास – प्र० ३२ चौ० २३

चलो, सखी! हम सब उन्हें वन में खोजें। तुम इतनी निराशावादी क्यों हो गई हो? जिनका नाम कृष्ण है, वह तो अपने अन्दर ही बैठे हैं।

तब तामसी सखियों ने यह निर्णय लिया, कि ब्रज में जो लीला हुई थी, वह कृष्ण जी को बहुत प्यारी थी। यदि हम उसका नाटक करें, तो कृष्ण जी अवश्य ही आ जाएंगे।

तब सब तामसी सखियों ने मिल कर ब्रज की लीला का नाटक रचाया और जिस तरह ग्यारह वर्ष बावन दिन के बाद वृन्दावन में जा कर बांसुरी बजा कर सब को बुला लिया था, उसी तरह इन्द्रावती जी ने एक लाईन लगा कर कहा कि आप उधर रहो। मानो यह ब्रज है, मैं बांसुरी बजाती हूं।

अब श्री इन्द्रावती जी होंठों पर बांसुरी रख कर ध्यान लगा कर कहती है – हे मेरे धनी! अब लाज आपके हाथ में है और जैसे ही बांसुरी में फूंक लगाई तो तुरन्त श्री राज जी ने सखियों को रास की हकीकत का आनन्द देने और अक्षर को परमधाम के इश्क की लीला दिखाने के लिए अपनी आवेश शक्ति को अक्षर की आत्मा पर बिठाया, तो श्री कृष्ण का स्वरूप नया श्रृंगार कर पुनः प्रगट

Nijanand App

हो गया ।

इस बात का प्रमाण स्वयं श्री राज जी वाणी में कहते हैं –

आया सरूप कर नए सिनगार, भजनानंद सुख लिए अपार।

दोऊ आतम खेले मिने खांत, सुख जोस दियो कई भांत ।।

प्रगट वाणी– चौ० ४६

तब अक्षर की आत्मा और श्री राज जी के आवेश से युक्त हो कर नई मोहिनी छवि ले कर वह तन सामने आया और सब सखियों के दिल की हाम (इच्छा) शान्त करने के लिए एक एक गोपी के लिए एक एक कृष्ण बन कर सुख दिए, जिसे अक्षर की आत्मा ने अनुभव किया ।

तब बहुत रात बीत जाने पर यमुना जी में स्नान किया । कई सुख जल क्रीड़ा में लिए, फिर नए वस्त्र धारण कर बाहर आए। सखियों ने उतारे हुए वस्त्रों का सिंहासन बना कर कृष्ण जी को वहां बिठा कर वन फल आरोगाया। आरोगते समय अब श्री अक्षरातीत जी का आवेश जो कृष्ण के तन में था, सखियों से पूछा–

बताओ सखियों! वृन्दावन कैसा लगा? तब सब ने वृन्दावन की अपार शोभा को अति प्रसन्नता भरे शब्दों में कह कर अन्त में यह कह दिया कि हे– हमारे धनी! यदि सच पूछो, तो यह वृन्दावन अग्नि के समान दुःखदाई है, क्योंकि जब आपके अन्तर्ध्यान की लीला याद आ जाती है, तो बाकी सारे सुख भी अग्नि के समान हो जाते हैं। सब ने मिल कर कहा कि हे धनी ! हमें तो उस घर जहां हम आपसे कभी भी जुदा न हों, ले चलो ।

हवे वाला हूं एटलूं मांगूं, खिण एक अलगा न थैए ।

जिहां अमने विरह नहीं, चालो ते घर जैए।।

रास – प्र० ४७ चौ० ४३

तब तुरन्त अक्षरातीत धाम के धनी सच्चिदानन्द स्वरूप श्री प्राणनाथ जी के आवेश स्वरूप ने कहा–तो चलो। वह घर तो केवल अखंड परमधाम ही है, जहां हम और तुम अनादि से रहते हैं ।

इंद्रावती कहे अमने वाला, भला रमाडयां रास ।

पछे ते घर मूलगे, वालो तेडी चाल्या सहु साथ ।।

वाला वालमजी मारा, जी रे प्रीतम अमारा ।।

Nijanand App

श्री इन्द्रावती जी कहती हैं, हे वाला जी ! आप हमारे प्रीतम हैं। आपने अच्छी तरह रास की रामतें खेलाईं। इसके बाद सखियों को बुला कर वाला जी सब को अपने मूल घर (परमधाम) ले चलते हैं ।

तब कृष्ण जी के उस तन में से श्री राज जी का आवेश और राधिका जी के तन में से श्री श्यामा महारानी जी की आत्मा और बाकी सब सखियों के तनों में से परमधाम की आत्माएं निकल कर अपनी परआतम में जागृत हुईं और अक्षर की आत्मा अपने अक्षर धाम में जागृत हुई । अब यहां योगमाया में केवल योगमाया के तन ही रह गए, जिनके नाम नहीं बदल सकते। उस अखंड श्री कृष्ण और राधिका और सब सामग्री को सबलिक में अखण्ड कर दिया। जो दुनियां वाले जान नहीं सके, क्योंकि यह दुनियां उस समय प्रलय रूप में थी, इसलिए अज्ञानता के कारण उसी कृष्ण के रूप को ही दुनियां पारबह्म मान बैठी है ।

अब जब सब परमधाम में जागृत हुए तो फरामोशी के नशा का आवरण अभी था, तो फिर क्या हुआ ?

परमधाम में जब अपने मूल तनों में उठे, तब भी फरामोशी का परदा उठने के बाद भी हालत कुछ ऐसी थी, जैसे जाग भी गए हों और कुछ अलसाहट सी हो, तब उल्टा रूहें श्री राजजी महाराज से कहने लगी कि हे धनी ! आपकी माया ने हमारा क्या बिगाड़ा ? आप बंसी बजाते थे और हम सब कुछ छोड़कर यमुना तट पर चली आती थी। आपने तो कहा था कि तुम पानी, पत्थर, आग, देवी–देवताओं की पूजा करोगी। आपस में बैर–विरोध से अपने–पराए की, नफा–नुकसान की, भले–बुरे की सुध न रहेगी। एक दूसरे से अलग–अलग होकर अलग–अलग धर्मों का पालन करोगी। कई तरह के रोग देखोगी। खाने–पीने के संकट होंगे, परन्तु यह सब कुछ तो आपने नहीं दिखाया। इसको देखने की ही तो हमारे मन में चाहना है, अब इसे अवश्य दिखाओ। तब अक्षरातीत धाम–धनी जी ने कहा कि रूहों ! वह माया देखने योग्य नहीं है, तुम वहां जाकर मुझे भूल जाओगी । तब मैं अपना रसूल भेजूंगा, वह परमधाम के संदेश तुम्हें देगा। तुम उस पर विश्वास नहीं करोगी । मैं फिर तुम्हारे हादी श्यामा जी को जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान देकर भेजूंगा। उनके वचन सुनकर तुम्हें दुःख लगेगा, परन्तु फिर भी होश में नहीं आओगी ।

Nijanand App

हम देखेंगे हक इस्क, और पातसाही हक ।

सो ए आपन मिल देखसी, ऐसा सुख हक का मुतलक ।।

मारफत प्र० १ चौ० ६६

हादी मीठे सुकन हक के, कहेगा तुमें रोए रोए।

तुम भी सुन सुन रोएसी, पर होस में न आवे कोए ।।

खिलवत प्र० ११ चौ० २७

फिर आखिर में मैं अर्श की निज बुद्धि का ज्ञान लेकर आंऊगा और सब प्रमाण भी पहले से ही वहां के धर्म–ग्रन्थों में लिखवा दूंगा। उन्हें वहां सब लोग पढ़ते होंगे, पर गुझ भेद जिनसे मेरे स्वरूप की हकीकत की पहचान होगी, वे भी नहीं खोल सकेंगे –

मैं रूह अपनी भेजोंगा, भेख लेसी तुम माफक ।

देसी अर्स की निसानियां, पर तुम चीन्ह न सको हक ।।

खिलवत प्र० ११ चौ० २६

रूहों ने कहा धनी ! ऐसे लूखे (रूखे) हम न होंगी कि आपको भी न पहचान सकें।

सौ बेर देखो अजमाए के, तो भी न भूले हम ।

जब धनी ने देखा कि इन्होंने खेल देखना ही है और उधर अक्षर ब्रह्म को भी अभी रंग महल का पूरा ज्ञान नहीं मिला और उसकी इच्छा भी अभी बाकी थी, तब हुक्म किया– अक्षर ब्रह्म!जो खेल (माया की दुनियां) पहले प्रलय में ले ली थी, उसे ज्यों का त्यों खड़ा कर दो, जिससे वहां के लोगों को खबर न लगे।

नया विष्णु भगवान बनाओ, पर उनकी आयु बारह वर्ष की हो। उस तन पर गोलोक की शक्ति बिठायेंगे, क्योंकि अभी तुम्हारी सूरताओं के जीव जो कुमारिका सखियों के अंदर थे, उनकी भी इच्छा पूरी करनी है, इसलिए समय भी सन्ध्या का ही हो। नए कृष्ण के द्वारा जिसमें हम और आप नहीं होंगे, गोलोक की शक्ति होगी, इन कुमारिका सखियों के जीवों को उन पर बैठा कर लीला दिखायेंगे। उधर इन्ही जीवों ने अव्याकृत में आने के बाद ऊपर जो महारास का प्रतिबिम्ब, जो अव्याकृत के महाकारण में हो रही है, उसको भी प्रार्थना करके मांग रखा है।

Nijanand App

तुरन्त अक्षर ब्रह्म की शक्ति से फिर से यह नया ब्रह्माण्ड ज्यों का त्यों बन गया और सन्ध्या समय बांसुरी की आवाज सुनायी पड़ी। नया विष्णु भगवान जिसके अंदर गोलोक की शक्ति थी और सखियां जिनके अंदर कुमारिकाओं के जीव थे, वे आए। उनके तन नए थे, इसलिए कोई उन्हें पहचान नहीं सका, क्योंकि कृष्ण का तन वैसा ही था। यहां यह प्रश्न उठता है कि जब एक ब्रह्माण्ड प्रलय में आ गया तो वैसा ही कैसे बना? जैसे पहले ब्रह्माण्ड में ब्रह्मा जी ने गाय, बछड़े और ग्वालों का हरण किया तो तुरन्त नए वैसे ही बन गए थे। किसी ने नहीं पहचाना। अब भी अक्षर ब्रह्म की शक्ति से वैसे ही हुक्म देते ब्रह्माण्ड खड़ा हो गया। जिसको श्री प्राणनाथ जी ने अपनी वाणी में कहा है –

सोई गोकुल जमुना त्रट, जानों सोई बृजवासी ।
रास लीला जाने खेल के, इत आए उलासी ।।

बेहद वाणी चौ० ४४

अर्थात् इस ब्रह्माण्ड में जब रास हुई, तब उस रात का भी किसी को पता नहीं चला, क्योंकि गोलोक की कुल शक्ति लीला कर रही थी। उस रास की आवाज को सुन कर नरसैयां जो कृष्ण जी का भक्त था, हाथ में मशाल लेकर भागा। वह भी रास मंडल, जो इस ब्रह्माण्ड में गोलोक की प्रतिबिम्ब लीला हुई, नहीं जा सका, बाहिर ही खड़ा रह कर सुख लिया, क्योंकि उसके आड़े चार दरवाज़े आए –

नरसैयां इन पेंडे खड़ा, लीला बेहद गाए।
बल करे अति निसंक, मिने पैठयो न जाए।।

बेहद वाणी चौ० ५५

नरसैयां दौड़या रस को, वानी करे रे पुकार।
रस जाए हुआ अंदर, आड़े दरवाजे चार।।

बेहद वाणी चौ० ५७

चार दरवाजे ये हैं – उसका शरीर स्थूल, अंदर सूक्ष्म जीव, कारण यह संसार और महाकारण गोलोक की शक्ति । इसको वह पार नहीं कर सका, तब रास मंडल के बाहर जो आवाज आ रही थी, उसके रस में मग्न हो गया । मशाल के जलते जलते उसका हाथ भी जल गया, परन्तु वह रास के सुख में इतना मग्न हो गया कि नरसैंया को हाथ जलने का पता ही नहीं चला। उस

Nijanand App

नरसैयां का मग्न होना ही बेहद का मान है बाकी उसने कोई ग्रन्थ नहीं लिखा है। अब संसार के ज्ञानी जो गोलोक के रस को जानता ही नहीं वे अपनी अटकल से नरसैयां जो उस समय का जिसको आज लगभग पांच हजार वर्ष हो चुके हैं, प्रसंग वाणी में आया है, को छोड़ कर नरसी मेहता जो जूनागढ़ में संवत् १७७४ में जन्मा और जिसने द्वारकाधीश बैकुण्ठ पति विष्णु की लीला को गाया, जिसे आज केवल तीन सौ वर्ष हुए हैं। अब इलमियों के अहंकार तो यहीं नष्ट हो रहे हैं, जब कि उनको पंता है कि जागृत–बुद्धि के ज्ञान के बिना पराशक्ति का भेद आदि नारायण जो सृष्टि का मालिक है, वह नहीं खोल सका और नेति नेति कह दिया तो यह अपने आपको विचार कर देखें कि ज्ञान गुमराह करने के लिए नहीं होता, सीधा रास्ता दिखाने के लिए होता है और फिर नरसैयां का तो हाथ भी जला था, इस नरसी मेहता का हाथ कहां जला? और पांच हजार वर्ष पहले हमारे देश में हिन्दी भाषा नहीं थी, देवनागरी लिपि और संस्कृत भाषा थी, जब कि नरसी मेहता की कुल किताबें हिन्दुस्तानी भाषा में हैं। सतगुरू श्री देवचन्द्र जी भी नरसैयां, कबीर, जाटी के प्रमाण देकर रास का भेद बताते थे। श्री देवचन्द्र जी महाराज को आज चार सौ वर्ष हुए हैं, लेकिन नरसी मेहता तो बाद में जन्मे।

अब उस रात की लीला के बाद जब सवेरा हुआ, तो सबने समझा कि हम वही हैं।

जाने सोई ब्रह्मांड, जो खेलत सदाए।

ए ब्रह्मांड जो उपज्या, ऐसी रे अदाए।।

बेहद वाणी चौ० ४५

तो क्या श्री देवचन्द्र जी एक व्यक्ति के जन्म से पहले उसकी लीला गाते थे? सोचिए और हो सके तो समझिए।

इस प्रतिबिम्ब की लीला की रास रात्रि के बाद सात दिन वही पहले वाली गोकुल लीला जो कुमारिकाओं ने मांगी थी। वह यमुना तट पर जाते थे और लीला दिखाते थे। फिर अक्रूर जी के आने पर कृष्ण जी अपनी राधिका और गोपियों जिनसे एक पल भी जुदा नहीं हो सकते थे, उनको कैसे छोड़ कर मथुरा आए कंस के यज्ञ में गए और लौट कर गोकुल वापिस नहीं आए, जबकि कह कर गए थे कि चार दिन के बाद वापिस आ जाऊंगा, क्योंकि नाम तो तन का कृष्ण

Nijanand App

ही था, परन्तु अन्दर ना तो अक्षरातीत की शक्ति थी और न ही अक्षर की आत्मा थी, केवल गोलोक की शक्ति आई थी। इसलिए न तो वह मूल सम्बंध था और न ही प्रेम। इसलिए छोड़ कर मथुरा चले गए। वहां कंस को मार कर उग्रसेन जो श्री कृष्ण जी के भक्त थे और कंस के पिता थे, उन्हें राज तिलक दे कर राजा बनाया। फिर वसुदेव और देवकी को जब कारागृह से छुडाया तो उनकी प्रार्थना पर कि हे प्रभु! आपने जन्म से पहले हमारे घर पुत्र रूप में आने का वचन दिया था, उसे निभाओ। तब उसे निभाने के लिए यमुना जी में स्नान किया। अपना मोर मुकुट और पीताम्बर उतार कर नन्द जी की झोली में डाला और कहा कि माता यशोदा, राधिका और गोपियों को मेरे आने का आश्वासन दे देना–

टीका दिया उग्रसेन को, भए दिन चार।

छोड़ वसुदेव भेख उतारिया, या दिन थे अवतार।।

बेहद वाणी चौ० ५३

इस प्रकार सात दिन गोकुल और चार दिन मथुरा की लीला करने वाली गोलोक की शक्ति थी, फिर विष्णु के अवतार खाली रह गए। कोई शक्ति अन्दर नहीं थी ।

यदि होती, तब जैसे कंस मरा तो जरासिन्ध नाम का राक्षस जो मगध का राजा था, और पाटलिपुत्र में राज कर रहा था, सुन कर आया क्योंकि कंस की पत्नी उस की बेटी थी। अपनी लड़की का विधवा होना सुन कर अपनी पूरी शक्ति और सेना के साथ मथुरा पर आक्रमण किया। जिसका सामना कृष्ण केवल विष्णु का तन होने के कारण नहीं कर सके, तब विष्णु भगवान को चिन्ता हुई। चिन्ता से अपने असल स्वरूप का ध्यान किया और तब चारों शक्तियां– शंख, गदा, चक्र और पद्म बैकुण्ठ से मंगा कर धारण किया। उस दिन सोलह कला अवतार हो कर जरासिन्ध से युद्ध किया और द्वारिकाधीश बने ।

जुध किया जरासिंध सों, रथ आयुध आए खिनमांहें।

ममैवांशो जीव लोके जीव भूतः सनातनः ।

मनः षष्ठानीन्द्रियाणि प्रकृति स्थानि कर्षति ।।

गीता १५/७

Nijanand App

तब कृष्ण विष्णुमय भए, बैकुंठ में विष्णु तब नाहें।।

कलश हि० – प्र० १८ चौ० २१

इससे स्पष्ट हो गया कि पहली शक्ति अक्षरातीत ने ग्यारह वर्ष और बावन दिन लीला की, फिर रास में गए। दूसरी शक्ति ने इस नए ब्रह्माण्ड में ग्यारह दिन लीला की, फिर विष्णु भगवान रूक्मिणी हरण कर द्वारिकाधीश बने और अन्त में हस्तिनापुर आ कर महाभारत का युद्ध करवाया और गीता का उपदेश देते हुए अर्जुन को स्पष्ट कहा कि मैं हजारों बार जन्मता हूं और मरता हूं। मेरे अन्दर आत्मा नहीं है। मेरे अन्दर भी एक जीव है, उसका अंश प्रत्येक प्राणी में है।

श्लोक गीता १५/७

और फिर जब अर्जुन ने देखा कि युद्ध से कुछ नहीं मिलना। अपने ही गुरूओं और वंश का नाश कर के राज्य ही तो मिलेगा, फिर ऐसे राज्य का क्या करूंगा? अर्जुन ने युद्ध करने से इन्कार कर दिया । तब उसे अपना विराट् स्वरूप दिखाया कि मैं ही कण–२ में हूं, और दुनियां को जन्माता और मारता भी मैं ही हूं, तब अर्जुन ने मांगा कि मुझे जन्म और मरण के बन्धन से छुड़ाओ तो स्पष्ट कहा मैं झूठे मिथ्या जगत के सामान दे सकता हूं। क्षर पुरूष हूं, जो मुझे बनाता है और दुनियां को बनाने की शक्ति देता है, वह अखण्ड है। वह अक्षर ब्रह्म है। तीसरा वह है कि, जो उत्तम पुरूष अक्षरातीत है। वह ही केवल भव से पार करने की शक्ति रखता है ।

अब इसके अनुसार सिद्ध हो गया कि एक शक्ति उस अक्षरातीत पारब्रह्म की आई, जो श्री कृष्ण के तन में ग्यारह वर्ष बावन दिन लीला कर रास में गई। वहॉ रास लीला कर दोनों लीलाओं तथा श्री कृष्ण नाम को अखण्ड कर अपने परमधाम गए ।

या विध लीला दोऊ करी, सिधारे वतन।

ए ब्रह्मांड जो तीसरा, ले आए आपन ।।

बेहद वाणी चौ० १२३

दूसरी लीला गोलोक की शक्ति ने ग्यारह दिन की और वापिस अखण्ड गोलोक में चली गई । बाद में यह तीसरी लीला विष्णु भगवान ने की । अपनी यह हकीकत अर्जुन को बताई और तीनों पुरुषों का भेद गीता में अध्याय १५ श्लोक १६–१७ में कहा कि उत्तम पुरूष केवल परमात्मा है और वही भवसागर

Nijanand App

से पार कर सकता है ।

अर्जुन ने समझा, अब युद्ध कर रहा हूं। बाद में पारबह्म उत्तम पुरूष का ज्ञान ले कर भव से पार हो जाऊंगा। बाद में युद्ध जीतने के बाद फिर श्री कृष्ण जी से बोला कि अब मुझे वही ज्ञान जो आपने मुझे युद्ध के समय सुनाया था, समझाओ! तब श्री कृष्ण जी स्पष्ट कहते हैं –

अर्जुन! उस समय मैंने तुम्हें अत्यन्त गोपनीय ज्ञान सुनाया था और सनातन पुरूषोत्तम तत्व के धर्म का परिचय दिया था किन्तु तुमने जो अपनी नासमझी के कारण उस उपदेश को याद नहीं रखा, यह मुझे बहुत अप्रिय है। उन बातों का अब पूरा पूरा स्मरण होना सम्भव नहीं है। हे अर्जुन! निश्चय ही तुम बड़े श्रद्धाहीन हो। तुम्हारी बुद्धि बहुत ही मन्द (कम) है । अब मैं उस उपदेश को ज्यों का त्यों नहीं कह सकता हूँ ।

वह धर्म (कहा हुआ ज्ञान) ब्रह्म पद की प्राप्ति कराने के लिये पर्याप्त था। वह सारा का सारा ज्ञान उसी रूप में फिर दुहरा देना अब मेरे वश की बात भी नहीं है। उस समय योग युक्त होकर मैंने परमात्म तत्व का वर्णन किया था।

महाभारत खण्ड ६ अश्वमेध पर्व (अनुगीता पर्व)
अध्याय १६ श्लोक ६–१३

अब स्पष्ट हो गया कि गीता का ज्ञान देने वाले कृष्ण पूर्ण ब्रह्म नहीं है। कृष्ण नाम विष्णु का है । इस से परे तो नाम, तत्व और गुण हैं ही नहीं। पूर्ण ब्रह्म ने केवल लीला करने के लिए जो तन धारण किया, उस तन का नाम कृष्ण था जो विष्णु भगवान का तन था।

ऊपर दिए हुए ज्ञान के अनुसार यह तो सिद्ध हुआ कि अक्षरातीत और गोलोक की शक्ति नाम तत्व, गुण और खट प्रमाणों से रहित है जो सभी ग्रन्थों

द्वाविमौ पुरूषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च।
क्षरः सर्वाणि भूतानि कुटस्थोऽक्षर उच्यते।।
उत्तमः पुरूषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः।
यो लोकत्रयमाविश्य बिभर्त्यव्यय ईश्वरः।।

गीता १५/१६,१७

श्रावितस्त्वं मया गुह्यं ज्ञापितश्च सनातनम् ।

Nyanand App

में लिखा है तो क्या गीता को कहने वाले कृष्ण या योगेश्वर कृष्ण या स्वाध्याय वाले, जिस कृष्ण को मानते है, क्या वह परमात्मा नहीं हैं ?

कहने का भाव यह नहीं है कि गीता कहने वाले श्री कृष्ण परमात्मा नहीं है, वह परमात्मा तो है, परन्तु केवल चौदह लोकों के, जो महाप्रलय में नष्ट हो जाते हैं। जिसमें पांच तत्व, तीन गुण और बैकुण्ठ के कृष्ण भी आ जाते हैं तो फिर उनको परमात्मा कैसे माना जा सकता है? जो हमें भवसागर से पार नहीं कर सकते। हकीकत में ग्यारह वर्ष बावन दिन की लीला करने वाले श्री कृष्ण में अक्षरातीत की शक्ति थी, जिनका दर्शन करने स्वयं महादेव, ब्रह्मा एवं इन्द्र भी आए। दूसरे श्री कृष्ण गोलोक के हैं, जिन्होंने ग्यारह दिन तक लीला की। तीसरे विष्णु स्वरूप कृष्ण है जिन्होंने गीता का ज्ञान दिया एवं शंकर जी को प्रसन्न करके पुत्र प्राप्ति के लिए १२ वर्षो तक हिमालय पर्वत पर तपस्या की। यह प्रसंग महाभारत (अनुशासन पर्व अ० १३६) और हरिवंश पुराण (अ० ८४/१६,१७) में लिखा है। इस प्रकार तीनों स्वरूपों की लीलाओं में बहुत अन्तर है। यही कृष्ण की त्रिधा लीला है।

यह तीसरी तरंग सम्पूर्ण हुई ।

धर्म स्वरूपिणं पार्थ सर्वलोकांश्च शाश्वतान ।।

अबुद्धया नाग्रहीर्यस्त्वं तन्मे सुमहदप्रियम् ।

न च साद्य पुनर्भूयः स्मृतिर्मे सम्भविष्यति ।।

नूनमश्रद्धधानोऽसि दुर्मेधा ह्यसि पाण्डव ।

न च शक्यं पुनर्वक्तुमशेषेण धनंजय ।।

स हि धर्मः सुपर्याप्तो ब्रह्मणः पदवेदने ।

न शक्यं तन्मया भूयस्तथा वक्तुमशेषतः ।।

परं हि ब्रह्म कथितं योगयुक्तेन तन्मया।

महाभारत अवश्मेध पर्व (अनुगीता पर्व)
अ० १६ श्लोक ६–१३

Nijanand App

चौथी तरंग

श्री कृष्ण की हकीकत

अब तक अनेकों ऋषि, मुनि और ज्ञानी हो चुके हैं, जिन्होंने श्री कृष्ण जी की महिमा में अनेकों ग्रन्थों की रचना की है। उन ग्रन्थों को मानने वालों में कोई योगेश्वर कृष्ण को पूर्ण ब्रह्म कहता है, तो कोई गोलोक के कृष्ण को, किन्तु कोई भी तारतम ज्ञान के बिना उस पूर्ण ब्रह्म के धाम, स्वरूप और लीला को नहीं जान सकता। सपने की बुद्धि निराकार से आगे नहीं जा सकती। श्री कृष्ण जी के स्वरूप की हकीकत के बारे में आइये और विचार करें।

अक्षर बह्म की परमधाम में होने वाली इश्क की लीला देखने की इच्छा पूरी करने के लिए महारास खेली गई । यह लीला केवल ब्रह्म के अखंड वृन्दावन में श्री कृष्ण (जिन में अक्षर की आत्मा और श्री राजजी महाराज का जोश था) और गोपियों (जिनमें परमधाम की आत्माएं थी) ने खेली। इन रास की रामतों के बाद श्री कृष्ण जी और सखियों ने यमुना जी में झीलना किया और उसके बाद वन फल आरोगाया। तब बातचीत के बीच सखियों ने कहा कि हे धनी! आप हमें वहां ले चलिए, जहां एक पल के लिए भी हम आपसे जुदा न हो सकें। इस रास में आपकी जुदायगी हमसे सहन नहीं हो पाती है।

हवे वाला हूं एटलूं मांगूं, खिण एक अलगां न थैए।

जिहां अमने विरह नहीं, चालो ते घर जैए।।

रास प्र० ४७, चौ० ४३

रास के बाद सखियों की इच्छा पूरी करने के लिए सब को लेकर परमधाम गए। सखियों ने रास में जो योगमाया के तन धारण किए थे, वे तन परमधाम नहीं जा सकते। उन तनों में विराजमान सखियों की आत्माएं परमधाम चली गईं। इस समय आज भी योगमाया में सखियों के अखंड तन ही लीला कर रहे हैं। माया का खेल देखने की इच्छा ब्रज और रास मे अच्छी तरह पूरी नहीं हो सकी और न ही वे अपने धनी को पहचान सकी थीं, इसलिए आत्माओं

Nijanand App

को दूसरी बार इस कालमाया के ब्रह्माण्ड में आना पड़ा।

कछु इन विध कियो रास, खेल फिरे घर।

खेल देखन के कारने, आइयां उमेदा कर।।

प्र० हि० प्र० १, चौ० १

योगमाया में रास करने के लिए श्यामा जी ने जो तन धारण किया था, उसका नाम राधा है और श्री अक्षरातीत का जोश अक्षर ब्रह्म की आत्मा के साथ जिस तन में विराजमान था, उसका नाम श्री कृष्ण है, यद्यपि इस समय भी अखंड महारास की लीला हो रही है, किन्तु अब उन तनों में न तो श्यामा जी की आत्मा है, न धाम धनी का जोश और न परमधाम की आत्माएं, बल्कि ये सभी इस जागनी के ब्रह्माण्ड में आए हुए हैं। योगमाया में उनके अखण्ड तन अभी भी लीला कर रहे हैं।

तब तीसरो रच के खेल, स्यामाजी आए इत।

तब हम भी आइयां तित, स्यामाजी खेले जित।।

प्र० हि० प्र० १, चौ० ३

पुराण संहिता एवं माहेश्वर तन्त्र में भी यह बात कही गई है कि रास खेलने के बाद सभी आत्माएं श्री राजजी के साथ परमधाम गईं और खेल देखने की इच्छा पूरी न होने के कारण पुनः इस जागनी के ब्रह्माण्ड (कालमाया के अन्दर) में आई हुई हैं।

पुराण संहिता के अध्याय इकतीस श्लोक २५, २७, २८ और ३१ में कहा गया है कि–सखियों के अंदर दुःख की लीला देखने के लिए जो अनहोनी (पहले कभी न होने वाली) इच्छा थी, वह प्रीतम के साथ में रहने के कारण पूरी न हो सकी। जिस प्रकार जन्मजात संस्कार पूर्ण रूप से नहीं छूट पाते हैं, उसी प्रकार सभी सखियां माया के खेल को देखने की इच्छा करती रहीं, वह इच्छा पूरी न होने से निजधाम (परमधाम) में आत्माएं जागृत नहीं हो सकी, इसलिए कालमाया का ब्रह्माण्ड पहले जैसा ही बनाया। कुछ समय तक परमधाम में रहने के बाद फरामोशी में खेल देखने की इच्छा के कारण वे प्रियाएं इस ब्रह्माण्ड में फिर से अवतरित हुईं।

माहेश्वर तन्त्र अध्याय २२ श्लोक २१, २३, २४ में कहा गया है कि उस इच्छा

Nijanand App

पुरूषोत्तम ने रास लीला की। इसके बाद ब्रह्मा से लेकर स्थावर तक यह सारा जगत पुनः प्रगट हुआ। इच्छा पूरी न होने के कारण वे भी आत्माएं (सखियां) समय, देश और अपनी रूचि के अनुसार इस ब्रह्माण्ड में विचरण कर रही हैं अर्थात् वे सभी आत्माएं फिर से इस नए ब्रह्माण्ड में आई हुई हैं।

पीछे जोगमाया को भयो पतन, तब नींद रही अछर सैंयन।

प्रकाश हि० प्रगट वाणी चौ० ४८

श्री मुख वाणी के इस कथन के अनुसार केवल बह्म में होने वाली लीला अब अक्षर ब्रह्म के चित्त सबलिक के अन्दर अखण्ड रूप से हो रही है। सबलिक के अन्दर ब्रज की लीला भी अखण्ड है। इन दोनों लीलाओं का प्रतिबिम्ब अव्याकृत में है, इस प्रकार योगमाया (अव्याकृत, सबलिक) के अन्दर राधा कृष्ण के चार रूप सिद्ध होते हैं। माहेश्वर तन्त्र में श्री निजानन्द सम्प्रदायकी पद्धति लिखी है, जिसके अनुसार अक्षर से भी परे दिव्य ब्रह्मपुर ही सखियों का मूल घर है।

माहेश्वर तन्त्र २८/५०

तत्कामपूर्तये साक्षात् श्रीकृष्णः पुरूषोत्तमः।

रासलीलां प्रकुर्वाणो रमयामास ताः प्रियाः।।

पुनर्जातं च ततः सर्व ब्रह्मादि स्थावरान्तकं।

मनोरथस्य चापूर्त्या वासना कार्य मध्यगाः।।

विचरन्ति यथा कालं यथा देशं यथा रूचि।

मा० त० २२/२१, २३, २४

दुःखलीलावलोकाय योऽभूत्पूर्वं मनोरथः।

प्रियस्य साहचर्येण न सिद्धोऽभूत्स्वभावतः।।

सर्वथा न विमुच्यन्ते जन्मभाजो भवन्ति हि।

तथा कृष्ण प्रियाः सर्वा पूर्ववासनयान्विताः

तदापूर्त्या निजे धाम्नि न प्रबुद्धा मुनीश्वरा।।

ततः पादुरभूत्कालमाया पूर्ववदेव सा।।

तत्रावतीर्णाः कृष्णस्य प्रियास्ता वासनाबलात्।

Nijanand App

किञ्चित् काल निजपद सुषुप्ताविव संस्थिताः।।

पु० स० ३१/२५, २६, २८, ३१

माहेश्वर तन्त्र के अध्याय ३३ श्लोक २१, २२ में कहा गया है कि इस जगत् रूपी प्रपंच के कारण प्रकृति से परे और अक्षर ब्रह्म से भी परे पूर्ण ब्रह्म अक्षरातीत की तुम आनन्द स्वरूप वाली और आनन्दमय धाम में स्थित प्रिया हो। पंच भौतिक शरीर से सम्बन्ध रखने वाली इस माया को तुम छोड़ दो।

हमारा मूल घर परमधाम है, जहां हम सभी मूल मिलावे में बैठ कर अपनी सुरता द्वारा इस खेल को देख रहीं है, नित्य वृन्दावन में न तो कोई मूल मिलावा है और न वहां हमारी परआतम के तन ही हैं।

ए मूल मिलावा अपना, नजर दीजे इत।

पलक न पीछे फेरिए, ज्यों इस्क अंग उपजत।।

सागर – प्र० ७ चौ० ४०

परमधाम की आत्माएं हद–बेहद और अक्षर धाम से भी परे अपने निजधाम के बिना एक पल भी नहीं रह सकती हैं।

मोमिन अर्स बका बिना, रेहे ना सके एक पल।

जो हौज कौसर की मछली, तिन हैयाती वह जल।।

सिनगार प्र० २३/ चौ० ५४

ब्रह्मसृष्टियां अपने अखंड परमधाम के बिना एक पल भी नहीं रह सकती हैं। ये परमधाम की हौज कौसर में विचारण करने वाली वे मछलियां हैं, जो परमधाम के अखण्ड इश्क रूपी जल के बिना नहीं रह सकती हैं। परमधाम की

दिव्य ब्रह्मपुर धाम परात्परमुदाहृतम् ।।

मा० त० २८/५०

प्रपंच बीज भूतायाः प्रकृतेः परतः प्रभोः।

अक्षरादप्यतीतस्य पूर्णस्य परमात्मनः।।

प्रियासि त्वं परानन्दा परानन्दपदस्थिता।

देहानुसन्धान परां मायां जाहि वराङ्गने ।।

मा० त० ३३/२१,२२

Nijanand App

आत्माएं तो – उत्तम पुरूष बिन और को, देवी देव न ध्याय।

बी० सा० ३७/६४

तथा हरिवंश पुराण के ''प्रधान पुरूषाश्रयाः'' भविष्य पर्व अध्याय ४ श्लोक २१ के अनुसार– वे एक अक्षरातीत पारबह्म के अलावा अन्य किसी को भी अपना इष्ट नहीं मानती हैं। नित्य वृन्दावन में विराजमान राधा कृष्ण में इस समय श्यामाजी की आत्मा तथा अक्षरातीत पारबह्म का जोश न होने के कारण ब्रह्मसृष्टियों का कृष्ण राधा से अब कोई सम्बन्ध ही नही है।

हम रूहें हमेसा बका मिने, रूह अल्ला के तन।

असल तन हमारे अर्स में, और कछू न जाने हक बिन।।

सनंध प्र० ३६ चौ० ५१

हम आत्माएं परमधाम में श्री श्यामा जी के अंग हैं। हमारे मूल तन तो परमधाम में ही हैं और हम सब एक अक्षरातीत श्री राज जी महाराज के बिना अन्य किसी को भी अपने प्रीतम के रूप में नहीं मानती हैं।

परमधाम की आई हुई आत्माएं, जिन जीवों पर बैठी हैं, उन आत्माओं के प्रियतम श्री प्राणनाथ जी स्वयं अपनी जागृत बुद्धि के ज्ञान से संशय मिटा कर उन्हें अपनी और परमधाम की पहचान करा देते हैं और फिर वे जीव ऐसी अद्भूत अखंड कुलजम स्वरूप की वाणी को मथन करने के बाद सब कर्मकाण्डों से मुक्त होकर महाप्रलय में लय हो जाने वाले देवी देवताओं को छोड़ कर सब ग्रन्थों, कुरान और बाइबिल के प्रमाणों से निस्संदेह होकर ऐसे प्राणनाथ जी को ही अपना धाम का धनी पूर्ण ब्रह्म मान कर निजानन्द सम्प्रदाय को धारण करते हैं और उन्हें खुलासा और मारफत सागर ग्रन्थ से जब पता लग गया कि हमारे परमधाम जाने के बाद हमारे जीव जिन पर परमधाम की आत्माएं बैठी हैं, वे पहली बहिश्त में अखंड होंगे और उनको परमधाम जैसा ही सुख मिलेगा। दूसरी बहिश्त में ईश्वरी सृष्टि को मुक्ति मिलेगी। तीसरी बहिश्त में मुहम्मद साहब की उम्मत होगी। चौथी बहिश्त में रास अखंड हो चुकी है, जहां किशोर स्वरूप में राधे और श्री कृष्ण हमारे पहले जीवों के साथ लीला कर रहे हैं। पांचवी बहिश्त जहां ब्रज लीला, गोकुल और मथुरा है, जहां गोलोकी श्री कृष्ण और राधे बाल स्वरूप में लीला कर रहे हैं। छठी बहिश्त में कुल देवी देवता जो इस ब्रह्माण्ड के हैं, वे अखंड हैं। सातवीं और आठवीं में शेष दुनियां के जीव अखंड होंगे।

Nijanand App

यह बेवरा खुलासा ग्रन्थ प्रकरण ५ चौ० १२–१५ तक में है।

आगे हुई न होसी कबहूं, हमें धनिएं ऐसी सोभा दई।

सब पूजें प्रतिबिंब हमारे, सो भी अखंड में ऐसी भई।।

कि० प्र० ८१ चौ० ३

धाम धनी ने हमें ऐसी बड़ी शोभा दी है, जो आज तक न तो किसी को मिली है और न भविष्य में किसी को मिलेगी। जिन जीवों पर बैठ कर हमने इस खेल को देखा है, उन जीवों के तनों को जो पहली बहिश्त में अखंड होने वाले हैं, अन्य सातों बहिश्तों वाले पूजा करेंगे।

तिन भिस्त हाल चार का बेवरा, एक मलकूती भिस्त।

दो भिस्त अव्वल लैल में, चौथी महम्मद आए जित।।

खु० प्र० ५ चौ० १२

जो चार बहिश्तें कायम हो गई हैं उनमें एक देवी देवताओं की बहिश्त है जो अव्याकृत में ऊपर से छठे नम्बर की है। रास और ब्रज की दो बहिश्तें, जो लैल की रात्रि की पहली दो लीलाओं की हैं, सबलिक ब्रह्म में चार और पांच नं० पर है। चौथी बहिश्त मुहम्मदी ऊपर से तीन न० पर सबलिक ब्रह्म में है। (यह तीन बहिश्तें ३, ४, ५, सबलिक में हैं)

भिस्त अव्वल रूहों अक्स, ए जो होसी भिस्त नई।

भिस्त होसी दूजी फरिस्तों, जो गिरो जबरूत से कही।।

खु० प्र० ५ चौ० १४

सब से ऊपर सत्स्वरूप ब्रह्म में ब्रह्म सृष्टियों के जीवों को अखंड किया जायेगा, जो पहले न० की बहिश्त होगी। न० २ पर जो नई बहिश्त बनेगी, वह ईश्वरी सृष्टि की होगी, जो अक्षर धाम से आई है।

पैगंमरों भिस्त तीसरी, जिनों दिए हक पैगाम।

चौथी भिस्त जो होएसी, पावे खलक जो आम।।

खु० प्र० ५, चौ० १५

पैगम्बरों, जिन्होंने पारब्रह्म का पैगाम दिया है, की बहिश्त तीसरी होगी और अव्याकृत में ७ नं० पर होगी। चौथी बहिश्त सारी दुनियां के जीवों की होगी जो

Nijanand App

आठवें नं० पर अव्याकृत में होगी। अब सुन्दर साथ जी! यदि सच्चे दिल से सोचा जाए, तो आप ही बताइए कि हमारी आत्मा के परआतम में उठने के बाद हम सब के जीव तथा देवापि और मरू राजा के जीव जो सतगुरू श्री देवचन्द्र जी और श्री इन्द्रावती के अन्दर थे, पहली बहिश्त में श्री राज जी, श्यामा जी और सखियों का रूप धारण करके बैठेंगे एवं परमधाम की लीला की वहां नकल होगी।

मेरे गुन अंग सब खड़े होसी, अरचासी आकार।

बुध वासना जगावसी, तिन याद होसी संसार।।

कलस हि० प्र० २३ चौ० १०४

और सातों बहिश्तों वाले जिसमें कुल देवी देवता और बाल किशोर रूप में लीला करने वाले चारों स्वरूप(दोनों कृष्ण और दोनों राधा) तथा कुल पैगम्बर जन भी हमारे जीवों को श्री प्राणनाथ जी के साथ अपना खुदा (परमात्मा) मान कर पूजा करेंगे। तो बताइए! निजानन्द सम्प्रदाय का एक सच्चा अनुयायी जिन की आत्मा परमधाम में बैठ कर यह नजारा देखेगी, वह अब राधे कृष्ण या अन्य देवी देवताओं की पूजा कैसे कर सकता है? अब तो श्री कृष्ण और राधे की पूजा करने का सवाल ही पैदा नहीं होता और यदि ऊपर दी हुई चौपाइयों को पढ़ कर किसी को दुःख हुआ हो, तो श्री प्राणनाथ जी ने कहा है –

माथे लेसे तेने कहूं छू, बीजा मा करजो दुख,

तमे तमारी माया मांहे, सेहेजे भोगवजो सुख।।

कृपया बाकी संशय, श्री निजानन्द सम्प्रदाय की महिमा पढ़ कर दूर कर लें। जो इस किताब में ही लिखी हैं।

ब्रज में ग्यारह वर्ष और बावन दिन तक अक्षरातीत पारब्रह्म के जोश ने अक्षर ब्रह्म की आत्मा के साथ श्री कृष्ण के रूप में लीला की। इस कालमाया के ब्रह्माण्ड में यह पहला अवसर था जब स्वयं अक्षरातीत इस नश्वर जगत में अपने जोश के साथ आए। इस समय योगमाया (सबलिक) में ब्रज और रास की लीला अभी भी हो रही है और अनन्त काल तक होती रहेगी,

---

कृष्णेति मंगल नाम यस्य वाचि पवर्तते।

भस्मीभवन्ति तस्याशु महापातक कोटयः।।

पाण्डवगीता श्लोक ५४

Nijanand App

किन्तु उसमें अक्षरातीत का जोश न होने के कारण श्री कृष्ण जी का वह रूप अक्षरातीत पारब्रह्म नहीं कहला सकता, लेकिन योगमाया का वह अखण्ड तत्व है और वह नाम इस भवसागर से जीवों को पार करने वाला है। पाण्डव गीता में कहा गया है कि श्री कृष्ण का मंगलकारी नाम करोड़ों महापापों को भी दूर करने वाला है।

महाप्रलय में कालमाया की प्रत्येक वस्तु का नाम और रुप मिट जाता है, किन्तु योगमाया में वह श्री कृष्ण तत्व अखण्ड है। उस तन में कभी अक्षरातीत पारब्रह्म ने लीला की थी, इसलिए उनके प्रति प्रेम इस दुःखमय संसार में अमृत की तरह शान्ति देता है और जन्म–मरण से छुड़ा देता है–

वैष्णवो मोह थकी निध न्यारी दीधी, आपणने अविनास

नाम तत्व कहयूं श्रीकृष्ण जी, जे रमे अखंड लीला रास।।

किरंतन – प्र० ६४, चौ० ७

हे वैष्णव जनों। हमारे पास जो अखण्ड न्यामत है, वह मोह तत्व से पूर्णतया अलग हैं। इस अखण्ड तत्व का नाम श्री कृष्ण हैं, जो निरन्तर अभी भी रास लीला खेल रहे हैं। वल्लभाचार्य जी के मत में भी अव्याकृत के अंदर होने वाली प्रतिबिम्ब की अखंड ब्रज और रास की लीला का ही ज्ञान है। सबलिक के अंदर होने वाली वास्तविक अखंड ब्रज और रास की लीला का स्पष्ट ज्ञान संसार के किसी भी पंथ में नहीं है। तारतम ज्ञान के द्वारा ही श्री कृष्ण की लीला सम्बन्धी सारे रहस्य मालूम होते हैं। तारतम ज्ञान के अभाव में दुनियां के ज्ञानियों, भक्तों और श्री कृष्ण प्रेमियों ने अखंड में जाने के लिए अनेक प्रयास किए, लेकिन उन्हें सही मार्ग नहीं मिल सका। मीराबाई, चैतन्य महाप्रभु आदि ने श्री कृष्ण प्रेम में गोपी भाव का सहारा तो लिया, किन्तु उन्होंने नश्वर जगत में होने वाली लीलाओं से ही स्वयं को जोड़े रखा, जिसके कारण वे योगमाया के अखंड ब्रज और रास में होने वाली लीलाओं की लज्जत नहीं ले सके। मीराबाई जी कहती हैं–

बसो मेरे नैनन में नन्दलाल।

मोहिनी मूरति सांवरि सूरति, नैना बड़े विसाल।।

नन्द लाल का अर्थ है नन्द जी का पुत्र। पूर्ण ब्रह्म का कोई भी पिता नहीं

Nijanand App

हो सकता और न वह किसी के पुत्र हैं, जैसा कि कबीर जी ने कहा है–

जो पूत किसी का होत है, सो तो साहिब नाहिं।

जो साहिब सब का होत है, सो पूत किसी का नाहिं।।

राणा ने मीराबाई को मारने के लिए जब तलवार उठाई, तो उस समय विष्णु के स्वरुप श्री कृष्ण ने उनकी रक्षा की। तारतम ज्ञान से रहित होने के कारण मीराबाई की गहरी भक्ति भी अक्षरातीत पारब्रह्म की पहचान नहीं करा सकी। सूरदास जी श्री वल्लभाचार्य जी के शिष्य थे, अतः उन्हें अव्याकृत में होने वाली ब्रज और रास की प्रतिबिम्ब लीला का ज्ञान तो था, किन्तु वे भी इसके आगे अक्षरातीत पारब्रह्म की पहचान नहीं कर सके।

रसखान, देवी ताज, रहीम और वाहिद आदि मुसलमान भी श्री कृष्ण जी के बड़े भक्त हो चुके हैं। रसखान तो पागलों की तरह वृन्दावन की गलियों में श्री कृष्ण के विरह में घूमा करते थे। वह कहते हैं–

मानुष हों तो वही रसखान, बसों ब्रज गोकुल गाँव की ग्वारिन।

जो खग हों तो बसेरों करों, मिलि कालिन्दी कुल कदम्ब की डारन।।

पाहन हों तो वही गिरि को, जो धरयो कर क्षत्र पुरन्दर धारन।

देवी ताज श्री कृष्ण जी के प्रति कहती है–

देव पूजा ठानी और निवाज हूं भुलानी तजे।

कलमा कुरान सारे गुनन गहूँगी मैं।।

सांवला सलोना सिरताज सर कुल्लेदार।

तेरे नेह दाघ में निदाघ ही दहूंगी मैं।।

नन्द के कुमार कुरबान तांडी सूरत पर।

तांडे नालं प्यारे हिन्दुवानी हो रहूंगी मैं।।

श्री कृष्ण प्रेम की गंगा में गोता लगाने वाले ये मुस्लिम जन भी इस क्षर जगत की ब्रज लीला में ही फंसे रहे और अव्याकृत से आगे अपने कदम नहीं बढ़ा सके।

कृष्णात् परं किमपि तत्वमहं न जाने।

मधुसूदन सरस्वती

Nijanand App

वेदान्त के ज्ञानियों में शिरोमणि मधुसूदन सरस्वती ने तो स्पष्ट कह दिया कि कृष्ण के परे भी कोई श्रेष्ठ तत्व है, ऐसा मैं नही मानता। वे कहते हैं–यदि योगी लोग ध्यान के अभ्यास से बस में किए हुए मन के द्वारा उस निर्गुण और निष्क्रिय परम ज्योति का साक्षात्कार करते हैं, तो करते रहें। हम तो यही चाहते हैं कि यमुना के किनारे वह जो वाणी से न कहा जा सकने वाला सांवला सलोना तेज तेज दौड़ता है वही हमारे नेत्रों में बहुत अधिक समय तक चमत्कार करता रहे।

वे वृन्दावन में लीला करने वाले श्री कृष्ण को ही सच्चिदानन्द पारब्रह्म का स्वरुप मानते हैं–

घने वन में, गोपियों के प्रेम मे बंधे हुए मानव का रुप धारण किए हुए सच्चिदानन्दघन पारब्रह्म श्री कृष्ण जी का मैं आश्रय लेता हूं।

(अद्वैत रत्न लक्षणम्)

श्री मधुसूदन सरस्वती जी ने अखंड ब्रज या अखंड रास के जिस कृष्ण की स्तुति की है, उन्हें पूर्णब्रह्म का स्वरुप कदापि नहीं कहा जा सकता है। मधुसूदन सरस्वती गोस्वामी तुलसी दास जी के समय में हुए थे। तारतम ज्ञान से रहित होने के कारण वेदान्त और भागवत के प्रकाण्ड विद्वान होते हुए भी वे हद बेहद से परे (अक्षर से परे अक्षरातीत) पारब्रह्म के स्वरुप की पहचान नहीं कर सके थे। इस वृन्दावन में (भक्ति सुधा ग्रन्थ, द्वितीय खण्ड पृष्ठ १०६ के अनुसार) उन्हें जिस श्री कृष्ण का दर्शन हुआ, वह भी अक्षरातीत पारब्रह्म के स्वरुप नहीं थे। भागवत में वर्णित ब्रह्मा, इन्द्र आदि के द्वारा श्री कृष्ण जी को पूर्ण ब्रह्म माने जाने के प्रसंगों को देखकर यदि उन्होंने श्री कृष्ण जी को पूर्ण ब्रह्म का स्वरुप माना, तो इससे यही निष्कर्ष (अभिप्राय) निकलता है कि तारतम ज्ञान से रहित होने के कारण ब्रज और रास की लीला के पश्चात् अक्षरातीत पारब्रह्म का अपनी आत्माओं के साथ परमधाम चले जाने के रहस्य जानने से वे वंचित

वृहदारण्यनिविष्टं विलुठित भामीरवारनारीभिः।

सत्यं चिदानन्दघनं ब्रह्म नराकारमालम्बे।।

।। इति / अद्वैतरत्नलक्षणम् '

अहो भाग्यमहो भाग्यं नन्दगोप ब्रजौकसाम्।

यन्मित्र परमानन्दं पूर्णं ब्रह्म सनातनम्।।

भा० १०/१४/३२

Nijanand App

रह गए।

भागवत स्कन्ध १० अध्याय १४ श्लोक ३२ में ब्रह्मा जी ने बछड़ों और गोप बालकों के हरण की लीला में मोह (अहं) भंग होने के बाद श्री कृष्ण जी की स्तुति करते हुए कहा कि–अहो! ब्रज में रहने वाले नन्द आदि गोप ग्वालों का परम सौभाग्य है, क्योंकि सनातन परम आनन्दमय पूर्णब्रह्म इनके मित्र हैं। इसलिए इसी अध्याय के चौतीसवें श्लोक में उन्होंने यह कामना की कि इस ब्रज भूमि के किसी भी वन में और विशेषकर गोकुल में किसी भी योनि में मेरा जन्म हो जाए तो यही मेरे लिए बहुत सौभाग्य की बात होगी, क्योंकि यहां जन्म हो जाने पर आपके किसी न किसी प्रेमी के चरणों की धूलि मेरे ऊपर पड़ ही जाएगी।

ब्रह्मा जी ने श्री कृष्ण जी की यह स्तुति उस समय की, जब अक्षरातीत के जोश की शक्ति अक्षर ब्रह्म की आत्मा के साथ ब्रज में लीला कर रही थी। उस समय श्री कृष्ण जी के स्वरुप को पारब्रह्म कहना उचित है, किन्तु धनी के जोश के रास से परमधाम चले जाने के पश्चात् अखंड ब्रज में या रास में विराजमान श्री कृष्ण जी को पूर्ण ब्रह्म का स्वरुप नहीं कहा जा सकता हैं। ब्रह्मा जी ने भागवत में द्वारिकावासियों या मथुरावासियों के चरणों की धूलि पाने की कभी भी इच्छा नहीं की, क्योंकि उस समय विष्णु के स्वरुप श्री कृष्ण की लीला हो रही थी। सपने की बुद्धि होने के कारण ब्रह्मा जी ब्रज के श्री कृष्ण जी की स्तुति कर के अपने लोक तो चले गए, किन्तु पारब्रह्म की शक्ति के इस नश्वर जगत में आने का वे लाभ नहीं उठा सके।

श्री कृष्ण जी के अनन्य मित्र उद्धव जी मथुरा से ले कर के यदुवंशियों के विनाश की लीला तक उनके साथ ही रहे, किन्तु उन्होंने कभी भी मथुरावासियों की चरण–धूलि नहीं चाही, बल्कि वृन्दावन में झाड़ी और लता तक की योनि में जन्म लेने की इच्छा की, जिससे कि गोपियों की चरण रज पाकर मैं धन्य हो सकूं।

भा० १०/४७/६१

उद्धव जी ने जिन गोपियों की चरण रज की इच्छा की थी, वे अखण्ड गोलोक की सखियां थी। मथुरा एवं द्वारिका में लीला करने वाले विष्णु स्वरुप श्री कृष्ण की सोलह हजार एक सौ आठ रानियों में से किसी के भी चरणों की धूल की इच्छा उद्धव जी ने कभी भी नहीं की।

Nijanand App

मथुरा में जरासिन्ध के युद्ध से लेकर प्रभाष क्षेत्र में यदुवंश के संहार तक की लीला में भागवत में जितने भी श्लोक लिखे गए हैं वे विष्णु के स्वरूप श्री कृष्ण की ही पहचान में लिखे गए हैं। अक्षरातीत पारब्रह्म या गोलोक वाले कृष्ण की पहचान के लिए नहीं।

भागवत स्कन्ध ग्यारह अध्याय ६ में ब्रह्मा, शिव, इन्द्र आदि देवतागण द्वारिका में आए और श्री कृष्ण जी से बैकुण्ठ चलने की प्रार्थना की। ब्रह्मा जी के द्वारा श्री कृष्ण की स्तुति यहां भी की गई, किन्तु भागवत स्कन्ध १० अध्याय १४ में ब्रह्मा जी के द्वारा की हुई स्तुति से यहां की स्तुति के भावों में अंतर है। यहां द्वारिका पुरी में आकर ब्रह्मा जी श्री कृष्ण जी से बैकुण्ठ चलने के लिए आग्रह करते हैं–

इसलिए हे बैकुण्ठ नाथ! यदि आप उचित समझते हैं, तो अपने धाम (बेकुण्ठ) में पधारिए ओर अपने सेवक हम लोकपालों का तथा हमारे लोकों का पालन कीजिए ।

भागवत के इस कथन से यह निश्चित है कि बैकुण्ठ में विष्णु भगवान ही जायेंगे। अक्षरातीत के जोश की शक्ति या गोलोक की शक्ति नहीं ।

भा० १०/४७/६१ / में गोपियों की चरण रज पाने के लिए ब्रज में लता झाड़ी आदि की योनि में भी जन्म पाने की चाहना करने वाले उद्धव जी यदुवंश के विनाश से पहले श्री कृष्ण जी के पास एकान्त में मिल कर आध्यात्मिक ज्ञान की चर्चा करते हैं और उन्हें महायोगी मानते हैं।

हे महायोगेश्वर ! हम तो कर्म मार्ग में ही भटक रहे हैं । आपकी धर्म चर्चा

आसामहो चरणरेणुजुषामहं स्यां

वृन्दावने किमपि गुल्मलतौषधीनाम्।

यां दुस्त्यजं स्वजनार्य पथं च हित्वा,

भेजेर्मुकुन्द पदवीं श्रुतिभिर्विमृग्याम् ।।

भा० १०/४६/६१

वयं त्विह महायोगिन भ्रमन्तः कर्मवर्त्मसु ।

त्वद्वार्तया तरिष्यामस्तावकैर्दुस्तरं तमः ।।

भा ११/६/४८

Nijanand App

से कठिनता से पार होने वाली इस तमों रूप माया से हम पार हो जायेंगें ।

भा० ११/६/४८

किसी भी धर्म ग्रन्थ में अक्षरातीत पार ब्रह्म को "महायोगी" नहीं कहा गया है, क्योंकि बड़े से बड़े योगी भी उस पारब्रह्म की खोज में लगे रहते है। उद्धव जी ने जिस कृष्ण जी के साथ धर्म चर्चा की, यदि वे पारब्रह्म होते तो उन्हें महायोगी नहीं कहा गया होता। विष्णु रूप श्री कृष्ण योगेश्वर हैं, तभी गीता में भी उन्हें स्पष्ट रूप से योगेश्वर कहा गया है।

जहां पर योगेश्वर श्री कृष्ण और धनुर्धर अर्जुन हैं, वहीं पर श्री, विजय, विभूति और अटल नीति है, ऐसा मेरा (संजय का) मत है ।

गीता १८/७८

आध्यात्मिक ज्ञान की चर्चा के प्रसंग में श्री कृष्ण जी उद्धव से कहते हैं–हे प्रिय उद्धव ! अपने चित्त की वृत्तियों को मुझ में एकाग्र कर दो और इस प्रकार अपनी सारी शक्ति से मन को वश में कर लो और फिर मुझ में ही युक्त होकर स्थित हो जाओ ।

भा० ११/२४/६११

भागवत ११/२६/४१–४४ में उद्धव जी को उपदेश देते हुए श्री कृष्ण जी कहते हैं–हे उद्धव जी! अब तुम मेरी आज्ञा से बदरीवन में चले जाओ। वह मेरा ही आश्रम है। वहां मेरे चरण कमलों के धोवन, गंगा जल के स्नान और पान के द्वारा तुम पवित्र हो जाओगे। अलकनन्दा के दर्शन से तुम्हारे सारे पाप नष्ट हो जाएंगें। वहां तुम वृक्षों की छाल पहनना, वन के कन्द, मूल, फल खाना और किसी भोग की आशा न रखकर आसक्ति से रहित हो कर स्वयं में मस्त रहना। सर्दी–गर्मी, सुख–दुःख जो कुछ भी आए उसे सम रह कर सहन करना। अपने स्वभाव को कोमल रखना। इन्द्रियों को वश में रखना, चित्त को शान्त रखना।

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।

तत्र श्री विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम् ।।

गीता १८/६८

तस्मात् सर्वात्मना तात निगृहाण मनो धिया ।

मय्यावेशितया युक्त एतावान् योगसंग्रह ।।

भा०/११/२४/६१

Nijanand App

बुद्धि को समाहित रखना और तुम स्वयं मेरे स्वरुप के ज्ञान तथा अनुभव में डूबे रहना। मैने तुम्हें जो कुछ भी शिक्षा दी है, उसको एकान्त में अनुभव करते रहना, अपनी वाणी और चित्त मुझ में लगाए रखना और मेरे बताए हुए भागवत धर्म में प्रेम से रम जाना। अन्त में तुम त्रिगुण और उससे सम्बन्ध रखने वाली गतियों को पार करके उनसे परे मेरे स्वरुप में मिल जाओगे।

इस प्रकार के योग सम्बन्धी ज्ञान का उपदेश ११ वर्ष ५२ दिन तक की लीला करने वाले श्री कृष्ण जी ने कभी भी नहीं दिया, बल्कि उनके प्रति वैर भाव रखने वाले अघासुर, बकासुर आदि ने भी बिना योग साधना किए योगमायां के अखण्ड ब्रज में मुक्ति प्राप्त की, किन्तु गोलोक की सखियों की चरण रज पाने के लिए तरसने वाले उद्धव भी आजीवन विष्णु रुप श्री कृष्ण के साथ ही रहे और बदरीक आश्रम में जा कर कठोर तपस्या करने के बाद भी भगवान श्री कृष्ण के परम प्रेमी भक्त उद्धव जी को बैकुण्ठ की सारुप्य मुक्ति ही मिल सकी। वे अखण्ड योगमाया में नहीं जा सके।

भा० १०/८३/४१–४२ में श्री कृष्ण जी की पटरानियां द्रौपदी से कहती हैं कि हम साम्राज्य, इन्द्र का पद, ब्रह्मा जी का पद, मोक्ष आदि कुछ भी नहीं चाहतीं। हमें तो श्री कृष्ण जी के चरण कमलों की धूलि ही चाहिए।

श्री कृष्ण जी के बैकुण्ठ गमन के पश्चात् रुक्मणी आदि पटरानियां उनके ध्यान में मग्न हो कर अग्नि में प्रवेश कर गईं।

भा० ११/३१/२०

श्री कृष्ण की शेष पत्नियों को अर्जुन अपने साथ ला रहे थे। जिन्हें दुष्ट लोगों ने मार्ग में ही छिन लिया।

न वयं साधि साम्राज्यं स्वराज्यं भौज्यमप्युत।
वैराज्यं पारमेष्ठयं च आनन्त्यं वा हरेः पदम्।।
कामयामह एतस्य श्रीमत्पादरजः श्रियः।
कुचकुङ्कुमगन्धाढयं मूर्ध्ना वोढुं गढाभृतः।।

भा० १०/८३/४१–४२

कृष्णपत्न्योऽविशन्नग्निं रुक्मिण्याद्यास्तदात्मिका।

भा० ११/३१/२०

Nijanand App

मैं भगवान की पत्नियों को द्वारिका से अपने साथ ला रहा था, परन्तु मार्ग मे दुष्ट लोगों ने मुझे एक अबला की भांति हरा दिया और मैं उनकी रक्षा भी नहीं कर सका।

भा० १/१५/२०

यह वृत्तान्त महाभारत में मौसल पर्व अध्याय ७ श्लोक ३४ से ५१ में विस्तार से वर्णित किया गया है। विष्णु स्वरुप श्री कृष्ण की रानियां बैकुण्ठ से आगे नहीं जा सकीं और उस स्वरुप के प्रति अनन्य निष्ठा रखने वाले पांचों पाण्डवों को भी अपनी महारानी द्रौपदी के साथ हिमालय (केदारनाथ) में गल जाना पड़ा। वे भी स्वर्ग से आगे नहीं जा सके। महाभारत के स्वर्गारोहण पर्व में वह वृत्तान्त विस्तार से वर्णित हैं।

अतः विष्णु रुप श्री कृष्ण की उपासना कभी भी अखण्ड मुक्ति नहीं दे सकती है। महाभारत में या भागवत में भीष्म, वसुदेव, कुन्ती, नारद जी आदि के द्वारा श्री कृष्ण (मथुरा, एवं द्वारिकाधीश) की स्तुति में जो कुछ भी कहा गया है वह विष्णु स्वरुप श्री कृष्ण के लिए है और इन स्तुति के वचनों में प्रयुक्त (लिखे गए) श्लोक कभी भी अक्षरातीत पूर्णब्रह्म के लिए मान्य नहीं हो सकते।

"श्री कृष्ण प्रणामी न पुनर्भवाय" वाला प्रसिद्ध श्लोक म० शा० पर्व ४७/६२ में विष्णु स्वरुप श्री कृष्ण के लिए ही है। अक्षरातीत पारब्रह्म के लिए नहीं। यह श्लोक बाणों की शैय्या पर लेटे हुए भीष्म पितामह ने कहा था (इसकी विस्तृत व्याख्या ८ वीं तरंग में देखिए)। इस प्रकार महाभारत के भीष्म पर्व अ० ६६ और ६७ में भीष्म जी ने विष्णु रुप श्री कृष्ण का ही गुणगान किया गया है। भागवत के प्रथम स्कन्ध अ० ६२ श्लोक ३२–४२ तक में भीष्म जी ने विष्णु रुप श्री कृष्ण जी की स्तुति की है। वसुदेव द्वारा भागवत के १०/८५/३–२० तथा नारद जी के द्वारा भागवत के १०/६६/३१–३६ में विष्णुमय श्री कृष्ण का ही गुणगान किया है, इसी प्रकार के अनेक प्रसंग महाभारत और भागवत आदि ग्रन्थों में हैं, किन्तु मथुरा में जरासिन्ध से युद्ध के वर्णन से ले कर महाभारत के युद्ध एवं प्रभाष क्षेत्र तक की लीला में श्री कृष्ण जी के बारे में जो भी गुणगान किया गया है,

---

अध्वन्युरुक्रम परिग्रहमङ्ग रक्षन्

गोपैरसद्भिरबलेव विनिर्जितोऽस्मि।।

भा० १/१५/२०

Nijanand App

वह मात्र विष्णु स्वरुप श्री कृष्ण के ही लिए है। अक्षरातीत पारब्रह्म के लिए कदापि नहीं।

प्रश्न – क्या श्री कृष्ण के नाम से निजधाम में जाया जा सकता है (अखंड घर पहुँचावे जित) ? क्या श्री कृष्ण जी ही श्री राजजी है? क्यों कि रास ग्रन्थ में "श्री कृष्ण नो सिणगार" न लिख कर "श्री राजजी नो सिणगार" लिखा है। इसी प्रकार "श्री राधा जी नो सिणगार" न लिख कर "श्री ठकुरानी जी नो सिणगार" लिखा है। रास ६/६६ में श्री श्यामा जी को श्री कृष्ण जी की अर्धांगिनी कहा गया है–"सणगटडो सिणगार सोभावे, श्री कृष्ण जी केरी अरधंग"। अर्थात् श्री कृष्ण जी की अर्धांगिनी श्यामा जी के घूंघट की शोभा बेशुमार है।

परमधाम में राधा जी नहीं, बल्कि श्यामा जी हैं और श्यामा जी को श्री कृष्ण जी की अर्धांगिनी कहे जाने से क्या यह सिद्ध है कि परमधाम में श्री कृष्ण जी हैं?

उत्तर – भूतकाल में भी घटित हुई किसी घटना के आदर्श पात्र या अपने इष्ट या उससे सम्बन्धित किसी वस्तु की शोभा का वर्णन वर्तमान काल में ही किया जाता है। उदाहरण के लिए तुलसीदास जी ने सीता और राम के विवाह में श्री राम की शोभा का वर्णन वर्तमान काल में ही किया है, जबकि यह घटना लगभग नौ लाख वर्ष पुरानी त्रेता युग की है।

पीत पुनीत मनोहर धोती, हरति बाल रवि, दामिनी जोती।

कल किंकिन कटि सूत्र मनोहर, बाहु विसाल विभूषन सुन्दर।।

राम चरित्र मानस बाल काण्ड

श्री राम के शरीर पर पवित्र और मनोहर धोती प्रातःकाल के सूर्य और बिजली की ज्योति को भी हर लेती है। कमर में सुन्दर किंकिणी (एक आभूषण) और कटिसूत्र है। विशाल भुजाओं में सुन्दर आभूषण सुशोभित हो रहे हैं।

इस समय विष्णु भगवान के अवतार श्री राम इस पंच–भौतिक तन से इस जगत में नहीं है तो भी उनके श्रृगांर का वर्णन जब वर्तमान काल में ही हो सकता है तो स्वयं अक्षरातीत ने जिस तन में लीला की हो और वह तन अभी भी योगमाया में अखंड रुप से लीला कर रहा हो तो उनकी लीला और शोभा श्रृगांर का वर्णन भी निश्चित रुप में वर्तमान काल में ही किया जायेगा।

Nijanand App

अखंड ब्रज लीला का वर्णन भी वर्तमान काल में ही किया गया है।

तरफ दूजी पुरे सारे, बीच बाट धेन का सेर।

इत खेले नंद नंदन, संग गोवालों के घेर।।

क० हि० १६/१४

दूसरी ओर सभी पूरे (बस्तियां) हैं। इनके बीच में से गायों के आने जाने का रास्ता है यहां पर ग्वाल बालों के घर में नन्द नन्दन श्री कृष्ण जी खेला करते हैं।

रेत झलके आंगने, दूध चरी चूल्हा आगल।

आई जी इन ठौर बैठें, और बैठें सखियां मिल।।

क० हि० १६/२१

आगंन में रेत चमक रही है और चूल्हे के ऊपर दूध उबलता है। इस जगह माता यशोदा जी और सब सखियां मिल कर बैठा करती हैं।

जिस समय रास की लीला केवल ब्रह्म के अन्दर हो रही थी, उस समय श्री कृष्ण जी के तन में साक्षात् श्री राजजी के जोश की शक्ति तथा अक्षर बह्म की आत्मा थी और राधा जी के तन में श्री श्यामा जी की आत्मा थी, इसलिए अखंड रुप से हो रही उस लीला का वर्णन करते समय "श्री कृष्णनोसिणगार" न लिखकर "श्री राजजीनो सिणगार" ही लिखा जाएगा और इसी प्रकार "श्री राधाजीनोसिणगार" न लिख कर श्री श्यामाजी नो या श्री ठकुराणी जी नो सिणगार लिखना ही उचित है। उस समय श्री राजजी के द्वारा धारण किए हुए उस तन का नाम श्री कृष्ण था, इसलिए श्यामा जी (राधा जी) को उनकी अर्धांगिनी कहा गया। (श्री कृष्ण जी केरी अरधंग) रास लीला के सभी नामों को उसी रुप में इस जागनी के ब्रह्माण्ड में भी मानना आवश्यक नहीं हैं, क्योंकि श्री इन्द्रावती जी का रास का नाम मानकदे) भी है।

मानकदे दृढ़ करीने जुए, सोभित बंने कोर।

एकोऽपि कृष्णस्य कृतः प्रणामो दशाश्वमेधऽवभृथेन तुल्यः।

दशाश्वमेधी पुनरेति जन्म श्रीकृष्ण प्रणामी न पुनर्भवायः।।

म० शा० प० ४७/६२

Nishand App

किन्तु, इस जागनी के ब्रह्माण्ड में प्रायः कोई भी श्री इन्द्रावती जी को मानकदे नहीं कहता है। रास की वाणी इस जागनी के ब्रह्माण्ड में ही उतरी है और वहां का वर्णन तब हुआ है, जब रास से हम परमधाम और वहां से फिर इस जागनी के ब्रह्माण्ड में आए हुए हैं।

हम खेले वृन्दावन इतथें, तहां भी खेले पिया साथ।
करें विनोद नित नये, बन ही मिने विलास।।

कलश हि० २०/७

हम इस जागनी के ब्रह्माण्ड में यहां से बैठे–बैठे उस नित्य वृन्दावन को देख रहे हैं, जहां हमने अपने धनी के साथ प्रेम की लीला की थी। हमारे द्वारा धारण किए हुए तन अभी भी हैं, जो वन में नित्य ही विलास की नई–नई लीला करते रहते हैं।

रास में जो इस समय श्री कृष्ण जी का अखण्ड रुप है, वह हमारी आत्मा के पति नहीं हो सकते, क्योंकि उनमें अब श्री राजजी के आवेश की शक्ति नहीं है। सांसारिक जीवों के वो धनी अवश्य हैं, क्योंकि वे योगमाया के अखण्ड तत्व के रुप हैं तथा उस तन में कभी अक्षरातीत ने लीला की थी।

बड़ी बुद्धि वाला उसी को कहा जाता है, जिसके जीव के प्रीतम श्री कृष्ण जी हों। बड़ी बुद्धि के बारे में सब का यही विचार है।

मोटी मत ते कहिए एम, जेहेना जीवने वल्लभ श्रीकृष्ण।
मतनी मततां ए छे सार, वली बीजी मतनो कहूं विचार।।

प्रकास गु०–२१/५

प्रकाश गुजराती की इस चौपाई में अखण्ड योगमाया के श्री कृष्ण जी के वर्णन का प्रसंग है, अक्षरातीत पारब्रह्म का नहीं, क्योंकि इसमें शुकदेव और परीक्षित की वार्ता के दृष्टांत से समझाया गया है।

योगमाया में विराजमान श्री कृष्ण जी का वह अखण्ड रुप निश्चित रुप से जीवों को इस भवसागर से पार करके अखण्ड घर (योगमाया) में पहुंचाने वाला है। वह स्वरुप किसी को भी परमधाम में नहीं पहुंचा सकता।

पारब्रह्म श्री प्राणनाथ जी ने आकर देखा कि इस संसार में सपने की बुद्धि

Nijanand App

होने के कारण हर व्यक्ति और देवी देवता भी शरीर के रूप को और इसके नाम को पहचानते हैं, अंदर बैठी शक्ति को नहीं, जो केवल परा बुद्धि (जागृत बुद्धि) के ज्ञान से ही समझा जा सकता है, जिस कारण से मैं (अक्षरातीत) जब स्वयं अपनी आत्माओं को और अक्षर ब्रह्म को अपनी सत् और आनन्द की लीला दिखाने के लिए इस संसार में प्रगट हुआ हूं, परन्तु तन तो मिथ्या ही धारण करना था, क्योंकि सारे संसार के ग्रन्थों में यह वर्णित है कि आत्मा और पारब्रह्म जन्म मरण से रहित है, फिर भी हमने देखा कि माहेश्वर तन्त्र, पुराण संहिता, श्रीमद्भागवत, वाराह संहिता इत्यादि एवं गीता जैसे अनेको महत्वपूर्ण ग्रन्थों में मेरी ग्यारह साल बावन दिन की लीला के सामने त्रिदेवा इत्यादि का झुकना और प्रत्येक शक्ति का नतमस्तक हो जाना देख कर सभी देवी–देव और ऋषि, मुनियों ने सोचा कि पूर्ण ब्रह्म के बिना यह और कोई नहीं हो सकता, लेकिन अंदर बैठे मेरे स्वरुप को किसी ने भी नहीं पहचाना। कार्य तो अंदर की शक्ति करती हैं, न कि शरीर। परन्तु जागृत बुद्धि तारतम के बिना सब ने मेरे नाम और झूठे तन को ही पूर्ण ब्रह्म की उपाधि दे कर ग्रन्थ लिख डाले। लोगों को मेरे लौकिक नाम में ही उलझा दिया, जिससे मेरे स्वरुप की पहचान कोई नहीं कर सका। इसलिए ग्रन्थों में लिखवा दिया था कि तारतम ज्ञान के द्वारा ही सच्चिदानन्द पारब्रह्म की पहचान होती है।

इसलिए बेचारा संसार करता भी क्या? दूसरा द्वापर में पूर्ण ब्रह्म के आने का कोई निशान था ही नहीं, न ही ग्रन्थों में प्रमाण था और न अपने साथ मैं जागृत बुद्धि की शक्ति ही लेकर आया था। उस ग्यारह साल और बावन दिन या रास की लीला जो इस मिथ्या जगत से परे अखण्ड वृन्दावन में हुई, में मैनें किसी से भी जागृत बुद्धि के ज्ञान से बात नहीं की और न ही कोई ऐसी लीला की। इसीलिए मेरी आत्माएं भी माया में मेरी पहचान नहीं कर सकीं। इस कारण से अपनी आत्माओं को निजघर की और अक्षर की पहचान अर्थात् हक की साहेबी और वाहेदत का इश्क दिखा कर वापिस ले जाने के लिए वाहेदत की निज बुद्धि

अशब्दमस्पर्शमरुपमव्ययं तथा अरसं नित्यमगन्धवच्च यत।

अनादि अनन्तं महतः ध्रुवं परंयत निच्चाय तत् मृत्यु मुखात् प्रमुच्यते।।

कठोपनिषद् १/२/१५

"तारतम्येन जानाति सच्चिदानन्द लक्षणम्"।

Nijanand App

ले कर आया हूँ, और दुनियां को पक्का यकीन दिलाने के लिए पराशक्ति जागृत बुद्धि का ज्ञान ले कर आया हूँ, ताकि उनको यह स्पष्ट ज्ञान हो जाए कि कृष्ण केवल मेरे भौतिक तन का नाम था।

वेद और कतेब दोनों पक्षों के ग्रन्थों में यही कहा गया है कि अट्ठाइसवें कलियुग में पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द हकताला का आगमन होना है। धर्मग्रन्थों की इन साक्षियों के अनुसार अक्षरातीत पारब्रह्म संवत् १७३५ में श्री विजियाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार आखरूल जमा इमाम मेहंदी के रूप में जाहिर हो गये तथा संवत् (१७४०–१७५१) में पन्ना जी आने पर समस्त सुन्दर साथ ने उन्हें अपनी आत्मा का पति मानकर रिझाया। उस समय वे अपने स्वरूप का वास्तविक परिचय देते हुए स्वयं कहते हैं–

चाह करें खेल देखने, मैं बरजे तीन बेर।
त्यों त्यों मांगे फेर फेर, रबद चढ़ी सिर मेर।।

बी० सा० मंगलाचरण अष्ट प्रहर

जब परमधाम में तुमने माया का खेल देखने की चाहना की थी, तब मैंने तुम्हें तीन बार मना किया था। जैसे–जैसे मैने तुम्हें मना किया, वैसे–वैसे ही तुमने भी रब्द किया और बार बार खेल देखने की मांग किया।

श्री बंगला जी में इन शब्दों को कहने वाले वे ही धाम धनी है, जिनसे परमधाम में इश्क–रब्द हुआ था। वे अपनी पांचों शक्तियों के साथ ही श्री इन्द्रावती जी के तन में विराजमान होकर अपनी स्पष्ट पहचान दे रहें है कि रूहों! तुमने मुझसे ही इश्क रब्द किया था और तुम्हारी इच्छा पूरी करने के लिये ही इस ब्रह्माण्ड में हमें आना पड़ा है–

तब रबद करें मुझसो, मेरो कहयों न माने कोए।
तब सुपना दिखाऊंगा, इनों पे मंगाय के सोय।।

बी० सा० छठा प्रहर चौ० ४८

तुममे से किसी ने भी मेरा कहना नहीं माना और मुझसे बार–बार खेल देखने का रब्द किया। तब तुम्हारी इच्छा पूरी करने के लिए सपने की दुनिया का खेल दिखाने का मैनें निर्णय कर लिया।

यह सबको विदित है कि अक्षरातीत पारब्रह्म श्री मेहराज जी के तन में

Nijanand App

श्रीकृष्ण के नाम से नहीं, बल्कि श्री प्राणनाथ (आत्मा के पति) के रूप में जाहिर हुए। हब्से से लेकर पन्ना जी तक किसी भी सुन्दरसाथ ने उन्हें श्रीकृष्णजी कह कर नहीं पुकारा, बल्कि बंगला जी में उन्हें ही पूर्ण ब्रह्म का स्वरूप मानकर प्रतिदिन उनकी आरती उतारी जाती थी, और उस समय सिंहासन पर राधा कृष्ण नहीं बल्कि श्री प्राणनाथ जी और बाई जी राज (युगल स्वरूप) ही विराजमान होते थे।

पूर्णब्रह्म एक है (एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति) यह सभी धर्मग्रन्थों में स्पष्ट रूप से कहा गया है, किन्तु यदि श्रीकृष्ण को ही पूर्णब्रह्म कहा जाय तथा परमधाम में भी श्रीकृष्ण का अस्तित्व माना जाय तो श्रीकृष्ण की संख्या तीन हो जाती है। (ब्रज, रास तथा मूल श्री कृष्ण) चौथी और पांचवी बहिश्त की लीला का प्रतिबिम्ब अव्याकृत में भी पड़ा है इस प्रकार श्री कृष्ण के पांच स्वरूप सिद्ध हो जाते हैं तो क्या ये सभी पूर्णब्रह्म है? हकीकत यह है कि पूर्णब्रह्म नाम तत्व, और षट प्रमाणों से रहित है। श्री प्राणनाथ और श्रीराज कोई नाम नहीं हैं, बल्कि आत्माओं का अखण्ड, प्यारा पति ही प्राणनाथ और श्री राज है। श्री कृष्ण तो मात्र केवल उस तन का नाम है जो उन्होंने ब्रज और रास में धारण किया था। श्रीकृष्ण, श्री देवचन्द्र जी, मुस्तफा बेग और श्री मेहराज ठाकुर सांसारिक तनों के नाम है। जयकारा बोला जाता है, तो कभी भी यह नहीं कहा जाता है कि श्री देवचन्द्र जी की जय या श्री मेहराज ठाकुर की जय। बल्कि श्री निजानन्द स्वामी या प्राणनाथ प्यारे की ही जय बोली जाती है। निजानन्द, प्राणनाथ, या मुहम्मद किसी भी व्यक्ति विशेष का नाम नहीं है। अक्षरातीत जब अपने आवेश स्वरूप से इन तनों में विराजमान हुए तभी इन्हें निजानन्द या प्राणनाथ कहा गया। इस प्रकार तन के नाम श्रीकृष्ण का जयकारा बोलना अज्ञानता है।

श्री प्राणनाथ जी ही अक्षरातीत है, जहां कोई नाम, तत्व, गुण, खट प्रमाण लगता ही नहीं है, जैसा कि शास्त्रों में लिखा है–अर्थात् न तो वहां नेत्र

न तत्र चक्षुर्गच्छति न वाक् गच्छति न मनो न विद्मो न विजानीमः।

केनोपनिषद् १/३

यतो वाचो निवर्तन्ते, अप्राप्य मनसा सह।

आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान न बिभेति कुतश्चनेति।।

तैतरीयोपनिषद् २/४

Nijanand App

की दृष्टि जाती है न वाणी, न मन और न ही उसे हम यथार्थ रूप से जानते है। केनोपनिषद् १/३

वाणी जहां से लौट आती है तथा जो मन से प्राप्त होने योग्य नहीं है। *तैतरीयोपनिषद।*

जो प्रकृति के शब्द, स्पर्श, रुप, रस, गन्ध से पूर्णतया रहित, अनादि, अनन्त, महान, अखण्ड है उस ब्रह्म को जानकर जीव मृत्यु के मुख से छूट जाता है। कठोपनिषद्।

नाम, तत्व, गुण और रवट प्रमाण मन और वाणी के द्वारा ही व्यक्त हो सकते है। धर्म ग्रन्थों में ब्रह्म को मन और वाणी से परे कहने का अर्थ ही यह है कि वह नाम, तत्व और गुण, रवट प्रमाण से रहित है।

इस बात को समझने के लिए हम भारतवासियो के पास इन्दिरा गांधी जो भारत की प्रधानमंत्री रह चुकी है, का कितना अच्छा दृष्टांत है कि सन् १९७७ तक जब तक उनके पास इस पद की शक्ति थी तो सारा देश उनके सामने नमन करता था। गली–गली मे " इन्दिरा गांधी की जय हो " सुनने को मिलता था परन्तु सन् १९७७ में जनता दल का राज्य होने के पश्चात् इन्दिरा जी को कोई रहने के लिए मकान भी किराये पर नहीं देता था। अब जरा विचार किजिए कि वही इन्दिरा जी है, जो पहले प्रधानमंत्री थी और अन्त में इन्दिरा नाम के तन को गोली से मार दिया गया। तो कौन राज्य कर रहा था ? वह राज्य सत्ता थी जो इन्दिरा जी के तन को मिली, जिससे वह प्रधानमंत्री कहलाई। प्रधान मंत्री पद तो नहीं मरा, बल्कि तन मरा। इसी तरह श्री कृष्ण तो केवल एक तन का नाम है। पूर्ण ब्रह्म ने आकर उसके अन्दर प्रवेश किया। सबने तन के नाम को पकड़ लिया, इसलिए अन्दर विराजमान शक्ति की पहचान नहीं कर सकें।

अब पूर्ण ब्रह्म श्री प्राणनाथ जी ने आकर देखा कि मैं इस तरह तो अनेकों बार तन धारण करुं और लीला करुं तो भी कोई मेरे धाम, स्वरुप और लीला को पहचान नहीं सकेगा, इसलिए इस कलियुग में आने से पहले ही भविष्य के ग्रन्थों में लिखवा दिया था, कि पूर्णब्रह्म अपनी आत्माओं के साथ तारतम ज्ञान ला कर (जागृत बुद्धि ला कर) स्वयं अपनी पहचान कराएंगे, जबकि द्वापर में पूर्णब्रह्म के आने का कोई निशान ही नहीं है।

Nijanand App

हरिवंश पुराण में लिखा है कि कलियुग के अन्दर एक अनहोनी बात होगी, जो कभी भी किसी भी सृष्टि में नहीं हुई थी कि दिव्य ब्रह्मपुरधाम से पूर्णब्रह्म की आत्माएं और पूर्णब्रह्म कलियुग में मनुष्य तन धारण करेंगे और उनका ज्ञान इस जगत के सपने से परे जागृत बुद्धि का ज्ञान होगा और वे आत्माएं पूर्णब्रह्म के बिना किसी का आश्रय नहीं लेगी तथा अन्य किसी का पूजन नहीं करेंगी। कुरान में भी फरदारोज अर्थात् ग्यारहवीं सदी में अल्लाह तआला पूर्ण ब्रह्म आएगें ऐसा लिखा हैं। बाइबिल में भी सन् १६६१ में पारब्रह्म के आने के बारे में लिखा हैं तो क्या हिन्दुओं, मुसलमानों और ईसाईयों के ग्रन्थ गलत हैं, जिनमें लिखा है कि कलियुग में उस आए हुए पारब्रह्म को उनके जागृत बुद्धि के तारतम ज्ञान से और निजबुद्धि के ग्रन्थ श्री कुलजम स्वरुप को मथन कर उनकी पहचान करके भवसागर से जीव पार उतरेंगें। अब तो कृष्ण को पारब्रह्म कहना ही बहुत बड़ी भूल है और अब तो कुलशक्तियों के साथ (सब विध वतन सहित) अपनी पहचान करा रहे हैं और कह रहे हैं कि–

ब्रह्म लीला ढांपी हती, अवतारों दरम्यान।

सो फेर आए अपनी, प्रगट करी पेहेचान।।

किरंतन प्र० ५२ चौपाई २५

अब उन्होने देखा कि मेरी ब्रज और रास की लीला तो कृष्ण नाम जो केवल विष्णु के अवतार का नाम है, जो बैकुण्ठ से आता जाता है। उस तन में मेरे बैठ कर लीला करने पर लोगों ने मेरे स्वरुप को नहीं पहचाना और उस नाम को ही पूर्ण ब्रह्म कह दिया, इसलिए अब मैं स्वयं अपनी पहचान करा रहा हूं कि मैं पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानन्द प्राणनाथ हूं।

सो पेहेचान सबों पसराए के, देसी सुख वैराट।

लौकिक नाम दोऊ मेट के, करसी नयो ठाट।।

किरंतन प्र० ५२ चौ० २७

अब जब तक सब को यह पहचान नहीं हो जायेगी कि पूर्णब्रह्म प्राणनाथ

अभाविनो भविष्यन्ति मुनयो ये ब्रह्मरुपिण :।

उत्पन्ना ये कृतयुगे प्रधान पुरुषाश्रया :।।

हरिवंश पुराण भविष्य पर्व अ० ४

Nijanand App

आये हुए हैं, तब तक न तो कोई भवसागर से पार होगा और न ही कोई इन्हें योगमाया में अखण्ड मुक्ति देगा और न ही ब्रह्म सृष्टि श्री प्राणनाथ जी को जाहिर किए बिना इश्क और साहेबी की पहचान कर सकेगी और ऐसा किए बिना परमधाम भी नहीं जा सकेंगी। इसलिए मैंने इस तन (मेहराज ठाकुर) से पहले जिन दो लौकिक तनों में (कृष्ण, देवचन्द्र) में बैठ कर लीला की, कोई भी पहचान नहीं कर सका। इस ब्रह्माण्ड में श्री देवचन्द्र जी को दर्शन देकर परमधाम की सारी हकीकत समझा कर मूल सम्बन्ध और आने का कारण बताया तथा जाने का समय बताया और उस तन में प्रवेश किया। तन तो मिथ्या था। काम पूरा नहीं हुआ था इसलिए दूसरे तन को धारण किया। तन छोड़ने से पहले बता दिया था कि मैं इन्द्रावती जी के तन जिसका नाम मेहराज ठाकुर है, उसमें बैठूंगा फिर भी सब ने यही कहा कि श्री प्राणनाथ जी चले गए, इसीलिए अपने उन तनों के नाम श्री कृष्ण और श्री देवचन्द्र को मिटा कर नया अखंड पूर्ण ब्रह्म की साहेबी की पहचान जो आज दिन तक किसी को भी नहीं हुई, श्री प्राणनाथ जी के स्वरुप से जाहिर हुआ जिसको दुनियां में जाहिर करने से ही सब कार्य पूर्ण होगें। जब तक दुनियां मेरे असल स्वरुप को नहीं जान जायेगी तब तक सारा जगत और ब्रह्म आत्माएं माया के दुःख में भटकती रहेंगी। मैंने तो आते ही कहा था कि **"क्या देखी रे हम दुनियां जो इनको न करें अखंड**। जिसने मेरी इस कुलजम स्वरुप की वाणी का मथन किया उसने मुझे पाया और मैं उससे मिला। मैंने तो वाणी में स्पष्ट कहा है कि केवल मुंह से वाणी पढ़ने से कुछ नहीं होता जब तक मथन न कर लें और अंदर चोट न लगे क्यों कि प्रेम की वाणी हृदय के टुकड़े–टुकड़े कर देती है।

कहा भयो जो मुख थें कहयों, जब लग चोट न निकसी फूट।
प्रेम बान तो ऐसे लगत है, अंग होत हैं टूक टूक।।

किरंतन प्र० ६ चौ० १

तारतम में भी कहा गया है कि–

ए सत वाणी मथ के, लेऊं जो इनको सार।
इन सार में कई सत सुख, सो मैं निरने करुं निरधार।।

अर्थात् जब तक श्री मुख वाणी का मथन करके हकीकत को ग्रहण नहीं किया जाता तब तक सच्चे सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती है।

यह चौथी तरंग सम्पूर्ण हुई।

Nijanand App

पाँचवीं तरंग

संसार अक्षरातीत को नहीं जानता

अक्षरातीत पारब्रह्म को जानने की इच्छा मनुष्य में हमेशा से ही रही है। अपने इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उसने तपस्या तथा साधना के कई मार्गों का सहारा लिया, किन्तु अक्षर ब्रह्म की सुरताओं को छोड़कर इस दुनिया का कोई भी प्राणी शुन्य निराकार से आगे नहीं जा सका।

दोऊ दौड़ करत हैं, हिंदु या मुसलमान।
ए जो उरझे बीच में, इनका सुन्य मकान।।

किरंतन प्र० ६६, चौ० ३

पारब्रह्म की खोज में हिन्दू और मुसलमान सभी प्रयास करते हैं किन्तु ये निराकार शून्य में ही उलझ कर रह जाते हैं, क्योंकि इन जीवों का मूलघर यही है।

पेड़ काली किन न देखी, सब छाया में रहें उरझाए।
गम छाया की भी न पड़ी, तो पेड़ पार क्यों लखाए।।

कलस हि० प्र० २, चौपाई २१

इस संसार के मूल माया की हकीकत को आज तक किसी ने भी नहीं पहचाना। सभी इसकी छाया चौदह लोक, अष्टावरण में ही फंसे रह गए। उन्हें तो छाया की हकीकत का भी जब पता नहीं चल सका तो वे माया से परे अखण्ड धाम का ज्ञान कैसे प्राप्त कर पाते?

क्षर से अक्षरातीत तक की आध्यात्मिक मंजिल को १०८ पक्षों में बताया गया है। इसीके प्रतीक स्वरुप माला में १०८ दाने रखे जाते हैं।

नवधा भक्ति (श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पाद सेवन, अर्चन, वन्दना, दास्य, सखा भाव और आत्म निवेदन) के पुष्टि, प्रवाही और मर्यादित भेद से ग्रहण करने से २७ पक्ष होते हैं। सच्चे दिल से समर्पित होकर भक्ति में लगना पुष्टि कहलाता है। दूसरों की देखा–देखी संसार के प्रवाह के अनुसार भक्ति मार्ग का अनुसरण करना प्रवाह कहलाता है। संसार की हर तरह की मर्यादा को ध्यान में रखते

Nijanand App

हुए भक्ति करना मर्यादित कहलाना है। सतोगुण, रजोगुण एवं तमोगुण भेद से २७ पक्षों के ८१ भेद हो जाते हैं। यह भक्ति केवल स्वर्ग और वैकुण्ठ तक ही ले जाती है।

इससे आगे जाने का प्रयास करने वाले निराकार में जाकर रुक जाते हैं। ८२वां पक्ष श्री वल्लभाचार्य जी का है, जो निराकार से परे गोलोक की लीला का ज्ञान मानते हैं और सखी भाव की भक्ति के अनुसार चलते हैं, किन्तु तारतम ज्ञान से रहित होने के कारण ये भी निराकार से परे गोलोक की स्पष्ट हकीकत नहीं समझ सके तथा प्रतिबिम्ब की लीला में ही उलझे रह गए।

पारब्रह्म मन, बुद्धि एवं शब्दों से परे हैं। धर्मग्रन्थों के ज्ञान के आधार पर जो भी उस अक्षरातीत की खोज करने का प्रयास करते हैं, वे भी निराकार तक ही जाकर रुक जाते हैं–

एक इलम ले दौड़ हीं, और ले दौड़े ग्यान।
तित बुध न पोहोंचे सब्द, ए भी थके इन मकान।।

किरंतन प्र० ६६, चौ० ५

इस माया के संसार में पारब्रह्म का स्वरुप नहीं है। इस कालमाया के ब्रह्माण्ड के शब्द, मन, चित्त और बुद्धि के द्वारा निराकार से आगे नहीं जाया जा सकता है। सपने की बुद्धि वैकुण्ठ और निराकार तक ही जा सकती है। इससे भी परे बेहद एवं उससे परे अक्षर अक्षरातीत तक सपने की बुद्धि की पहुंच हो ही नहीं सकती है।

सुपन बुध बैकुंठ लों, या निरंजन निराकार।
सो क्यों सुन्य को उलंघ के, सखी मेरी क्यों कर लेवे पार।।

परिकरमा प्र० २ चौ० ४

अनेकों महाज्ञानी, तपस्वी भी उस निराकार के पार नहीं जा पाते हैं।

साध सुरधीर अनेक मलो, अनेक जाओ बैकुण्ठ पार।
पण अखंड तणा दरवाजा कोणें, ते तो नव उघडे निरधार ।।

किरंतन प्र० ६८ चौ० ।।

ज्ञान, वैराग्य और भक्ति के सभी शूरवीर सन्तजन भले ही सारा प्रयास कर लें, किन्तु वे बैकुण्ठ या उस से परे निराकार तक तो जा सकते हैं, किन्तु इस

Nijanand App

निराकार महाशून्य को पार करके वे अखण्ड धाम (योगमाया के ब्रह्माण्ड) का दरवाजा कभी भी नहीं खोल सकते हैं।

उपासनी निरगुन या निरंजन, किन उलंघ्यो न जाए विष्णु को कारन।
या सास्त्र या साधू जन, द्वैत सबे समानी सुंन।।

प्रकास हि० प्र० ३४ चौ० ।

ब्रह्म को निराकार, निर्गुण और निरंजन मान कर उपासना करने वालों में से कोई भी विष्णु के कारण रूप मोह तत्व (निराकार) को पार नहीं कर सका। शास्त्रों और संत जनों का ज्ञान द्वैत (काल माया) से ही सम्बन्धित रहा और ये सभी निराकार शून्य से आगे नहीं जा सके ।

इस ८२ वे (ब्यासीवें) पक्ष से परे ८३ वां पक्ष है जो पुरुष प्रकृति से भी परे योगमाया के अखंड सुखों के अन्तर्गत है।

इन ऊपर पख है एक सुनियो ताको कहूं विवेक।
पुरुष प्रकृति उलंघ के गए, जाए अखंड सुख माहें रहे।।

प्र० हि० प्र० ३४ चौ ११।।

इसके अक्षर ब्रह्म की पांचों वासनाएं शिव, सनकादिक, कबीर, विष्णु भगवान और शुकदेव पहुँचें हैं।

बेहद से परे परमधाम के पच्चीस पक्ष हैं। ये सभी मिल कर एक सौ आठ पक्ष हो जाते हैं—

धाम तालाब कुंज वन सोहें, वन की नहरें माणिक जोहें।
पश्चिम चौगान बड़ो बन कहिए, एम पुखराज जमुनाजी लहिए।।
आठों सागर आठ जिमी के, यह पच्चीस पक्ष हैं धाम धनी के।।

अर्थात् रंग महल, हौज कौसर ताल, कुंजबन, वन की नहरें, माणिक पर्वत, पश्चिम की चौगान, बड़ा बन, पुखराज पर्वत और जमुना जी आठ सागर (नूर, नीर, खीर, दधि, घृत, मधु, रस, सर्वरस) तथा इनके बीच की आठों जमीन।

किन्तु, परमधाम के इन पच्चीस पक्षों का ज्ञान आज तक दुनियां के किसी भी ग्रन्थ में बिल्कुल नहीं था । कुरान, माहेश्वर तन्त्र तथा पुराण संहिता में संक्षिप्त रूप में केवल कुछ अंशों का ही वर्णन है, किन्तु पच्चीस पक्षों का स्पष्ट और

Nijanand App

विस्तृत वर्णन तो तारतम ज्ञान के अवतरित होने पर ही उपलब्ध हो सका है। ब्रह्मा, विष्णु और शिव इस चौदह लोकों वाले ब्रह्मांड में सर्वोपरि माने जाते हैं।

इन्हें कुरान की दृष्टि में मैकाईल, अजाजील और अजराईल तथा बाइबल के अनुसार Generator, Operator and Destroyer कहते हैं। ये तीनों भी उस पारब्रह्म को भी पूर्णरूप से नहीं जान पाए। देवी–भागवत ४/१६/२–३ में भगवान विष्णु स्वयं अपने मुख से कहते हैं कि माया के आधीन रहने के कारण ही हम देवता भी उस परम पुरुष, सच्चिदानंद, अविनाशी परमात्मा का स्मरण नहीं कर पाते हैं । मैं विष्णु हूं । मैं ब्रह्मा हूं और मैं शिव हूं इस अभिमान वश हम मोह (अहंकार) में पड़े रहते हैं, अतः हम सभी उस सनातन (शाश्वत, नित्य) परम तत्व, पारब्रह्म को नहीं जान पाते हैं।

ब्रह्मा, विष्णु और शिव सहित सभी देवता उस महा माया के अधीन रहते है। मोह के जाल में फंसा हुआ जीव कभी भी मुक्त नहीं हो पाता क्योंकि माया के रहते मोह का बन्धन नष्ट नहीं होने पाता । सृष्टि के अवसर पर ब्रह्मा आदि सभी देवताओं की उत्पत्ति होती है और कल्प के अन्त में ब्रह्मा आदि सभी देवताओं का नाश हो जाता है।

देवी भा० ४/२०/२६, २८

सुक सनकादिक ने नव टली, लखमी नारायण ने फरीवली।
विष्णु वैकुण्ठ लीधा माहें, सागर सिखर न मूक्या क्याहें।।

रास – १/५

शुकदेव जी तथा सनत्, सनन्दन, सनातन और सनत् कुमार भी इस माया

वयं मायावृताः कामं न स्मरामो जगद्गुरुम्।
परमं पुरुषं शान्तं सच्चिदानन्दमव्ययम्।।

अहं विष्णुरहं ब्रह्मा शिवोऽहमिति मोहिताः।
न जानीमो वयं धातः परं वस्तु सनातनम्।।

देवी भागवत ४/१६/२, ३

ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च सर्वे तस्य वशानुगाः।।
मोहजालावृतो जंतुर्मुच्यते न कदाचन ।

Nijanand App

से जीत नहीं सके । इस जगत के परमात्मा कहे जाने वाले लक्ष्मी नारायण भी माया के ही फंदे में हैं । बैकुण्ठ में विराजमान विष्णु भगवान को भी इसने अपने फंदे में ले रखा है। सागर से लेकर पहाड़ की चोटी तक अर्थात् शेषशायी नारायण से लेकर बैकुण्ठ और सम्पूर्ण विराट् पुरुष तक किसी को भी इस माया ने नहीं छोड़ा ।

अक्षर ब्रह्म की पांचों वासनाओं से श्रेष्ठ कोई भी जीव इस दुनिया में नहीं है। जब ये भी माया से नहीं जीत सके तो अन्य प्राणी इससे परे हो कर अखंड ब्रह्म के धाम और स्वरूप का ज्ञान कैसे प्राप्त कर सकेंगे ?

क्या दानव क्या देवता, क्या तिर्थंकर अवतार ।

ब्रह्मा विष्णु महेस लो, सो भी पैदा माया मोह अहंकार ।।

किरंतन प्र० ३० चौ० ४०

सभी राक्षस, देवता, तीर्थंकर, अवतार, तथा ब्रह्मा विष्णु और शिव भी माया मोह और अहंकार से ही उत्पन्न हुए है।

पुराण संहिता के अनुसार ब्रह्मा, विष्णु, शिव, ईश्वर और सदाशिव अपना सारा प्रयास करके रोधिनी शक्ति एवं सुमंगला शक्ति की कृपा से अव्याकृत में स्थित गोलोक तक का ही दर्शन कर सके, तो यह कैसे सम्भव है कि अन्य सांसारिक प्राणी सबलिक, केवल, सत् स्वरूप तथा उस से भी परे अक्षर–अक्षरातीत का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। जिस प्रकार मृग तृष्णा के जल से प्यास नहीं बुझ सकती और खरगोश की सींग नहीं हो सकते । उसी प्रकार बिना तारतम ज्ञान को समझे कोई भी अक्षर–अक्षरातीत का ज्ञान स्पष्ट रूप से न तो कभी जानता था, न जानता है और न कभी जान सकेगा ।

सभी धर्म ग्रन्थों की पहुँच कहां तक है! आइये! अब इसके बारे में विचार करें ।

मायायां विद्यमानायां मोहजालं न नश्यति ।

उत्पित्सुकाल उत्पतिः सर्वेषां नृपजायते ।

तथैव नाशः कल्पान्ते ब्रह्मादीनां यथाक्रमम् ।।

देवी भागवत ४/२०/२७, २८

Nijanand App

वेदों के ज्ञान के अनुसार–वेदों का मूल स्थान बेहद भूमिका (योगमाया) के अखंड स्थान में अव्याकृत के स्थूल में ज्ञान शक्ति है। इसलिए वेदों ने योगमाया के अव्याकृत को सत् सबलिक को चिद, और केवल को ब्रह्म का आनन्दमयी स्थान माना है। अथर्व वेद १०/८/२१ में कहा गया है कि ब्रह्म इस मिथ्या सृष्टि से पूर्व आनन्दमयी धाम में रहता है और वह अपने चारों पादों सत स्वरूप, केवल, सबलिक और अव्याकृत में रहते हुए सारे जगत को अव्याकृत से बनाता है और उसी में ही लीन कर लेता है।

वह अपने तीन पादों, सबलिक केवल और सत्स्वरूप से ऊपर है।

यर्जुवेद ३१/४

कहीं कहीं वेदों में अक्षर–अक्षरातीत का वर्णन आता है, लेकिन वे फिर से इनका स्थान योगमाया में ही दर्शाते हैं जो श्री प्राणनाथ जी ने अपनी वाणी में ही कहा है –

अर्स बका की हकीकत, माहें लिखी कतेब वेद ।

खोले जमाने का खांवद, और खोल न सके कोई भेद ।।

सिनगार ३/५०

आठ सागर और आठ जमीन वाले परमधाम में कोई भी आज दिन तक प्रवेश नहीं कर सका, क्योंकि वहां पर नूर ही नूर है। जिसके तेज में प्रवेश करना किसी के वश की बात नहीं है।

अथर्ववेद १०/२/३१

उस नूरमयी परमधाम के अंदर वह पूर्ण ब्रह्म अपने सत्स्वरूप अक्षर ब्रह्म, चिद्घन, नूरमयी, निजस्वरूप से स्वयं और आनन्द अंग श्यामा महारानी सहित विराजमान है वेदों में सच्चिदानन्द धाम का संकेत में वर्णन तो है, परन्तु ज्ञानियों के द्वारा उसे योगमाया में ही दर्शाया गया है।

अथर्व वेद १०/२/३२

अपादग्रे समभवत सो अग्रे स्वराभरत्।

चतुष्पाद भूत्वा भोग्यः सर्वमादत भोजनम्।।

अथर्ववेद १०/८/२१

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः।

यजु० ३१/४

Nijanand App

कोई भी हंस स्वरूप (ईश्वरी सृष्टि) के बिना, परम गुहा (योगमाया) में पहुँच कर उस विभूति ब्रह्म (अव्याकृत, केवल सबलिक, सत्स्वरूप) का दर्शन नहीं कर सकता ।

अथर्व वेद २/१/१-२

वेदों के अनुसार विहंगम योग पद्धति (जो आज कोई भी नहीं कर पाता) का आश्रय लेकर निराकार के पार बेहद का ज्ञान प्राप्त हो सकता है। योगमाया से परे अक्षर और अक्षरातीत का स्पष्ट ज्ञान कहीं नहीं है । किन्तु उससे परे अक्षर और अक्षरातीत के स्वरूप को किशोर (युवा) और नूरमयी अवश्य अथर्व वेद ६/३/१ तथा १०/८/४४ में कहा गया है, किन्तु वहां तक पहुँचने का कोई भी रास्ता वेद में नहीं है।

छः दर्शनों के अनुसार– छः दर्शनों में चार वेदों का ही सार है। एक एक दर्शन में एक एक सार को दर्शाया गया है। मीमांसा शास्त्र में कर्म की ही प्रधानता कही गई है। परन्तु कर्म माया में ही बनता और मिटता है। न्याय शास्त्र में प्रकृति से ही सृष्टि रचना का वर्णन है। वैशेषिक दर्शन में काल (समय) की प्रधानता है। तत्वों के मेल के बिना सृष्टि नहीं बन सकती है, यह सांख्य में कहा गया है।

अष्टाचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या ।

तस्यां हिरण्ययः कोशः स्वर्गो ज्योतिषावृतः ।।

तस्मिन् हिरण्यये कोशे त्र्यरे त्रिप्रतिष्ठिते ।

तस्मिन् यद् यक्षमात्मन्वत् तद् वै ब्रह्म विदो विदुः ।।

प्रभाजमानां हरिणीं यशसा संपरीवृत्ताम् ।

पुरं हिरण्ययीम् ब्रह्म अविवेश अपराजिताम् ।।

अथर्ववेद १०/२/२१, ३२, ३३

वेनस्तत् पश्यत् परमं गुहां यद यत्र विश्वं भवत्येकरूपम् ।

अथर्ववेद २/१/१

त्रीणि पदानि निहिता गुहास्य यस्तानि वेद स पितुष्पितासत ।

अथर्ववेद २/१/२

Nijanand App

बिना ब्रह्म के सृष्टि की रचना नहीं हो सकती, यह वेदान्त में कहा गया है । इन सभी दर्शनों में क्षर से लेकर योगमाया तक का ही सांकेतिक वर्णन है। धर्मविशेष से उत्पन्न ज्ञान से मोक्ष होता है।

वैशेषिक १/४

वैशेषिक, न्याय और मीमांसा दर्शन में क्षर से आगे अक्षर तक का भी वर्णन नहीं है। सांख्य दर्शन (१/६१) में सत, रज और तमो गुण की एक समान अवस्था को प्रकृति कहा गया है। इनमें २४ तत्व माने गए हैं। पच्चीसवां तत्व जीव कहा गया है । जीव को परमात्मा से भिन्न कहा गया है । उस परमात्मा को सर्वज्ञ और सब कुछ करने वाला कहा गया है।

सांख्य ३/५६

जो आदि नारायण का स्वरूप है। इन शास्त्रों में परमात्मा को पाने का साधन योग को ही बताया गया है । सांख्य दर्शन प्रकृति और जीव से परे (अव्याकृत और सबलिक) का ही वर्णन करता है।

पातंजलि मत (योग दर्शन) ब्रह्म को सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ (कण–कण में) मानता है। वह निराकार से आगे नहीं जा सकता । निर्बीज समाधि से केवल कर्म की वासना ही नष्ट होगी, ब्रह्म का दर्शन नहीं ।

वेदान्त दर्शन १/३/१०–११ में अक्षर ब्रह्म को ही सबको धारण करने वाला कहा गया है, परन्तु अक्षर को योगमाया में स्थित माना गया है। इसके द्वारा ज्ञान से त्रिपाद (अव्याकृत, सबलिक ओर केवल) से आगे नही जाया जा सकता । इस प्रकार वेदान्त का विषय कुल मिला कर चार पादों तक ही है । इस से

सुनोता सोमपाव्ने सोममिन्द्राय वज्रिणे।

युवाजात शानः स पुरुष्टुतः।।

अथर्ववेद ६/३/१

तमेव विद्वान न बिभाय मृत्योरात्मानं धीरमजरं युवानम्।।

अथर्ववेद १०/८/४४

धर्म विशेष प्रसूताद् द्रव्य गुण कर्मसमान्य।

विशेषमवायानां पदार्थानां तत्वज्ञानान्निःश्रेयसम् ।।

वै० १/४

Nijanand App

अक्षर और अक्षरातीत की प्राप्ति नहीं हो सकती है । वेदान्त के जिन सूत्रों में ब्रह्म को आनन्दमय कहा गया है। वह योगमाया में स्थित केवल ब्रह्म ही है। अक्षरातीत का ज्ञान वेदान्त दर्शन में नहीं है।

माहेश्वर तन्त्र के अनुसार – शिव जी ने जो अक्षरातीत के धाम या अक्षर का संक्षिप्त वर्णन किया है, वह समाधि अवस्था में श्री राज जी के हुक्म के द्वारा ही कहलवाया गया है, साक्षात् देख कर नहीं। यह बात उन्होंने स्वयं अपने मुख से (माहेश्वर तंत्र २६/३) में कहा गया है। उन्होंने चूड़ामणि मंत्र का जो साधन बताया है, उससे भी चिदानन्द लहरी से परे केवल ब्रह्म का ही दर्शन होगा। माहेश्वर तन्त्र ३२/७५–७६

इस प्रकार बिना तारतम ज्ञान के किसी भी ग्रन्थ से अक्षरातीत पूर्ण ब्रह्म की प्राप्ति नहीं हो सकती । कबीर जी के मतानुसार – अक्षर ब्रह्म की सुरता होने के कारण कबीर जी अक्षर तक गए, किन्तु उन्हें परमधाम का दर्शन नहीं हो सका। वह स्वयं कहते हैं–

चलते चलते पग थके, नगर रहा नव कोश।

बीच में डेरा पड़ गया, कबीर किन्हें देऊं दोष।।

जा घर में अबला बसे, बहे प्रेम के पूर।

दास कबीरा यों कहे, सो घर हम से दूर।।

कुरान के माफक – कुरान किसी व्यक्ति का कहा हुआ ज्ञान नहीं है, बल्कि अक्षरातीत के जोश (जबराईल) के द्वारा मुहम्मद साहब तक लाया हुआ ज्ञान है। मुहम्मद साहिब के अंदर वही स्वरूप (अक्षर की आत्मा और धनी का जोश) था जो रास में था । कुरान को खुदाई इलम माना जाता है। "मेयराज नामा" तथा "आना जाना नूर का" नामक ग्रन्थ में मुहम्मद साहिब के द्वारा मलकूत, जबरुत को पार कर के लाहूत (परमधाम) में नूरमयी अमरद (किशोर) सूरत के दर्शन का वर्णन है। कुरान में हौज़ कौसर, यमुना जी, नहरों आदि का भी संक्षिप्त वर्णन है, किन्तु तारतम ज्ञान से रहित लोग कुरान पढ़ कर भी अल्लाह को बेचून, बेचगून

अक्षरमम्बरान्त घृतेः। वे० द० १/३/१०

सा च प्रशासनात्। वे० द० १/३/११

Nijanand App

(निराकार, निर्गुण) ही मानते हैं। कुरान की हकीकत एवं मारफत का ज्ञान ग्यारहवीं सदी में अल्लाह के द्वारा इमाम मेंहदी के रूप में स्वयं प्रगट होकर दिया जाना था, क्योंकि परम धाम की गुझ बातों की खबर केवल अल्लाह को ही है–और उसी के पास गैब (परमधाम के खिलवत खाने की कुंजिया हैं जिनको उसके सिवाए कोई भी नहीं जानता ।

मंजिल २ पारा ७ सूरा ६ आयत ५६

बाइबिल के अनुसार– बाईबिल में संकेत रूप से भी अक्षर–अक्षरातीत का स्पष्ट ज्ञान नहीं है–

अर्थात् एकमात्र परमात्मा ही हमारा स्वामी है और तुम्हें उससे अपने सम्पूर्ण हृदय, आत्मा, मस्तिष्क और सम्पूर्ण शक्ति से प्रेम करना चाहिए।

Mark Chapter 12:29,30

किन्तु बाइबिल में ये स्पष्ट नहीं है कि वह परमात्मा कहां है और कैसा है ? जिससे प्रेम करके हम इस भवसागर से पार हो सके।

यह पांचवी तरंग सम्पूर्ण हुई।

तन्त्राथोऽयं रहस्यार्थो यस्तु वेदेषु गोपितः ।

ईश्वरात्तु मया लब्धः । प्राप्तस्तेन सदाशिवात् ।

म० त० २६/३

The Lord our God is the one and only God. And you must love him all your heart and soul and mind and strength.

Mark Chapter 12:29,30

Nijanand App

छठी तरंग

श्री प्राणनाथ जी की पहचान

इस मिटने वाले संसार में हर एक प्राणी सुख और शान्ति की इच्छा करता तो है, पर पा नहीं सकता, क्योंकि यह ज्ञान नहीं होता कि सुख, शान्ति और आनन्द किसे कहते हैं ? वे मन के बनाए झूठे सुख और शान्ति को ही अखण्ड मान कर चलते हैं और यहां से भूल शुरू होती है और मानव भटकता ही चला जाता है।

सुख और आनन्द जो अखण्ड है, जिसे पाने के बाद जन्म–मरण का चक्कर ही समाप्त हो जाता है और सदा अनादि आनन्द का स्वरूप प्राप्त होता है। उसे बताने वाला ही जब कोई यहाँ नहीं है। कोई भी मायावी गुरू नहीं जानते और तो और इस माया के परमात्मा भी खोज–खोज कर थक गए, तो फिर आप ही बताओ कि कौन किसको सच्चा सुख और आनन्द बताता?

इसलिए हर एक व्यक्ति सुख और शान्ति की इच्छा करते हुए भी अपने जीवन की अधिक आयु गंवा देता है, फिर भी उसे अखण्ड सुख और आनन्द प्राप्त नहीं होता। जैसे – रेगिस्तान में जब रेत पर सूर्य की किरणें पड़ती हैं तो दूर से देखने पर जल का एक सागर दिखाई पड़ता है। ऐसे रेगिस्तान में यदि प्यासा हिरन भटक जाए तो वह पानी की खोज में चारों ओर दौड़ता है, उछलता है, कूदता है, लेकिन उस चमकते हुए जल, जो रेत पर केवल सूर्य की चमक़ मात्र है, के धोखे में दौड़ता–दौड़ता प्यासा ही तड़प–तड़प कर मर जाता है। ठीक उसी प्रकार मनुष्य झूठे धन, मान, गुमान, ज्ञान के चमकते इस संसार में दूसरों के धन को बड़ा मानकर लालसा की प्यास में अहंकार की छलांगों से कूदता–कूदता मर जाता है, फिर भी उसे सुख और आनन्द की एक बूंद भी इस संसार में नहीं मिल पाती ।

न जातु कामः कामानामुपभोगेन उपशाम्यति।

वर्धते हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एव अभिवर्धते।।

म० भा० आ० पर्व ८५/१२

तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णाः।

Nijanand App

अर्थात् इच्छाओं के भोग से इच्छाएं शान्त नहीं होती है, जैसे अग्नि में घी डालने से अग्नि और अधिक भड़क उठती है, उसी तरह इच्छाएं और भी बढ़ती ही जाती हैं। महाभारत आदि पर्व अ० ८५, श्लोक १२

संसार के सुख भोगने की तृष्णा कभी भी हमें शान्ति और आनन्द प्राप्त नहीं करने देती।

अर्थात् तृष्णा कभी भी बूढ़ी नहीं होती (भृतृहरि) किन्तु हर इन्सान शारीरिक दृष्टि से बूढ़ा हो जाता है और मर जाता है। मानव इसी जाल में फंसता चला जाता है, इसलिए यहाँ कोई सुखी होता ही नहीं। पाताल से बैकुण्ठ तक सब दुःखी हैं। महर्षि कपिल जी ने भी कहा है–

इस संसार में कोई भी कहीं भी सुखी नहीं है। सांसारिक सुख, मान, प्रेम की तमन्ना प्रत्येक मानव में होती है और इसकी प्राप्ति में वह सारा जीवन प्रयत्न करता रहता है, किन्तु उसे कुछ नहीं मिलता, यदि मिलता भी है तो दुःखी हो जाता है और सोचता है कि सुखी होने के लिए उसने जो किया, उससे ही वह और अधिक दुःखी हो रहा है।

आइए! अब उस पारब्रह्म को खोजें। वह कहां है और कैसे मिल सकता है? लेकिन, जब तक उस पारब्रह्म के नाम, धाम, स्वरूप और लीला का ज्ञान न हो, तब तक उनको पाना बहुत कठिन है और जब तक वो न मिले तब तक अखण्ड सुख और आनन्द कैसे मिलेगा? इसका ज्ञान प्राप्त करने के लिए केवल ग्रन्थ ही सार्थक हो सकते हैं। गीता में भी लिखा है–

एकमात्र उत्तम पुरूष ही परमात्मा है।

अर्थात् वह पारब्रह्म निश्चित ही भौतिक मन और प्राणों से रहित अक्षर से भी परे उज्जवल (नूरमयी) स्वरूप वाला है। मुण्डकोपनिषद्। इनकी पुष्टि करने के लिए वेदों में भी समझाया गया है।

अर्थात् प्रकृति के अंधकार से परे अखंड स्वरूप वाले सब से महान, उस पुरुष को ही परमात्मा जानता हूँ, जिसे जान कर ही मृत्यु (आवागमन के चक्र)

"कुत्रापि कोऽपि सुखी न" (सांख्य ६/७)

उत्तमः पुरुषः तु अन्यः, परमात्मा इति उदाहृतः।

गीता–अ० १५ श्लोक १७

Nijanand App

से छुटकारा पाया जा सकता है इसके अतिरिक्त अन्य कोई भी मार्ग नहीं है।
यजुर्वेद अ० ३१/१८ ।

हिन्दू ग्रन्थों के निष्कर्ष से यह ज्ञात हुआ कि परमात्मा केवल एक है, जिसकी पुष्टि श्रुतियों में भी की गयी है।

परमात्मा केवल एक है दूसरा नहीं, तो फिर यह स्वयं ही पता चल जाता है कि यदि पार ब्रह्म एक ही है तो बाइबिल में देखें क्या लिखा है? तब बाइबिल में भी यही मिला कि– केवल एक ही परमात्मा है दूसरा नहीं।

गुरू नानक देव की वाणी में भी स्पष्ट कहा है कि वह अखंड है। मन वाणी और बुद्धि से परे है। वही हमारा खसम (आत्मा का पति) है। फिर कबीर जी ने भी इसी बात की पुष्टि की है कि सत्नाम (पारब्रह्म) को जाने बिना इस भव सागर से आवागमन का चक्र नहीं छूट सकता, तो इसके पश्चात कुरान को देखना भी मन की पुष्टि के लिए जरुरी हो जाता है तो कुरान के पारे २८, सूरत ५६, आयत २२, २३, २४ में यह बात स्पष्ट हो जाती है–

वह अल्लाह है, जिसके अलावा अन्य कोई भी पूज्य नहीं है। वह परदे के पीछे और सामने का ज्ञाता है। वह अत्यन्त कृपा शील (रहमान) और दयावान है वह अल्लाह है वह सर्व शासक है, वह अत्यन्त गुणवान, शान्ति स्वरूप, शरण दाता, संरक्षक, प्रभुत्वशाली, और अत्यन्त महान है।

उस अल्लाह (पारब्रह्म) की महिमा के विरूद्ध वह लोग हैं जो बहु देवों की पूजा करते हैं, क्योंकि उनको हकीकत में सत्य परमात्मा का ज्ञान ही नहीं है।

एको ब्रह्म द्वितीयो न अस्ति।

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्य वर्णः तमसः परस्तात्।

तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।।

यजु० ३१/१८

अप्राणो अमनो शुभ्रो हि अक्षरात् परतः परः।

मुण्डकोपनिषद्।

There is only one God and no other.

Mark 13/32

Nijanand App

वह लोग उनको ही परमात्मा मान बैठे हैं, जहां से उनके मिटने वाले शरीर की इच्छाएं पूरी होती हैं।

सच्चिदानन्द ही अल्लाह है पैदा करने वाला, बनाने वाला और सूरत देने (Designer)वाला है। उसी के लिए यह अच्छे–अच्छे नाम कहे है। जो भी वस्तु आकाश और धरती में है, उसका ध्यान करती है और वह सच्चिदानंद प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी है।

संसार के सब धर्मों के धर्म–ग्रन्थ तो एक पारब्रह्म की पूजा को ही सच्चे सुख और आनन्द को देने वाली पूजा बताते हैं तो फिर यह सारा संसार आज कहां भटक गया है?

खूब खोजा और देखा तो संसार का हर मानव धर्म की आड़ में गुलामी की जंजीरों में इस तरह जकड़ा है कि उनको साधारण मनुष्य तो क्या जगत के देवी–देवता और भगवान भी नहीं छुड़ा पायेंगे। स्वयं पारब्रह्म के सिवाय यह और किसी के बस का काम ही नहीं है।

क्योंकि यह स्वार्थ, लोभ, मोह, अहंकार में फंसे हुए और झूठे ज्ञान के पढ़े लोग ही आज गुरू बन बैठे है, जिन्होंने हकीकत में सत्य को ढांप कर झूठ को परमात्मा बना कर हर धर्म में प्रपंच से ही धर्म चला रखे है, और उनके अनुयायी (चेले) शिष्य परमात्मा को छोड़ बैठे हैं, क्योंकि लोग गुरूओं को ही परमात्मा दिलाने वाला समझ बैठे हैं। किसी को भी यहां सतगुरु की पहचान नहीं है। सतगुरु के बिना पारब्रह्म से कोई नहीं मिला सकता। झूठे गुरु भी बनाए जाते हैं। कुछ स्वार्थी धनवान लोग अहंकार में चूर हो गए है और उन्हें मौत भी नजर नहीं आती। ऐसे धर्मों को चलाने वाले ट्रस्टी हैं। हर धार्मिक संस्था के सदस्य

हुवल्ला हुल्लजी लाअिलाह अिल्ला हुव ज् आलिमुलौबि वश्शहादति ज् हुवर्रहमानुर्रहीम। (२२)

हुवल्लाहुल्लजी ला अिलाह अिल्ला हुव् ज अल्मलिकुल् कुद्दुसुस्सलामुल् मुअ्मिनुल्–मुहैमिनुल–अजीजुल–जब्बारुल–मुतकब्बिरु त् सुबहानल्लाहि अम्मा युशरिकून (२३)

हुवल्लाहुल्ल – खालिकुल बारिअुल मुसौविरु लहुल अस्माअुल हुसना त युसब्बिहु लह मा फिस्समावाति वलअजि ज् व हुवल अजीजुल हकीमु (२४)

कुरान सिपारा २८ सूरत ५९ आयत २२, २३, २४

Nijanand App

वह लोग उनको ही परमात्मा मान बैठे हैं, जहां से उनके मिटने वाले शरीर की इच्छाएं पूरी होती हैं।

सच्चिदानन्द ही अल्लाह है पैदा करने वाला, बनाने वाला और सूरत देने (Designer)वाला है। उसी के लिए यह अच्छे–अच्छे नाम कहे है। जो भी वस्तु आकाश और धरती में है, उसका ध्यान करती है और वह सच्चिदानंद प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी है।

संसार के सब धर्मो के धर्म–ग्रन्थ तो एक पारब्रह्म की पूजा को ही सच्चे सुख और आनन्द को देने वाली पूजा बताते हैं तो फिर यह सारा संसार आज कहां भटक गया है?

खूब खोजा और देखा तो संसार का हर मानव धर्म की आड़ में गुलामी की जंजीरों में इस तरह जकड़ा है कि उनको साधारण मनुष्य तो क्या जगत के देवी–देवता और भगवान भी नहीं छुड़ा पायेंगे। स्वयं पारब्रह्म के सिवाय यह और किसी के बस का काम ही नहीं है।

क्योंकि यह स्वार्थ, लोभ, मोह, अहंकार में फंसे हुए और झूठे ज्ञान के पढ़े लोग ही आज गुरू बन बैठे है, जिन्होंने हकीकत में सत्य को ढांप कर झूठ को परमात्मा बना कर हर धर्म में प्रपंच से ही धर्म चला रखे है, और उनके अनुयायी (चेले) शिष्य परमात्मा को छोड़ बैठे हैं, क्योंकि लोग गुरुओं को ही परमात्मा दिलाने वाला समझ बैठे हैं। किसी को भी यहां सतगुरु की पहचान नहीं है। सतगुरु के बिना पारब्रह्म से कोई नहीं मिला सकता। झूठे गुरु भी बनाए जाते हैं। कुछ स्वार्थी धनवान लोग अहंकार में चूर हो गए है और उन्हें मौत भी नजर नहीं आती। ऐसे धर्मो को चलाने वाले ट्रस्टी हैं। हर धार्मिक संस्था के सदस्य

हुवल्ला हुल्लजी लाअिलाह अिल्ला हुव ज् आलिमुलौबि वश्शहादति ज् हुवर्रहमानुर्रहीम। (२२)

हुवल्लाहुल्लजी ला अिलाह अिल्ला हुव् ज अल्मलिकुल् कुछ्सुस्सलामुल् मुअमिनुल्–मुहैमिनुल–अजीजुल–जब्बारुल–मुतकब्बिरु त् सुबहानल्लाहि अम्मा युशरिकून (२३)

हुवल्लाहुल्ल – खालिकुल बारिअुल मुसौविरु लहुल अस्माअुल हुसना त युसब्बिहु लह मा फिस्समावाति वलअजि ज् व हुवल अजीजुल हकीमु (२४)

कुरान सिपारा २८ सूरत ५९ आयत २२, २३, २४

Nijanand App

प्रबन्धक है जिन्हें खुद सत्य धर्म का पता नहीं होता, परन्तु अपने पैसे के बल से सदस्यता और पद खरीद कर अपनी सत्ता बनाकर बैठ जाते हैं। और फिर अपनी मर्जी पर चलने वाला गुरु महाराज चाहे उसे उस धर्म के दो अक्षरों का ज्ञान भी न हो, परन्तु प्रबन्धक कमेटी के सदस्यों की जी हजूरी करके गुरु बन जाता है तो धर्म के प्रचारक और चेले सिवाय झूठ के पूजक नहीं होंगें तो और क्या होगा स्वयं सोचें यह दूसरी महा भूल है।

अब तो साफ जाहिर हो गया कि यदि सत्य तक पहुंचना है तो आज के गुरुओं और गादी धारियों के उलटा और उनके अंगरक्षक झूठे, मान, मरातबे के पुजारी धनवानों के विरुद्ध, जो समाज और बिरादरी के भी ठेकेदार बने फिरते है, चल कर ही सत्य की राह पर चलना होगा?

यही तो मेरे सतगुरु जी ने ज्ञान दिया था जो अब समझ में आने लगा कि हकीकत में यह ज्ञान तो मनुष्य तन में आने पर केवल वह सच्चिदानंद की शक्ति ही दे सकती है, तो अपने सतगुरु की पहचान हुई और मैनें इस रास्ते पर चलने के लिए कमर कस ली।

यहां देखा कि आज का धार्मिक समाज अनेक देवी–देवताओं और महापुरूषों को ही परमात्मा मान का पूजा कर रहा है।

माहेश्वर तन्त्र तथा पुराण संहिता के प्रमाणों से यह सिद्ध है कि ब्रज और रास के बाद अक्षरातीत पूर्ण ब्रह्म अपने आवेश स्वरूप के द्वारा इस २८ वें कलियुग में आए हुए हैं, तथा उनके साथ उनकी आत्माएं और अक्षर ब्रह्म की आत्मा भी है इसलिए इस २८ वें कलियुग की बहुत महिमा गाई गई है। यह कलियुग (२८ वां) धन्य है, कलियुग धन्य है, कलियुग धन्य है, जिसमें अक्षरातीत की प्रियाओं की सूरताएं आई हुई हैं।

पुराण संहिता ३२/१

पूर्ण ब्रह्म दो तनों में बैठकर आत्माओं को जागृत करने की लीला करेंगे। इसका वर्णन भी पुराण संहिता में किया गया है।

जब कभी आत्माएं मोह सागर में डूब जायेंगी। उनके उद्धार के लिए सुन्दरी का सनातन अधिकार है। इन्दिरा (इन्द्रावती) की सहायता से वे जागृत करने का कार्य करेंगी। स्वामिनी (श्यामा जी) की सूरता सुन्दर बाई के अंदर होगी (श्यामा जी का नाम ही सुन्दर बाई होगा)।

Nijanand App

श्री सुन्दर बाई श्यामा जी अवतार

प्र० हि० ५/१

सूर्य की किरणों की भांति अक्षरातीत की हजारों आत्माएं हैं। सुन्दरी नामक सुरता निश्चय ही स्वामिनी (श्यामा जी) है। वह सुन्दर बाई सभी वासनाओं को जागृत करेंगी। इसलिए इस मार्ग में सुन्दर बाई ही सतगुरू हैं (श्यामा जी ही सब के सुभान है)

पुराण संहिता के इस कथन से यह सिद्ध है कि सच्चिदानन्द पारब्रह्म इस दुनिया में जब अपनी आत्माओं को माया की फरामोशी से जागृत करने के लिए दो तनों में लीला करेंगे, तब पहला तन सुन्दर बाई (श्री देवचन्द्र जी) का होगा जिससे तारतम ज्ञान अवतरित होगा तथा पुनः अक्षरातीत पूर्णब्रह्म श्यामा जी के साथ श्री इन्द्रावती (श्री मेहेराज) के तन में विराजमान होंगे, तो सभी आत्माओं को जगाने वाला ज्ञान लायेंगे। यद्यपि इस दुनियां में जागृत करने की शोभा तो श्री इन्द्रावती जी को मिलेगी, लेकिन उनके अन्दर सुन्दरबाई अपने धनी के साथ

कलिर्धन्यः कलिर्धन्यः कलिर्धन्यो महेश्वर ।

यत्र कृष्ण प्रियाणां च वासनाः समुपाविशन् ।।

पु० सं० ३२/१

यदा कदाचिन्मज्जेत मोहाम्भोधौ सखीगणः।

तदुद्धाराय सुन्दर्या अधिकारः सनातनः।।

साहाय्यमिन्दिरायाश्च लब्ध्वा कार्यं करिष्यति।

स्वामिनी वासना साक्षादाविष्टा सुन्दरी मनः।

सूर्य संख्या सहस्राणि वासनाः कृष्णयोषिताम्।।

सुन्दर्याख्या तु या वृतिस्तया वै स्वामिनी हि सा।

प्रपञ्चलीलानुभवं करोति न पृथक् स्थिता।

देहाध्यासे महादुःखमहन्तामतोदभ्वम्।।

बोधयिष्यति सा सर्वाः वासनाः कृष्णयोषिताम्।

तस्मादवेहि मार्गोऽस्मिन्सुन्दरीमेव सद्गुरुम्।।

पु० सं० ३४/१३, ४३, ४४, ४६, ४६

Nijanand App

विराजमान होकर लीला करेंगी।

पारब्रह्म स्पष्ट रूप से कब और कहां प्रगट हो कर लीला करेंगे, इसका वर्णन भविष्योत्तर पुराण में किया गया है। ब्रह्मा जी ने कहा–हे नारद! भयंकर कलियुग के आने पर मनुष्य का आचरण दुष्ट हो जायेगा और योगी भी दुष्ट चित्त वाले होंगे। संसार में परस्पर विरोध फैल जायेगा। द्विज (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) दुष्ट कर्म करने वाले होंगे और विशेष कर राजाओं में चरित्रहीनता आ जायेगी। देश देश और गांव–गांव में कष्ट बढ़ जायेंगे। साधु लोग दुःखी होंगे। अपने धर्म को छोड़ कर लोग दूसरे धर्म का आश्रय लेंगे। देवताओं का देवत्व भी नष्ट हो जायेगा और उनका आर्शीवाद भी नहीं रहेगा। मनुष्यों की बुद्धि धर्म से विपरीत हो जायेगी और पृथ्वी पर म्लेच्छों के राज्य का विस्तार हो जायेगा। हिन्दु और मुसलमान एक दूसरे के विरोधी होंगे और जब औरंगजेब का राज्य होगा, तब विक्रम सम्वत् १७३८ होगा। उस समय अक्षर ब्रह्म से भी परे सच्चिदानन्द पूर्ण ब्रह्म की शक्ति भारत में श्री इन्द्रावती जी के अंदर बुद्ध निष्कलंक अवतार रूप से अवतरित होगी। वहां निष्कलंक बुद्ध क्षात्र धर्म से युक्त होकर निष्कलंक रूप से चित्रकूट के सुन्दर प्रदेश (पन्ना) में प्रगट होंगे। वे वर्णाश्रम धर्म (निजानन्द) की रक्षा तथा मन्दिरों की स्थापना कर संसार को प्रसन्न करेंगे। वे सब की आत्मा, विश्व ज्योति पुराण पुरुष पुरुषोतम है। म्लेच्छों का नाश करने वाले बुद्ध ही होंगे और श्री विजियाभिनन्द नाम से संसार में प्रसिद्ध होंगे।

भविष्य उत्तर पु० उ० ख० अ० ७२

बुद्धगीता

व्याभिचारो मनुष्याणां यतीनां दुष्ट चेतसाम्।
रौद्रे कलियुगे प्राप्ते सर्वधर्म विवर्जिते।।
परस्परं विरोधत्वं द्विजानां दुष्ट कर्मणाम्।
राज्ञां चैव विशेषेण दुर्बलत्वं च जायते।
देशे ग्रामे महत्कष्टं सीदन्ति साधवो यदा।
म्लेच्छ धर्म प्रवृतौ च लोक बुद्धिः प्रजायते।।
महीतले च म्लेच्छानां राज्यवंशः प्रवर्तते।
परस्परं विरोधे च अवरङाख्यो भवेद्यदा।।

Nijanand App

बुद्ध गीता में भी पारब्रह्म के इस कलियुग में अवतरित होने का वर्णन है। जिस समय कलियुग में देव मन्दिरों और तीर्थ स्थानों का पतन होने लगेगा, तब बुद्ध (निष्कलंक) स्वरूप प्रगट होंगे, इस तरह की मेरी धारणा है। वह कलियुग में निष्कलंक बुद्धि से युक्त होने के कारण बुद्ध निष्कलंक स्वरूप और पूर्णब्रह्म कहलायेंगे और सब ज्ञान के भेद जानने वाले होंगे।

हरिवंश पुराण भविष्य पर्व अध्याय ४ में कहा गया है कि कभी न होने वाले वे ब्रह्म मुनि कलियुग में अवतरित होंगे, जो एकमात्र प्रधान पुरुष (अक्षरातीत) के ही आश्रय में रहने वाले होंगे और उनको छोड़कर अन्य किसी की भी उपासना नहीं करेंगे।

विक्रमस्य गतेशब्दे सप्तदशाष्टत्रिकयदा।
तदायं सच्चिदानन्दोऽक्षरात्परतः परः।।
भारते चेन्दिरायां स बुद्धः आविर्भविष्यति।
स बुद्ध कल्कि रूपेण क्षात्र धर्मेण तत्परः।।
चित्रकूटे वने रम्ये सः वै तत्र भविष्यति।
वर्णाश्रमाणां धर्मस्य स्थापनं वै करिष्यति।।
देवानां स्थापनं चैव प्रसादं च करिष्यति।
विश्वात्मा विश्व ज्योतिः पुराणः पुरुषोत्तमः।।
विश्वकृत विश्वरुपश्च विश्वस्य हृदयं विभुः ।
म्लेच्छानां नाशको देवो बुद्ध एवं भविष्यति।।
विजियाभिनन्दस्तत्र आनन्दे नन्दने वने।
साधूनां रक्षणार्थाय धर्मस्य पालनाय च।।
आनन्दायश्च लोकानां परस्परं हितैषिणाम्।

भविष्योत्तर पुराण उ० ख० अ० ७२ ब्रह्म प्र०

प्रासाद पतनं चैव तीर्थानां च यदा च्युतः।
तदा बुद्धो भविष्यतेति च मे निश्चया मतिः।।
बुद्धो वै कल्कि रुपोऽसावीश्वरश्च परात्परः।
ज्ञान पारं प्रापयिता भविष्यति कलौ युगे।।

बुद्धगीता

Nijanand App

सुन्दरी तन्त्र में कहा गया है कि पद्मावती और केन नदी के मध्य विन्ध्याचल पर्वत के एक क्षेत्र में इन्द्रावती नामक पारब्रह्म की आत्मा होगी। उस श्री इन्द्रावती जी के अंदर पारब्रह्म सच्चिदानन्द विराजमान होकर पूर्ण ब्रह्म कहलाएगें। इस सम्बन्ध में भविष्य दीपिका का यह कथन देखने योग्य है–

शालि वाहन शाका के १६०० वर्ष बीत जाने पर जीवों के उद्धार के लिए इस नश्वर ब्रह्मांड में कल्कि (निष्कलंक) ज्ञान को धारण करने वाले पूर्ण ब्रह्म का अवतरण होगा।

भविष्य दीपिका अ० ३

सम्वत् १७३५ में हरिद्वार में सभी धर्माचार्यों ने श्री प्राणनाथ जी को "निष्कलंक बुद्ध अवतार" के रूप में माना। उस समय तक शक संवत् के १६०० वर्ष व्यतीत हो चुके थे।

यद्यपि कलियुग की वास्तविक उम्र ४३२०० वर्ष है, किन्तु पापों के कारण सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण के हिसाब से कलियुग की उम्र कम हो जाती है। इस विषय में कबीर जी कहते हैं–

बावन वीर कबीर कहाऊं, भवसागर के जीव छुड़ाऊं।

बरस पांच हजार सौ पांचा, तब यह सब्द होयेगा साचा।।

ग्रहण लगे चौंतीस सौ बारा, कलयुग लेखा होई निखारा।

बाकी बचे रसातल जाई, सत्य नाम निज रहे ठहराई।।

सवा सौ बरस ग्रहण निरधारा, आगम सत्य कबीर पुकारा।

इस प्रकार ३४१२ X १२५ = ४२६५००

४३२००० – ४२६५०० = ५५०० वर्ष

अभाविनो भविष्यन्ति मुनयो ब्रह्मरूपिणः।

उत्पन्नाः ये कृतयुगे प्रधान पुरुषाऽश्रयाः।।

हरिवंश पुराण भविष्य पुराण अ०४ श्लोक २०

पद्मावती केन मध्ये विन्ध्य पृष्ठे विराजिता।

इन्द्रावती नाम सा देवी भविष्यति कलौ युगे।।

सुन्दरी तन्त्र

Nijanand App

संवत् १७३५ तक कलयुग के ४६६० वर्ष बीत चुके थे। इस प्रकार संवत १७३५ में विजियाभिनन्द निष्कलंक, पूर्ण ब्रह्म श्री प्राणनाथ जी का हरिद्वार में जाहिर होना सिद्ध हो जाता है।

सास्त्रे आवरदा कही कलिजुग की, चार लाख बत्तीस हजार।
काटे दिन पापें लिख्या माहें शास्त्रों, सो पाईए अर्थअन्दर के विचार।।
कलिजुगे चेहेन रे अंत के सब किए, लोक बतावें अजूं दूर अंत।
अरथ अंदर का कोई न पावहीं, बारे अरथ बाहेर के ले डूबत।।
सोलह सै लागा रे साका सालिवाहन का, संवत सत्रह सै पैंतीस।
बैठाने साका विजियाभिनन्द का, यूं कहे सास्त्र और ज्योतिष।।
प्रगटे निसान धुमरकेतु खय मास, पर सुध न करे अजूं कोई इत।
वेगे ने पधारो रे बुध जी या समे, पुकार कहे श्री महामत।।

कि० ५८/१७, १८, १६, २१

शास्त्रों में कलियुग की उम्र चार लाख बत्तीस हजार वर्ष कही गई है, किन्तु यदि शास्त्रों के बातूनी मायनों पर विचार किया जाए तो यह सिद्ध होता है कि पापों के कारण कलियुग की उम्र कम हो जाती है।

कलियुग के अंत के सारे निशान प्रगट हो चुके हैं, लेकिन दुनियां के लोग यही समझ रहे है कि अभी आखिरत का समय नहीं आया है। लोग श्लोकों के बारह प्रकार के अर्थ करके जाहिरी भावों में ही फंसे रहते हैं। कोई भी उनके बातूनी मायनों को नहीं समझता।

शालिवाहन का शक सवत् १६०० और विक्रमी संवत् १७३५ पूरा होगया है। अब शास्त्रों और ज्योतिष के अनुसार श्री विजियाभिनन्द निष्कलंक बुद्ध अवतार का संवत् शुरू होना है। निष्कलंक बुद्ध अवतार के जाहिर होने का समय आ गया है।

शालिवाहन शाकात् तु गत षोडशकं शतम्।
जीवोद्धाराय ब्रह्माण्डे कल्किः प्रादुर्भविष्यति।।

भविष्य दीपिक अ० ३

Nijanand App

धूम्रकेतु के निशान भी प्रगट हो गए हैं और ग्यारह मास का यह वर्ष भी हुआ है, लेकिन अभी भी किसी को सुध नहीं है। श्री महामति जी पुकार–पुकार कर कह रहे है कि हे दुनियां वालों और ब्रह्मसृष्टियों ! बुद्ध निष्कलंक (पूर्णब्रह्म) आ चुके हैं।

पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द हिन्दू, मुसलमान और ईसाई सभी के हैं। श्री प्राणनाथ जी को पूर्ण ब्रह्म तभी माना जा सकता है, जब उनके आगमन की साक्षी कुरान एवं बाइबिल में भी हो।

अल्लाह मुर्दो को कयामत के दिन उठायेगा और फिर सभी उसी (अल्लाह की अदालत) की तरफ जायेंगे।

मंजिल २ सिपारा ७ सूरत ६ आयत ३६

शरीर को कब्र कहा गया है, उसमें स्थित जीव ही मुर्दा है। जब इमाम मेहंदी जागृत बुध तारतम का ज्ञान लायेंगे तो जीव भी जागृत हो कर अपनी और पारब्रह्म की पहचान कर लेंगे। इसी को कब्रों से मुर्दो को खड़ा करना कहा गया है, किन्तु ऐसा तभी होगा जब खुदा स्वयं इमाम मेहंदी के रूप में जागृत बुद्धि का ज्ञान ले कर इस नासूत में आए। इस आयत से कयामत के समय में इमाम मेहेंदी का आना सिद्ध होता है। अतः कयामत का समय मालूम होने पर अल्लाह (इमाम

व यस्तऽजिलूनक बिलअजावि व लैंयुख्लिफल्लाहु
वऽदहु त् व अिन्न यौमन् अिन्द रब्बिक
कअल्फि सनतिम्मिम्मा तअुछून।

मं० ४ सि० १७ सू० २२ आ० ४७

वल्मौता यब् असुहु मुल्लाह सुम्म अिलैहि युर्जअुन।

मंजिल २ सिपारा ७ सूरत ६ आयत ३६

व यकूलून मता हाजल्वऽदु अिन् कुन्तुम सादिकीन (२६) कुल लकुम मीआदु यौमिल्ला तस्त अखिरुन अन्हु साअतौंव ला तस्तक्दिमून (३०)

मं० ५ सि० २२ सू० ३४ आ० २६, ३०

या अैयुहल्लजीन आमनुन्तकुल्लाह वल्तन्जुर नफसुम्मा कद्दमत् लिगदिन् ज वत्तकुल्लाह त् अिन्नल्लाह खबीरूम् बिमा तऽमलून।

मं० ७ सि० २८ सू० ५६ आ० १८

Nijanand App

मेहंदी) के आने का समय भी मालूम हो जायेगा।

और यह काफिर तुम से पूछते हैं कि बताओ! अगर तुम सच्चे हो तो यह कयामत का वादा कब पूरा होगा। कह दो कि तुम्हारे साथ एक दिन का वायदा है। तुम न उसके एक घड़ी पीछे रह सकोगे और न आगे बढ़ सकोगे।

मंजिल ५ सिपारा २२ सूरत ३४ आयत २६, ३०

अल्लाहतआला पारब्रह्म ने जबराईल के द्वारा रसूल मुहम्मद साहिब के पास यह सन्देश भिजवाया कि कयामत कल को होगी, जिसमें एक घड़ी भी न तो कम होगी और न अधिक होगी।

हे ईमान लाने वालों! अल्लाह का डर रखो और कोई भी व्यक्ति हो, वह देख ले कि उसने कल के लिए क्या भेजा है और अल्लाह का डर रखो।

मंजिल ७ सिपारा २८ सूरत ५६ आयत १८

इस आयत से यह स्पष्ट हो जाता है कि कयामत कल को ही होगी।

और ए पैगम्बर! तुमसे सजा की जल्दी मजा रहे है (कि कहां है तुम्हारा खुदाई आजाब?) और अल्लाह तो कभी अपना वादा खिलाफी नहीं करेगा। और (कुछ शक नहीं कि) तुम्हारे परवरदिगार के यहां का एक दिन तुम लोगों की गिनती के अनुसार हजार वर्ष के बराबर है।

मंजिल ४ सिपारा १७ सूरत २२ आयत ४७

दुनिया के एक हजार वर्षों के बराबर एक रात होती है। (१०००+१००=११००) अर्थात् ग्यारवीं सदी में इमाम मेंहदी अल्लाह तआला का प्रगट होना सिद्ध होता है।

हिन्दु धर्म ग्रन्थों की गणना के अनुसार शालिवाहन शाका १६०० एवं विक्रम सम्वत् १७३५ में विजियाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार के जाहिर होने का जो समय है, कुरान के अनुसार भी वही समय १०६० हिजरी सिद्ध होता है, जिससे पता चलता है कि जो समय श्री प्राणनाथ जी के प्रगट होने का हिन्दु धर्म ग्रन्थों में दिया है, वह समय कुरान के अनुसार भी है। पुराण संहिता की ही तरह कुरान में भी दो जामों (ईसारूह अल्ला और इमाम मेंहदी) के अंदर पारब्रह्म के द्वारा लीला करने का वर्णन है।

बेशक पहाड़ सफा और मरवा अल्लाह कि निशानियों में से है तो जो व्यक्ति

Nijanand App

काबे का हज या उमराह करे, तो उस पर इन दोनों के बीच फेरे (तवाफ) करने में कोई गुनाह नहीं है।

मंजिल १ सिपारा २ सूरत २ आयत १५८

सफा और मरवा नामक दोनों पहाड़ सतगुरु धनी भी देवचन्द्र जी और श्री प्राणनाथ (ईसा रुह अल्लाह और इमाम मेहंदी) के प्रतीक हैं।

लिखे पहाड़ कर ईसा महंमद, ए निसान आखिर के ।।

हक बका अर्स देखावहीं, दिन जाहेर करसी ए।।

खुलासा प्र० ३ चौ० १७

कुरान में लिखा है कि ईसा रूह अल्लाह (श्री श्यामा जी) और इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथ जी) की महिमा आखिरी वक्त में सब से बड़ी होगी, पहाड़ों जैसी। यहां पहाड़ का अर्थ यह है कि उनका ज्ञान बहुत बड़ा होगा और जिस प्रकार ऊँचे पहाड़ पर पहुँचना बहुत कठिन है, उसी प्रकार उनके ज्ञान को समझना भी कठिन है। वे ही अखंड परमधाम की बात को यहां आकर पहचान करा कर कयामत के दिन जाहिर करेंगे।

(अल्लाह ने कहा) जिकरिया! हम तुझे एक लड़के की शुभ सूचना देते हैं, जिसका नाम यहिया होगा। (और इससे पहले) हमने इस नाम का कोई ऐसे सुलक्षणों वाला लड़का पैदा नहीं किया।

मं० ४ सि० १६ सू० १६ आ० ६

जिकरिया सतगुरू धनी श्री देवचन्द्र जी को कहा गया है और यहिया श्री

अिन्नस्सफा वल्मर्वत मिन् शआअिरिल्ला हि ज फ मन् हज्जल्वैत
अविऽतमर फ ला जुनाह अलैहि अय्यत्तव्वफ बिहिमा।

मं० १ सि० २ सू० २ आ० १५८

प्राण रुपाः प्रियाः सर्वास्तासां नाथोऽक्षरात परः।
तेनाऽसौ प्राणनाथो हि नाम्ना ख्यातो प्रियेश्वरः।।

(आनन्दसागर)

या जकरिय्या अिन्ना नुबश्शिरुक बिगुलामिनि समुह यहया ला लम् नजअल् लह मिन् कब्लु सम्यियन्।

मं० ४ सि० १६ सू० १६ आ० ७

Nijanand App

प्राणनाथ जी को कहा गया है। श्री देवचन्द्र जी के नजरी पुत्र मेहराज जी हैं। यहिया (श्री प्राणनाथ जी) के समान महान गुण वाला कोई भी नहीं हुआ। इसी सिपारे की ६५ वी आयत में यह बात कही गई है। बाइबिल के (लूका) १ : १६ में भी यहिया (श्री प्राणनाथ जी) के बारे में कहा गया है–

और वह असंख्यों को पारब्रह्म के प्रति झुकायेगा।

पैदा किया एहिया का देख, आगूं वह मैं नाम एक।
बीच ल्याए जादल मिसल, भांत बुजरकी नाम नकल

बड़ा कयामत नामा १४/१०

खुदा ने कहा कि इस यहिया बेटे को देखो, जो तुम्हारे आगे है और वह मेरा ही स्वरूप है। मेरा नाम ही इसका नाम है। यह किस्सा जादल मिसल किताब में लिखा है कि यहिया पैगम्बर को खुदा के समान ही बताया गया है। खुदा ने कहा कि मेरा नाम (प्राणनाथ) ही इसका नाम होगा। और मेरी शक्ति और गुण इसके होंगे।

प्राणरूप प्रियाएं है। उनके प्रियतम अक्षर से भी परे अक्षरातीत हैं, इसलिए प्रियाओं के पति वे अक्षरातीत प्राणनाथ नाम से प्रसिद्ध हैं। हदीसों में भी यह बात कही गई है कि कयामत के दिन तुम अपने अल्लाह का दीदार करोगे और कोई दिक्कत नहीं होगी। मुकम्मल सही बुखारी हजरत इमाम

सफा ६६४/६

रूह अल्ला दो जामे पेहेरसी, दूसरे ऊपर मुददार।
सोई इमाम मेहेंदी, याकी बुजरकी बेसुमार।।

किरंतन १०८/७

बाइबिल में श्री प्राणनाथ जी (Supereme Truth God) के आगमन के बारे में यह बात लिखी है कि एक शक्तिशाली शोर तथा सब से बड़े हुक्म के फरिश्ते तथा (परमात्मा की) महान तुरही की आवाज से युक्त, आत्मा को झकझोरने वाली तेज आवाज के साथ पारब्रह्म परमधाम से स्वयं आयेंगे और विश्वास करने वाले जो मर चुके हैं, पारब्रह्म से मिलने के लिए सब से पहले उठेंगे। The ssalonians 4:16

And he will persuade many of a few to turn to the Lord his God.

Nijanand App

जागृत बुद्धि के फरिश्ते की वाणी को पारब्रह्म की तुरही कहा गया है। Archangle का अर्थ होता है Highest Order (सर्वोच्च हुक्म) अर्थात् जब पारब्रह्म प्राणनाथ इस दुनियां में आयेंगे, तो उनके साथ आत्मा को झकझोरने वाला जागृत बुद्धि का ज्ञान, हुक्म की शक्ति तथा असराफील फरिश्ता होगा।

श्री कृष्ण के पूर्ण ब्रह्म होने के प्रमाण कुरान, बाइबिल में कहीं भी नहीं हैं किन्तु श्री प्राणनाथ जी के आने से पहले ही सभी धर्म ग्रन्थों में उनके पूर्णब्रह्म होने के प्रमाण हैं।

ओ उरझे नाम जुदे धर, रब आलम का आया आखिर
अपनी अपनी में समझे सब, जुदा न रहया कोई अब।।

बड़ा कयामत नामा १/३०

दुनियां के सभी धर्म वाले पारब्रह्म के अलग अलग नामों में उलझे हुए हैं, जब कि सारे जगत के मालिक पारब्रह्म आ गए है। इंजील में ईसा और तौरेत (यहूदी ग्रन्थ) में मूसा के आने का वर्णन है।

बड़ा कयामत नामा १/२८–२९

ये सभी नाम और साहेदी (साक्षी) जुदा–जुदा ग्रन्थों में श्री प्राणनाथ जी के लिए ही कही गई है। अब सभी लोग अपनी अपनी भाषा और अपने अपने ग्रन्थों से समझ जायेंगे। पारब्रह्म श्री प्राणनाथ जी ने सब को उनकी भाषा और उनके ही ग्रन्थों से समझाया, इसलिए अब कोई भी जुदा नहीं रहेगा।

तुम ही उतर आए अर्स से, इत तुम ही कियो मिलाप।
तुम ही दई सुध अर्स की, ज्यों अर्स में हो आप ।।

सिनगार २३/३१

हे धाम धनी श्री प्राणनाथ! अब आप पूर्ण शक्तियों सहित (प्राणनाथ के) स्वरूप में परमधाम से आए हैं और आपने ही माया में भटकती हुई अपनी रूहों का हाथ पकड़ा है। परमधाम में जो आपका निज स्वरूप है, उसकी और निजघर की सुध भी आपने ही हमें निज बुद्धि से दी है।

For the Lord himself will come down from heaven with a mighty shoutand with the soul stirring cry of the archangel and the great trumpet call of god. And the believers who are dead will be the first to rise to meet the Lord.

The ssolonians 4:16

Nijanand App

श्री प्राणनाथ किसी व्यक्ति विशेष का नाम नहीं है, बल्कि "श्री प्राणनाथ निज मूल पति" हमारी आत्मा का अनादि अखंड पति ही प्राणनाथ है। उनका साक्षात् स्वरूप जब श्री मेहाराज जी में विराजमान हुआ तभी से उनको प्राणनाथ कहा गया। इससे पहले वे मात्र "मेहराज" थे।

सो तो अब जाहिर भए सब विध वतन सहित।
सुर असुर सबो को ए पति, सब पर एकै दया।।
देत दीदार सबन को सांई, जिनहूं जैसा चाहया।

किरंतन ५६/१६

श्री प्राणनाथ जी ही हिन्दु, मुसलमान, सिख, ईसाई सब के परमात्मा हैं। वे सब पर एक समान नजरे कर्म करते हैं। जो उनको जिस तरह पहचानता है, उनको पारब्रह्म श्री प्राणनाथ जी उसी रूप में मिलते हैं।

जिन जैसा चीन्हा महंमद को, तासों तैसी रखी चिन्हार।
यों बदला पाए देखिए, या जीत या हार।।

मा० सा० प्र० १२ चौ० ३५

जो लों न चीन्हें महंमद को, तो लो सुध ना जमाने।
तब लग सुध न बका फना, ना सुध नफा नुकसाने।।

मा० सा० प्र० १२ चौ० ५०

ब्रह्मांड को भान्यो खिलाफ, सब जहान को कियो मिलाप।
ग्वाही खुदा की खुदा देवे, करे बयान हुकम सिर लेवे।।

बड़ा कयामत नामा १/३३

श्री प्राणनाथ जी ने संसार के सभी ग्रन्थों के झगड़े मिटाए और उनको **एक** झंडे के नीचे लाए। यह खुद खुदा हैं। खुद अपनी गवाही अपने मुख से कहते हुए भी हुक्म का परदा दे देते हैं।

साहेदी देवे खुदाए की, सोई खुदा जान।
सो साहेदी किन न लई, हाए हाए मगज न पाया कुरान।।

खिलवत १२/३३

कुरान में लिखा है कि खुदा की गवाही खुद खुदा ही देगा अर्थात् श्री प्राणनाथ

Nijanand App

जी खुद खुदा (पारब्रह्म) हैं। इस गवाही को आज तक किसी ने क्यों नहीं जाना? कुरान के इस रहस्य को किसी ने भी क्यों नहीं समझा?

तो जोरा किया दज्जाल ने, देखो आए नामे वसीयत।

लिखाए महंमद मेंहेदिए, तो भी देखें न पोहोंची कयामत।।

खुलासा १/३२

मुहम्मद साहब ने कुरान में पहले से ही लिखवा रखा है कि जब इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथ जी जाहिर होंगे, तब उनके मोमिन शरीयत और हुकूमत के बादशाह को पैगाम देंगे और उन पर कष्ट आयेगा। देखिए! अब वही समय आ गया है। उसी तरह से ये वसीयतनामें आए हैं, जिनसे यह जाहिर हो गया है, कि पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानन्द इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथ जी प्रगट हो गए हैं और कयामत आ गई है।

इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथ जी के मोमिन शरीयत और हुकूमत के बादशाह औरंगजेब को जो पैगाम देंगे, इसका वर्णन कुरान में मूसा, हारुन और फिरौन के कथानक द्वारा दिया गया है। मूसा श्री प्राणनाथ जी को कहा गया है। हारुन श्री छत्रसाल जी हैं और फिरौन औरंगजेब बादशाह है। इस सम्बन्ध में कुरान के ये अंश देखिए–

सिपारा ६, सूरा ७, आयत १०३, से १५४ तक
सिपारा ११, सूरा १०, आयत ७५, से ६० तक
सिपारा १६, सूरा २०, आयत २१, से ७६ तक

औरंगजेब के द्वारा इमाम मेंहदी के आदेश को न मानने का वर्णन सिपारा १६ सूरा २० आयत ५६ में है। अर्थात् हमने फिरौन को अपनी सभी निशानियां दिखलाई, इस पर भी वह झुठलाता और इन्कार ही करता रहा।

एही बड़ी इसारत, इमाम की पेहेचान।

सबको सब समझावहीं, यों केहेवत है कुरान।।

खुलासा १३/७८

इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथ जी की यह ही बड़ी पहचान होगी कि वे सभी धर्म वालों को उनके ही धर्म ग्रन्थों से माएने खोल कर समझाएंगे। ऐसा कुरान

व लकद अरैनाहु आयातिना कुल्लहा फकज्जब ब अबा।

सि० १६ सूरा २० आयत ५६

Nijanand App

में लिखा है।

मुस्लिम को मुस्लिम की, हिंदुओं हिंदुओं की तर।
ए समझे सब अपनी मिने, जब आए इमाम आखिर।।

सनंघ ३२/२०

पूर्णब्रह्म श्री प्राणनाथ जी हिन्दू–मुसलमान सबके हैं। उन्होंने हिन्दूओं को उन्हीं के धर्मग्रन्थों गीता, भागवत, वेद, उपनिषद् आदि के द्वारा क्षर–अक्षर अक्षरातीत, अखंड ब्रज, रास तथा परमधाम की हकीकत को समझाया। इसी प्रकार मुसलमानों को उन्होंने ला इलाह इल्लल्लाह, अर्शे अजीम, कयामत के सातों निशान, अलिफ, लाम, मीम आदि हरुफे मुक्तेआत के भेद कुरान एवं तफसीर हुसैनी आदि के द्वारा समझाया।

नाम सारे जुदे धरे, ऊपर करी इसारत।
फुरमान खोल जाहेर करे, धनी जानियो तित।।

खुलासा १४/७

सभी ने पारब्रह्म के जुदे–जुदे नाम धारण कर उनके आने का संकेत दिया है। कुरान में लिखा है कि जो इसके भेदों को खोलेगा वहीं पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानन्द होगा। किसी से भी न होने वाला यह कार्य श्री प्राणनाथ जी ने किया। इसलिए वे ही निश्चित रुप से पूर्ण ब्रह्म हैं।

धनी माएने खोलसी, सत जानियो सोए।
साहेब बिना ए माएने, और खोल न सके कोए।।

खुलासा १४/६

एक मात्र पारब्रह्म ही कुरान के रहस्यों को खोलेंगे। यह तुम सत्य जानना। पारब्रह्म श्री प्राणनाथ जी के बिना अन्य कोई भी दूसरा इसके रहस्यों को नही खोल सकता है। अब प्रश्न उठता है कि भले ही पुराण संहिता, माहेश्वर तन्त्र और कुरान से स्पष्ट हो जाता है कि कलियुग में पूर्णब्रह्म अक्षरातीत आकर दो तनों में बैठ कर स्वयं अपनी पहचान कराएंगे, जो ग्रन्थों और कुरान में लिखाया था। वे जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान अपने साथ लाकर स्वयं अपनी आत्माओं को अपनी साहेबी और इश्क की पहचान कराएंगे और दुनिया जो आज दिन तक महाप्रलय में लय हो जाने वाले देवी–देवताओं के बनाए कर्मकाण्ड में फंसकर

Nijanand App

आवागमन के चक्कर में फंसी थी, उसको सर्वदा के लिए इस जन्म–मरण के चक्कर से छुड़ाकर योगमाया के अखण्ड ब्रह्माण्ड में अखण्ड मुक्ति देंगे और खुदा पूर्ण ब्रह्म की पहचान सबको कराएंगे। वह दो तनों (श्री इन्द्रावती और सुन्दरबाई, जो परमधाम की ही दो आत्माएं होंगी) में बैठकर (प्रवेश कर) अपना कार्य करेंगे।

तो, आइए। पहले तन जो सुन्दर बाई का (सतगुरु श्री देवचन्द्र जी) यहां पर उनको सम्वत् १६७८ श्रावन सुदी एकादशी सोमवार प्रातः ८१/२ बजे श्याम जी के मन्दिर, नौतनपुरी, जाम नगर में आकर दर्शन दिया और लगातार २–३ घण्टे के वार्तालाप में अपनी, अपने परमधाम के इश्क रब्द की पहचान कराई और बताया कि ब्रज, रास में हम तुम आए थे, तब मैंने जो तन धारण किया था, उसका नाम इस दुनिया की रीति के अनुसार कृष्ण रखा गया और तुम्हारा नाम राधिका हुआ। फिर रास के बाद तुम्हारी इच्छा पूर्ण नहीं हुई तो यह नया ब्रह्माण्ड बनाया। मैं तुम्हारे साथ था, पर तुमने मुझे नहीं पहचाना। तुम अपने आप को भी नहीं पहचान पाए और फिर स्वयं श्यामाजी की आत्मा जो श्री देवचन्द्र जी के तन में थी, के बारे में बताया कि तुम श्यामा जी सुन्दरबाई हो। अब अपने साथ को ढूंढकर लाओ, तब सब परमधाम वापिस चल सकेंगे। लगभग यह वार्ता श्री बीतक साहब की १० चौपाईयों में हैं, फिर अन्त में उन्हें कहा–अब जो पूछना है, पूछ लो! फिर इस तरह से कभी दर्शन नहीं होगा, तो श्री देवचन्द्र जी ने पूछा– धनी कहां जाओगे? तो उत्तर दिया–

"अन्दर तुम्हारे आकार के, आए के बैठे हम।"

यह अपनी पहचान के कहे तारतम बीज वचन। और फिर उस तन में जितनी लीला करनी थी, करके तन छोड़ने से पहले बता दिया कि अब मैं श्री इन्द्रावती के तन में बैठ कर शाकुण्डल और साकुमार को ढूढूंगा, कुरान के मारफत के तीस हजार शब्दों के भेद खोलूंगा, दुनियां को अखंड मुक्ति का ज्ञान दूंगा और अपनी लीला का सारा ज्ञान जाहेर करूंगा, फिर इन्द्रावती के तन में बैठकर सब काम किया। इस प्रसंग का बीतक साहिब में खुलासा है।

फिर कुरान में लिखे अनुसार जब इन्द्रावती जी हब्सा जेल में बैठीं, तो वहां छः माह तक रूदन किया और अपने पिया को खटरूती में पुकारा। वहां आकर साक्षात् युगल स्वरूप, श्री राज जी और श्यामा जी ने जो परमधाम में है, दर्शन दिया तो इन्द्रावती हैरान हो कर कहती है कि, हे धनी! आप तो देवचन्द जी

Nijanand App

के तन में आड़िका लीला करके कृष्ण का ही अपना रूप दर्शाते थे, और कृष्ण तो केवल योगमाया में ही अखण्ड है। आप तो परमधाम के स्वरूप हो तो मेरे से यह आड़ा क्यों किया।

पोते प्रगट पधारया छो, आडा देओ छो वृज ने रास।
इंद्रावती सूं अंतर कां कीधूं, तमे देओ मूने तेनो जवाब।।

खटरूती ८/६

आप साक्षात् सच्चिदानन्द युगल स्वरूप पधारे हो। हमें जगाने के लिए आप श्याम जी के मन्दिर में श्री देवचन्द्र जी के तन में विराजे। **हम आए हैं इतने काम, ब्रह्मसृष्टि लेने घर धाम** को पूरा करने के लिए उस तन में प्रवेश करने के बाद आडिका लीला करते रहे। तो अब आप ही बतायें कि यह ब्रज रास की लीला का नाटक करके आपने मुझसे आड़ा क्यों किया। उससे हम सब ने यह समझा कि कृष्ण ही हमारे पूर्ण ब्रह्म है। असल भेद तो अब खुला कि आपने जो वह लीला नित्य वृन्दावन में कृष्ण का भेष बनाकर की थी, वह कृष्ण का भेष केवल अक्षर को लीला दिखाने के लिए ही था। जो आज वहां अखंड है। वह परमधाम में नहीं, योगमाया में है, फिर अब साक्षात पधार कर भी वह लीला हमें कर के दिखाई। वह लीला करके दिखाने वाले आप अखंड घर के अक्षरातीत श्री राज जी महाराज हमारे प्राणनाथ हो। मैं तो आपकी अंगना इन्द्रावती हूं। मुझसे यह परदा (छल) क्यों किया? पहले तो मुझे उसका जवाब दो।

आपोपूं ओलखावी मारा वाला, दरपण दाखो छो प्राणनाथ।
दरपण नूं सूं काम पड़े, ज्यारे पेहेरयूं ते कंकण हाथ।।

खटरूती ८/१०

आपने, अब यहां (हब्सा में) मुझे निजघर से ले कर ब्रज, रास और इस ब्रह्माण्ड की हकीकत की पहचान कराई है और हाथ में शीशा लेकर भी दिखा रहे हो कि यदि मुझसे मिलना है तो मैं इस शीशे में हूं। जैसे शीशे में परछाई चमकती है, साक्षात् स्वरूप नहीं होता, उसी प्रकार आप साक्षात् स्वरूप श्री राजश्यामा जी हो और नित्य वृन्दावन में तो आप की परछाई (प्रतिबिम्ब) हैं, जो राधा और कृष्ण हैं और आपने ही बताया कि –

या विध लीला दोऊ करी, सिधारे वतन।

Nijanand App

ए ब्रह्मांड जो तीसरा, ले आए आपन।।

प्र० हि० बेहद वाणी चौ १२३

तो आप मेरे प्राणनाथ साक्षात् सामने हो, तो कृष्ण से अब हमारा क्या सम्बन्ध? उस कृष्ण नाम वाली लीला का क्या काम? अर्थात् जब कंकण हाथ में पहन लिया, फिर शीशे में दिखने वाले रुप की तो आवश्यकता ही नहीं।

कहे इंद्रावती अति उछरंगे, हमको लाड़ लड़ाए जी।

निरमल नेत्र किए जो आतम के, परदे दिए उड़ाए जी।।

प्रकास हिन्दुस्तानी ३६/६

इस प्रकार इन्द्रावती जी को पूरी पहचान करा कर उनके अन्दर युगल स्वरूप श्री प्राणनाथ जी महाराज विराजमान हुए। कुल वाणी कुलजम स्वरूप की कही जो इन्द्रावतीजी के मुख से कहलवाई, अब वे हम सब को कह रही हैं

आप पेहेचान कराई अपनी, लई अपने पास जगाए जी।

बड़ी बड़ाई दई आपथें, लई इंद्रावती कंठ लगाए जी।।

प्र० हि० ३६/७

इन्द्रावती जी अति उछरंग उमंग और खुशियों के साथ कहती हैं– हे साथ जी! इस माया के ब्रह्माण्ड में भी राजजी हमें अनेंकों प्रकार से लाड़ लड़ा रहे हैं (लाड लडाये हैं) मेरी आत्मा के सामने जो पर्दे पड़े थे कि मैं उनकी पहचान पहले (देवचन्द जी के तन में) नहीं कर सकी, अब उन्होंने अपनी पहचान खुद करा कर वह पर्दे उड़ा दिए, हटा दिए।

हम उनकी पेहचान नहीं कर सके। स्वयं अपनी पेहचान करा कर मुझ इन्द्रावती को जगा कर अपने चरणों में लिया अर्थात् मेरे अंदर विराजमान हो गए और पांचों शक्तियों सहित बैठ कर मुझे ही प्राणनाथ के रूप में जाहिर कर अपने से भी बड़ा बना कर बड़ाई दी। इस प्रकार धनी ने अपनी अंगना को कंठ लगा कर अपने धाम का प्यार दिया। फिर जो शास्त्र और कुरान इत्यादि सब ग्रन्थों में कहा था, वह दूसरे तन में बैठ कर पूरा किया और दुनियां में प्राणनाथ जी के रूप में जाहिर हो गए।

तो अब ग्रन्थों, कुरान और बाइबिल में जो लिखा था कि खुदा आ कर जो करेगा और कहेगा उसकी वाणी से लोग उनको पूर्ण ब्रह्म पहचानेंगे तो सबसे

Nijanand App

पहले १७३५ में वह हरिद्वार गए तो वहां जो हुआ वह इस प्रकार है–

शाका शालिवाहन का १६०० पूरा हो चुका था, तब भविष्य के ग्रन्थों के अनुसार हरिद्वार पहुंचे तो आदि सनातन धर्म के चारों सम्प्रदायों के आचार्य १० नाम सन्यास मत के आचार्य, खट दर्शनों के मानने वाले तथा चार वर्ण और चार आश्रमों के आचार्य जन मिल कर वह सब एक ओर इकट्ठे हो गए और स्वयं श्री प्राणनाथ जी, जो एक मानव के तन में पधारे थे। उनमें वार्ता हुई, आप श्री प्राणनाथ जी की सफेद वेशभूषा को देख कर आचार्य जनों को संशय हो गया कि इन्होंने भगवे वस्त्र क्यों नहीं पहने? लगता है यह हिन्दु धर्म में नहीं हैं तब स्वामी जी ने कहा कि आपके धर्म प्राचीन, पुरातन और अगाध हैं। हमने अभी आपके धर्मों में से किसी को भी धारण नहीं किया । इसलिए इस अवसर पर आपकी शरण में आए हैं कि आप में से जो मेरे जीव को भव से पार होने का रास्ता बता देगा, हम उसी धर्म के गुरू के चरणों में शीश झुका कर गुरू धारण कर लेंगे, तो सब धर्माचार्यों ने अपने–अपने धर्म की पद्धति बताई। परन्तु कोई भी बैकुण्ठ निराकार से आगे जाने के मार्ग का ज्ञान नहीं सुना सका, क्योंकि यहां जितने भी हिन्दुओं के धर्म हैं, वे शोर तो बहुत मचाते हैं। परन्तु मिथ्याजगत अष्टावरण, सात शून्य से आगे जाने का कोई रास्ता बताता ही नहीं है। तब सब धर्माचार्यों ने स्वामी जी को अपनी और अपने सम्प्रदाय की पहचान बताने को कहा और यह भी कहा कि उसके प्रमाण हमें ग्रन्थों से मिलने चाहिए। तब श्री जी ने अपनी पहचान हरिवंश पुराण के भविष्य पर्व अ० ४ श्लोक २०–२१ से कराई और अपना सम्प्रदाय निजानन्द सम्प्रदाय बताया और कहा कि हमारे सतगुरू निजानन्द हैं और उनके नाम से ही इस सम्प्रदाय का नाम निजानन्द सम्प्रदाय है और उन्होंने ही इस समप्रदाय को चलाया है। जिसका प्रमाण माहेश्वर तन्त्र पृ० ११३ में लिखा है। धर्मग्रन्थों के अनुसार प्राकृतिक रूप से धूम्रकेतु (पुच्छल तारा) उसी दिन उदय हुआ और उसी दिन वर्ष में एक माह कम हुआ। इससे

अभाविनो भविष्यन्ति मुनयो ब्रह्मरुपिणः।

उत्पन्ना ये कृतयुगे प्रधानपुरुषाऽश्रयाः।।

कथायोगेन तान्सर्वान् पुजयिष्यन्ति मानवाः।

यस्य पूजा प्रभावेण जीव सृष्टिः समुद्धरः।।

हरिवंश पुराण भविष्य पर्व ४/२०, २१

Nijanand App

सब धर्माचार्यों ने श्री प्राणनाथ जी को अक्षरातीत पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द मानकर शालिवाहन की ध्वजा को हटाकर श्री प्राणनाथ जी को विजियाभिनन्द निष्कलंक बुद्ध अवतार मान कर उनकी ध्वजा को फहरा दिया। श्री प्राणनाथ जी ने उनके ग्रन्थों के छुपे भेदों को खोलकर उनके संशय मिटा दिए।

कुरान में तथा बाइबिल में यह कहा गया है कि अल्लाह तआला (Supreme Truth God) स्वयं आकर सबका न्याय करेंगे।

आयत–निश्चय ही वे लोग घाटे में रहेंगे, जिन्होंने अल्लाह से मिलने को झूठलाया (इन्कार किया)। जब अचानक उन पर वह घड़ी आ जाएगी तो वे कहेंगे–हाय! अफसोस, हमसे इस बारे में कैसी भूल हुई और वे अपनी पीठों पर अपने (गुनाहों का) बोझ उठाए होंगे। देखो! कितना बुरा बोझ है, जो ये उठा रहे हैं।

मंजिल २, सिपारा ७, सूरत ६, आयत ३१

कद् खसिरल्लजीन कज्जबू बिलिकांअिल्लाहि

त हत्वा अिजा जा अत् हुमस्साअतु बगततन्

काल् या हस्रतना अला मा फर्रतना फीहा

ला व हुम् यह् मिलून औजार हुम् अला

जुहूरिहिम् त अला सा अ मा यजिरुन।

मं० २ सि० ७ सू० ६ आ० ३१

व यौम यहशुरुहूम् कअल्लम् यल्बसू अिल्ला

साअतम मिनन्नहारि यत आरफून बैनहुम् त कद्

खासिरल्लजीन कज्जबू बिलिकाअिल्लाहि व मा कानू मुहतदीन।

मं० ३ सि० ११ सू० १० आ० ४५

कल्ला अिन्नहुम् अर्रब्बिहिम् यौमअिजिल्

लमहजूबूनत (१५) सुम्म अिन्नहुम् लसालुल् जहीमि त.(१६)

सुम्म युकालु हाजल्लजी कुन्तुम् बिह तुकज्जिबून त.(१६)

मंजिल ७ सिपारा ३० सूरत ८३ आयत १५, १६, १७

Nijanand App

मैं आया हों अव्वल, आखिर आवेगा खुदाए।

काजी होए के बैठसी, करसी सबों कजाए।।

किरंतन प्र० १०८, चौ०८

इमाम मेहंदी के रूप में आने वाले खुदा को जो नहीं पहचानेंगे और न उनसे श्रद्धा रखेंगे, वे न्याय के दिन पश्चाताप करेंगे, और वह (अल्लाह) उन लोगों को जमा करेगा तो वे ऐसा ख्याल करेंगे कि (दुनिया में) वे एक घड़ी भर से ज्यादा नहीं रहे होंगे। आपस में एक–दूसरे को पहचानेंगे (लेकिन बेकार! क्योंकि कोई भी किसी को मदद न दे सकेगा) जिन लोगों ने (आखिरत में) अल्लाह से मिलने में इन्कार किया। वे बेशक घाटे में आ गए और वे रास्ता पाने वालों में न थे।

मंजिल ३ सिपारा ११ सूरत १० आयत ४५

ये लोग उस दिन अपने रब के दर्शन से रोक दिए जाएंगे फिर ये लोग दोजख में दाखिल होंगे। फिर कहा जाएगा कि यही हैं जिसे तुम झुठलाते (इन्कार करते) थे।

मंजिल ७ सिपारा ३० सूरत ८३ आयत १५, १६, १७

मुहम्मद साहब ने कुरान में पहले से ही लिख रखा है कि मेरे बाद आखिरत के समय में खुद खुदा इमाम मेहेंदी के रुप में आएंगे। वे सबके न्यायाधीश के रूप में होंगे तथा सबका न्याय करेंगे। यही बात बाईबिल में भी कही गई है कि पारब्रह्म ने कहा–मैं स्वयं अपनी आत्माओं (भेड़ों) को, जहां कहीं भी वे अज्ञान में बिछुड़ी पड़ीं होंगी, ढूंढूगा और मुलाकात करूंगा और उनको लोगों के सामूहिक रूप से बाहर निकालूंगा। उन्हें अलग–अलग देशों से निकालकर एकत्र

Thus said The Lord, 'Behold, I Myself will seek my sheep and will visit them out of all the places, where they have been scattared in the cloudy and dark day. And I will bring them out to from the pepples and will gather them out of the countries and will bring them to thier own Land.

Chapter 34 : 1

But no one knows the date and hour when the end will be not even the angles. No, nor even God's Son. Only the Father knows.

Matthew 24 : 36

Nijanand App

करूंगा तथा उनको निजधाम में ले जाऊंगा।

बाइबिल ३४ : १

लेकिन कोई भी उस तारीख और घड़ी को नहीं जानता जब महाप्रलय होगी। न तो फरिश्ते ही जानते हैं और न परमात्मा के पुत्र (ईसा मसीह) ही जानते हैं। वह तो केवल पारब्रह्म (परमात्मा) ही जानते हैं।

Mathew २४ : ३६

यद्यपि उन्होंने (परमात्मा ने) संसार को बनाया (हुक्म से) लेकिन संसार उनकी पहचान नहीं करेगा जब वह आएंगे।

John १ : १०

पारब्रह्म (श्री प्राणनाथ जी) की पहचान इस दुनिया के लोगों की नहीं हो पाएगी, मेरी आत्माएं (भेड़ें) मेरी आवाज को पहचानेंगी और मैं उन्हें जानता हूं और वे मेरा समर्थन करेंगी।

John १० : २७

परमधाम की आत्माओं को बाईबिल में "भेड़ें" कहा है। खुदा की आवाज पारब्रह्म की 'श्री कुलजम स्वरुप साहिब' की वाणी है। पारब्रह्म श्री प्राणनाथ जी की वास्तविक पहचान उनकी आत्माएं ही करेंगी।

निश्चित रुप से तुम जानते हो कि कोई भी उस दिन को नहीं जानता कि पारब्रह्म रात्रि में चोर की भाँति अचानक ही आएंगे।

The ssalonians ५ : २

But although he made the world, the world didn't recognize him when he came. John 1:10

My sheep recognize my voice and i know them and they follow me. John 10 : 27

For you know perfectly well that no one knows. That day of the Lord will come unexpectedly like a thief in the night. Thessalonians 5 : 2

Yes, be patient. And take courage for the coming of the lord is near .... For see! The great Judge is coming. James 5:8,9

Nijanand App

हां! धैर्य और साहस रखो, क्योंकि पारब्रह्म का आना नजदीक है। देखो! महान न्यायाधीश आ रहा है।

James ५ : ८, ९

इसके बाद स्वामी जी दिल्ली के लिए चल पड़े। औरंगजेब के राज्य में शरा के काजियों ने हिन्दू धर्म को मिटाने के लिए घोर पाप के नियम बना रखे थे। जिससे कोई भी हिन्दू यदि अपने मुंह से कुरान, अल्लाह या मुहम्मद कह देता था, तो उसकी गर्दन काट दी जाती थी। ऐसे समय में श्री प्राणनाथ जी और उनके मोमिनों ने (आत्माएं) हिन्दू तन, जो कि सबसे उत्तम और श्रेष्ठ कहा है उसमें प्रवेश किया था। जिसका प्रमाण कुरान में भी लिखा है कि अल्लाह और उनके मोमिन हिन्दू तन में आएंगे। अब मुसलमानों को तो कुरान से ही समझाया जा सकता है, इसलिए श्री प्राणनाथ जी के उन साथियों ने श्री प्राणनाथ जी की वाणी से यह ठोक–ठोक कर समझ लिया था कि हिन्दू मुसलमान ओर ईसाई के झगडे मात्र मिथ्या शरीर के हैं। आत्मा धर्मों के चक्कर से परे है। इसलिए औरंगजेब के दरबार में जाने के लिए हजारों प्रयास किए।

जब असफल रहे तो देखा कि केवल तन के वस्त्र ही एक अड़चन है, तो तुरन्त मुसलमानों जैसे वस्त्र धारण कर जामा मस्जिद के काजी के सहयोग से औरंगजेब के दरबार में पहुंचे और कुरान के द्वारा दरबार के काजियों के बीच इमाम मेहंदी के आने की सब पहचान कह डाली, जिससे शरा के काजियों ने जान लिया कि यदि यह सारी बातें बादशाह स्वीकार कर लेंगे तो, वह तुरन्त हिन्दु तन में आए हुए इमाम मेहेंदी के कदमों में चले जायेंगे और हमारी शरा और हुकूमत नष्ट हो जायेगी। इसलिए दुनियां और दुनियां के झूठे मान के भूखे उन शरा के काजियों ने औरंगजेब को मोमिनों से कुरान द्वारा बातचीत का अवसर न दे कर कोतवाल के हवाले किया। न सहने योग्य दंड भी सहन किए परन्तु अपने ईमान को गिरने नहीं दिया और दूसरे दिन उसी शेख इस्लाम जो सुप्रीम कोर्ट का जज भी था और शरा का सबसे बड़ा काजी भी था, उसके दरबार में जा कर कुरान में लिखे हुए खुदा के छः दिन के बारे में और अर्शे अजीम की बातें पूछी तो वह काजी एक भी बात का जवाब नहीं दे सका और फिर अपने घर ले गया, जहां लालदास, शेखबदल और भीम भाई ने बैठ कर कुरान के तीसवें आम सिपारे की आयतों से इमाम मेहंदी के ग्यारवीं सदी में आने और वही बात सनन्ध में से एक प्रकरण द्वारा सुनाई, तो उस काजी के सब संशय मिट गए

Nijanand App

और तीन बार उसने स्वीकार किया कि इमाम मेहंदी साहिब आ गए, आ गए, आ गए। हम स्वीकार करते हैं! पर यह बात बादशाह के कान तक नहीं पहुंचने दी। उसके बाद औरंगाबाद में राजा भावसिंह ने जहान मुहम्मद, मिहीन खान, अव्वलखान, फतेउल्लाह ये चार काजी जो दिल्ली के दरबार के सदस्य थे, सौंपा। और कहा कि यदि यह चारों कुरान के अनुसार आपको आखरूल जमा इमाम मेहंदी मान कर लिख दें तो मैं औरंगजेब को आपके चरणों में लाने के लिए लड़ूंगा। दो माह के अन्दर अन्दर चारों ने कुरान से स्वामी जी के साथ मुहम्मद साहिब की कही बातें जो खुदा के बारे में कही थी, समझी और भावसिंह को लिख कर दे दिया कि श्री प्राणनाथ जी ही आखरूल जमां इमाम मेहंदी अल्लाह तआला हैं। उसके बाद इसका विस्तार बीतक साहिब में है। अधिक जानकारी के लिए कृपया वहां अध्ययन करें। उसके पश्चात् औरंगजेब का भेजा हुआ शेख खिदर स्वामी जी को पकड़ने के लिए आया। जब वे रामनगर में केतकी नदी के किनारे पर थे, तब सबसे पहले भिखारी दास और शेख खिदर श्री प्राणनाथ जी के पास गए और चर्चा सुनने के बाद (कुरान–पुराण से) शीश झुकाया और आखरूल जमां इमाम मेहंदी मान कर तारतम लिया। रामनगर का राजा हिन्दु था, पर लालची पंडितों के आधीन होने के कारण उनके चरणों में नहीं आ सका, पंडित लोग हमेशा स्वामी जी की राजा के सामने निंदा ही करते थे और यही कहते थे कि उनकी चर्चा सुनने मत जाना, क्योंकि वह लोग यह जानते थे कि यदि राजा ने उनकी चर्चा सुन ली तो हमें दरबार से निकाल देगा और हमारी रोटी समाप्त हो जायेगी।

उसके बाद जब छत्रसाल जी को स्वामी जी के आने की सूचना देवकरण जी ने दी, तो बड़ी उमंग और उत्साह से जो सारे भारतवर्ष में किसी ने नहीं दिखाया, छत्रसाल जी ने उस उत्साह के साथ स्वामी जी को बुलाया। उनका ज्ञान सुना और ज्ञान सुन कर तारतम लिया, उसके पश्चात् स्वामी जी पन्ना जी में पहुंचे। किलकिला नदी के विष को दूर किया। सामने जो टेकरी थी, उसे देखते ही पहचान लिया कि यह हमारा स्थान है और वहां पर सदा के लिए अपना झंड़ा लगा दिया। उसके बाद छत्रसाल जी ने और उनकी रानियों ने उनके अन्दर बैठे अक्षरातीत की पहचान की और चौपड़े की हवेली में ले गई। मंझली रानी ने अपनी साड़ी और छत्रसाल जी ने अपनी पाग का पावड़ा बिछा कर स्वागत

Nijanand App

किया तो उनका चाचा बलदीवान एक भयंकर कर्मकाण्डी था। वह लोकलाज मर्यादा के विरूद्ध कार्य देखकर सहन नहीं कर सका। और फिर स्वामी जी ने जब कुरान से भी यह पहचान कराई कि जिस प्रकार हिन्दुओं के ग्रन्थों में निष्कलंक बुद्ध अवतार कहा है, उसी प्रकार कुरान में मुझे ही आखरुल जमां इमाम मेहंदी, श्री देवचन्द्र जी ईसा रूह अल्लाह तथा तुम्हें अली दरगाह कहा है। इस तरह का ज्ञान सुनकर छत्रसाल जी ने प्रतिज्ञा की कि –

इन महंमद के दीन, जो ल्यावेगा ईमान।

छत्रसाल तिन ऊपर, तन मन धन कुरबान।।

किरंतन ११८/१६

इस बात को चाचा बलदीवान भला कैसे सहन कर सकते थे। तुरन्त छत्रसाल जी को कहने लगे कि मालूम होता है कि तुम्हारी बुद्धि पर पर्दा ही पड़ गया है। आज दिन तक बड़े–बड़े ऋषि, अवतार, भगवान आए, लेकिन हिन्दू होने के कारण किसी ने भी मुहम्मद का नाम नहीं लिया। मुझे प्रतीत होता है कि यह औरंगजेब का गुप्तचर है और हमें युद्ध में मरवा डालेगा। ऐसे वचन छत्रसाल जी के लिए सुनने की शक्ति से बाहर थे, और तुरन्त चाचा बलदीवान से कहा कि रोज की खटपट मिटाने के लिए मुसलमानों के बड़े से बड़े काजी और हिन्दुओं के बड़े से बड़े विद्वान को बुलाकर स्वामी जी से संशय मिटा लो। तब चाचा बलदीवान ने भारत के सबसे बड़े काजी अब्दुल रसूल जो महोबे का रहने वाला था, बुलाया और कुरान से वार्ता हुई।

स्वामी जी ने कुरान के तिलकर्रसूल सिपारे में लिखी हुई दुनिया की पांच तरह की पैदाईश के बारे में पूछा और यह भी पूछा कि उन पांच में से तुम अपने को किसमें मानते हो? तब अब्दुल रसूल जो कि शरा का सबसे बड़ा काजी था, जिसके द्वारा पढ़ाए हुए काजी बड़े–बड़े पदों पर थे, पर मारफत के ज्ञान के बिना उत्तर नहीं दे सका और कुरान में लिखे अनुसार ग्यारहवीं सदी में अल्लाह तआला आएगा। यह जानकर स्वामी जी के चरणों में गिर पड़ा कि ये ही अल्लाह तआला इमाम मेहंदी है। बलदीवान जी के शक करने पर उसने कुरान सिर पर रखकर कसम खाई। जिससे उन्हें कुछ विश्वास हुआ। फिर भारत के प्रमुख विद्वानों को मिलाकर उनमें से तीन सुन्दर, वल्लभ, और बद्री थे, चुने गए उन तीनों में से भी श्री बद्री दास जी जो सबसे अधिक ज्ञाता थे। उनसे स्वामी जी

Nijanand App

ने लिखित रूप से भागवत के दशम स्कन्ध में से पांच प्रश्न वे दिए जो तारतम के बिना खोले नहीं जा सकते थे, तो उसके उत्तर में बद्रीदास जी ने लिख कर दिया कि ये प्रश्न श्री कृष्ण अक्षरातीत के बिना कोई हल नहीं कर सकता और न ही खोल सकता है। और कहा कि श्री प्राणनाथ जी ही पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानन्द है, स्वीकार किया।

ऊपर दिए गए सब विषयों के अनुसार अब तो कोई संशय की बात ही नहीं रह जाती कि प्राणनाथ जी के बिना नित्य वृन्दावन में लीला करने वाले कृष्ण कभी भी पूर्ण ब्रह्म सिद्ध हो ही नहीं सकते, क्योंकि श्री प्राणनाथ जी की तरह श्री कृष्ण का कहीं कलियुग में आना नहीं लिखा है और न ही श्री कृष्ण का आखरूल जमां इमाम मेहंदी अल्लाह तआला के रूप में तथा विजियाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक जाहिर होकर एवं सातवें दिन खुदा के रूप में जाहिर होकर सारी दुनिया को आठ बहिश्तों में अखंड करेगें और अपनी आत्माओं को परमधाम ले जाएंगे ऐसा कहीं भी नहीं लिखा है। श्री कृष्ण जी तो योगमाया में ही अखंड है, जिसे छोडकर वह स्वयं परमधाम नहीं आ सकते हैं तो उनको पूर्ण ब्रह्म कहना तो अज्ञानता है। हां! कुछ लोग जैसे तुलसीदास ने राम को सच्चिदानंद कहा है। वे भी श्री कृष्ण को पूर्ण ब्रह्म कहकर अपना पेट पालते रहें, तो हमें कोई कष्ट नहीं है। यह तो सभी धर्म ग्रन्थों कुरान, बाईबिल से सिद्ध हो गया कि श्री प्राणनाथ जी ही विजियाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार आखरूल जमां इमाम मेहंदी अक्षरातीत सच्चिदानन्द पूर्णब्रह्म हमारे धाम के धनी है। तो बोलिए "श्री प्राणनाथ प्यारे की जय।"

यह छठी तरंग सम्पूर्ण हुई।

Nijanand App

सातवीं तरंग

बुद्ध और बुद्ध निष्कलंक अवतार

श्री सुन्दर बाई के तन में और श्री इन्द्रावती जी के तन में कौन कौन सी और कैसी लीलाएं हुई?

पारब्रह्म अक्षरातीत का कभी जन्म नहीं होता है। वह स्वलीला अद्वैत है तथा एक पल के लिए भी अपनी आत्माओं से जुदा नहीं रह सकते। अनेक ग्रन्थों में यह साक्षी है कि ब्रज और रास की लीला के पश्चात् परमधाम की आत्माएं इस कलियुग में अवतरित हुईं।

परमधाम की जिन आनन्द स्वरूपा सखियों ने ब्रज और वृन्दावन में तन धारण कर लीला की थी, वे अपनी इच्छा के अधूरी रहने के कारण कलियुग में पुनः प्रगट होंगी और उसके बाद उसी अखंड परमधाम में जायेगी।

अक्षरातीत की प्रियाओं को जागृत करने के लिए अक्षरातीत का आवेश और अक्षर ब्रह्म की बुद्धि अवतरित होगी। वह अक्षर ब्रह्म की बुद्धि भारत भूमि में सभी जीवों को मुक्ति देने वाली होगी और सुन्दरबाई (श्यामा जी) के तन में विराजमान होकर उनके द्वारा फैलेगी।

बृहत् सदाशिव संहिता श्लोक १७, १८, १६

माहेश्वर तन्त्र अध्याय ४१/२०, २१, २२ के अनुसार अक्षरातीत धाम धनी परमधाम में अपनी आत्माओं से कहते हैं—जब तुम मोह सागर में मग्न हो जाओगी तब यह सुन्दरबाई ही प्रत्यक्ष रूप से तुम्हारा उद्धार करेंगी। जब—जब तुम महा

आनन्दरूपा याः सख्यो व्रजे वृन्दावने स्थिताः।

कलौ प्रादुर्भविष्यन्ति पुनर्यास्यन्ति तत्पदम्।।

चिदावेशवती बुद्धिरक्षरस्य महात्मनः।

प्रबोधाय प्रियाणां च कृष्णस्य परमात्मनः।।

मुक्तिदा सर्व लोकानां भविता भारताजिरे।

प्रसरिष्यति हृद्देशे स्वामिन्याः प्रभुणेरिता।।

बृ० स० शि० सं० श्लोक १७, १८, १६

Nijanand App

मोह सागर में डूबने लगोगी, यह तुम सभी का उद्धार करेगी। इसमें कोई भी संशय नहीं है। तब–तब इनका सहारा लेकर ही सभी सखियां भ्रम रूपी मोह सागर को पार करेगी। यह जानते हुए सुन्दरबाई मुझे प्रिय है।

सुन्दर बाई (श्यामा जी) के अंदर पारब्रह्म अक्षरातीत के आवेश स्वरूप से विराजमान होने पर ही जागनी कार्य की लीला शुरू होगी। यह वर्णन पुराण संहिता अ० ३१ श्लोक ५० में इस प्रकार किया गया है–

अज्ञान के अथाह सागर में फंसी हुई आत्माओं को कृपा के स्वरूप उत्तम पुरुष (पारब्रह्म) स्वयं उस मोह रूपी महासागर से निकालेंगे।

कुरान पक्ष में भी यही बात कही गई है कि जब अल्लाह तआला की शक्ति रूह अल्ला (श्यामा जी) के अंदर विराजमान होगी तब वह दज्जाल (माया) का कत्ल करेंगे। इस दुनियां में चालीस वर्षों तक उनकी बादशाही होगी।

रसूल अल्ला ने फरमाया–मेरे और ईसा के दरम्यान और कोई भी नबी नहीं होगा और बेशक ईसा (रुहअल्ला) उतरेंगे। उनका रंग सुर्खी और सफेदी के दरम्यान है, और कपड़े हल्के साधारण पहने होंगे। तबाह कर देगा अल्लाह, इनके जमाने में सब मजहबों के सिवाय इस्लाम (निजानन्द सम्प्रदाय) के, हलाक करेंगे वे दज्जाल को, फिर दुनिया में रहेंगे चालीस साल तक।

दाऊद तरजमा कलमा वहीद–उल जमा पृ०३३८/६१८

अगाधा ज्ञानजलधौ पतितासु प्रियासु च।
स्वयं कृपामहाअम्भोधौ ममज्ज पुरुषोत्तमः।।

पु० सं० अ० ३१/५०

अवाच्यं तत्तु जानीहि तथापि कथयामि ते।
कदाचिन्मोहजलधौ यदा मग्ना भविष्यथ।।
तदेयं सुन्दरी साक्षाद्भवतीरुद्धरिष्यति।
यदा यदा महामोहजलधौ परिमज्जथ।।
तदातदोद्धरित्रीयं भवतीनत्रि संशयः।।
यदेनामवलम्ब्यैव सख्यः सर्वा भ्रमार्णवं।
तरिष्यन्तीति विज्ञातवतो मे सुन्दरी प्रिया।।

मा० त० अ० ४१/२०, २१, २२

Nijanand App

अब कहो जी बाकी क्या रहया, निसान कयामत का जाहेर कहया।
पातसाही ईसा बरस चालीस, लिख्या सिपारे अठाईस।।

बड़ा कयामतनामा १/५

सुन्दरबाई इन फेरे, आए हैं साथ कारन जी। *प्र० हि०*

भागवत १२/२/३७, ३८ के अनुसार–शान्तनु के भाई देवापि कलियुग में देवचन्द्र नाम के तन को धारण करेंगे। जिसमें सुन्दरबाई (श्यामा जी) की आत्मा प्रवेश करेगी तथा इक्ष्वाकु वंशी (सूर्यवंशी) मरु राजा का जीव श्री मेहेराज नाम के तन को धारण करेगा, जिसमें श्री इन्द्रावती जी की आत्मा होगी। इन्हीं दोनों तनों में पारब्रह्म विराजमान होकर लीला करेंगे।

श्री देवचन्द्र जी उमरकोट में मत्तू मेहता के घर कुंवरबाई के तन से सम्वत् १६३८ में जन्मे। उनके तन में पारब्रह्म के आनन्द अंग श्यामा जी की आत्मा प्रगटी। जब श्री देवचन्द्र जी की उम्र ११ वर्ष की हुई तो उनके मन में यह विचार आया कि मैं कौन हूं? कहां से आया हूं और मेरी आत्मा का पति कौन है?

जब भया बरस अग्यारमां, तब मन उपज्यो विचार।
मैं कौन कहां थे आइयो, कहाँ मेरो भरतार।।

बीतक साहब २/२६

अपने इस लक्ष्य तक पहुंचने के लिए उन्होंने अनेक पंथों में भ्रमण किया। उन्होंने अनेक प्रकार की कसनी की।

श्री देवचन्द्रजी ने भोजनगर में हरिदास जी से मन्त्र लिया कि "भज मन श्री वृन्दावन कुंज बिहारी नित्य विलास" तब वो दिन रात श्री हरिदास जी की सेवा करने लगे। तब हरिदास जी ने प्रसन्न होकर बाल मुकुन्द जी की मूर्ति उन्हें देने का वादा किया, परन्तु रात्रि में ही बाल मुकुन्द जी की मूर्ति अदृश्य

देवापिः शन्तनोर्भ्राता मरुश्चेक्ष्वाकुवंशज।
कलाप ग्राम आसाते, महायोग बलान्वितौ।।
ताविहैत्य कलेरन्ते वासुदेवानुशिक्षितौ।
वर्णाश्रमयुतं धर्म पूर्ववत् प्रथयिष्यतः।।

भागवत १२/२/३६, ३८
महाभारत आदिपर्व ६४/६१, ६२, वायु पुराण ६६/२३४ (२३५)

Nijanand App

हो गई। तब हरिदास जी को साक्षात् बाल मुकुन्द जी ने दर्शन दिए और कहा। "तुम मुझे किसे देना चाहते हो? उन्होंने तो मुझे अखण्ड मुक्ति दी है तो हम उनसे सेवा कैसे करा सकते हैं? हम तो उनके अहसान नहीं सह सकते।" यह सारा वृतान्त देवचन्द्र जी को हरिदास जी ने उस समय बताया, परन्तु देवचन्द्र जी के पास जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान न होने के कारण यह नहीं समझ पाए कि यदि कृष्ण पूर्णब्रह्म होते तो मूर्ति अदृश्य न होती और स्वयं श्री कृष्ण अखण्ड गोलोक से आकर ऐसे वचन भी न कहते।

अन्त में नवतनपुरी में सम्वत् १६७८ में श्याम जी के मन्दिर में अक्षरातीत पारब्रह्म ने अपने आवेश स्वरूप से प्रगट होकर साक्षात् दर्शन दिया और उन्हें अपनी, परमधाम की और उनके निज स्वरूप की पहचान कराई और कहा कि ब्रज–रास में हम और तुम आए और फिर आवेश स्वरूप से उनके अन्दर विराजमान हो गए। श्री देवचन्द्र जी के तन में अक्षरातीत की आवेश स्वरूप बैठक होने पर जागृत बुद्धि भी उनके अन्दर स्थित हो गई। अतः उन्हीं को बुद्धावतार कहते हैं।

एते दिन त्रैलोक में, हुती बुध सुपन।

सो बुध जी बुध जाग्रत ले, प्रगटे पुरी नौतन।।

परिकरमा २/११

इतने दिन तक संसार में स्वप्न की बुद्धि होने के कारण निराकार से आगे का ज्ञान कहने या बताने वाले न तो कोई गुरु थे, न कोई देवी देवता और न त्रैगुन में ही यह शक्ति थी। इसलिए भागवत, पुराण संहिता, माहेश्वर तन्त्र, वेद इत्यादि सब ग्रन्थ स्वप्न की बुद्धि के हैं।

अब वह पूर्ण ब्रह्म अक्षरातीत अपने आवेश स्वरूप से जागृत बुद्धि परा शक्ति को साथ लेकर श्री देवचन्द्र जी के तन में प्रवेश किये और परा शक्ति तारतम ज्ञान लेकर देवचन्द्र जी के तन से क्षर, अक्षर, अक्षरातीत के भेद खोल दिए जो आज दिन तक किसी ने भी नहीं खोले थे। इसलिए श्री देवचन्द्र जी को बुद्धावतार की शोभा मिली और उस समय के हिन्दुओं के पूज्य स्थान जैसे– अवन्तिकापुरी, उज्जैन, मथुरा, काशी, अयोध्या, कांची, बद्रीनाथ इत्यादि स्थानों से निराकार के आगे का ज्ञान नहीं मिलता था, जो नवतनपुरी से जाहिर हुआ। उस समय मंगलपुरी तथा पद्मावती पुरी की स्थापना ही नहीं हुई थी। इसलिए इन दो पुरियों से

Nijanand App

नवतनपुरी को उत्तम कहने का प्रश्न ही नहीं उठता।

पहले बीज उदे हुआ, पुरी जहां नौतन।

सब पुरियों में उत्तम, हुई धंन धंन।।

प्र० हि० बेहदवाणी चौ० १०४

इसलिए शास्त्रों में तो निष्कलंक अवतार का होना लिखा था, पर श्री देवचन्द्र जी के तन में निज बुद्धि न आने के कारण से परमधाम की वाहेदत, खिलवत, हकीकत, अर्स की साहेबी और इश्क क्या है? इसके भेद नहीं खुल सके और आखिरत के कुल निशान, कयामत का आना इत्यादि के भेद इनसे नहीं खुल सके इसलिए इनके तन से वह कमी बाकी रह जाने के कारण से यह अवतार अधूरा रहा।

अवतार जो नेहेकलंक को, सो अश्व अधूरो रहयो।

पुरुख देख्यो नहीं नैनों, तुरी को कलंकी तो कहयो।।

क० हि० १८/३६

यही प्रमाण भविष्य पुराण प्र० प० ३ अध्याय २६ श्लोक १ में कहा गया है कि वह पुरातन पारब्रह्म पुरुष निष्कलंक दिव्य घोड़े पर (श्री इन्द्रावती की आत्मा पर बैठ कर) निज बुद्धि की ज्ञान रुपी तलवार से, इश्क–बंदगी रुपी कवच और सत्य रुपी ढाल से युक्त होकर, अज्ञान रूपी म्लेच्छों के अहंकार को मार कर सब को जागृत बुद्धि का ज्ञान देकर अखंड करेंगे।

इसके अतिरिक्त हिन्दु और मुसलमानों के ग्रन्थों में लिखवा ही रखा था कि श्री राजजी का हुक्म श्री देवचन्द्र जी के तन से इतना ही काम लेने का था, तो जागृत बुद्धि की शक्ति ने काम किया जिससे–

सुन्दर बाइऐं देखिया, दिल के दीदो मांहे।

बृज रास और धाम की, पर जागनी की सुध नाहें।।

सनंध ४१/१६

तदा स भगवान्कल्किः पुराण पुरुषोद्भवः।

दिव्यं वाजिनम् आरुह्य खड्गी वर्मी च चर्मधृक।।

म्लेच्छांस्तान्दैत्य भूतांश्च हत्वा योगं गमिष्यति।।

भविष्य पुराण प्र० प० ३ अ० २६ श्लोक १

Nijanand App

अब उनके दिल में इस बात की तड़फ थी कि जागनी का कार्य मुझ से हो, इसलिए जब आवेश स्वरूप से प्रगट होकर श्री राजजी कृष्ण रूप में ब्रज और रास की लीला करते थे, तो श्री देवचन्द्र जी ने ६६ चिट्ठियां अलग अलग सुन्दर साथ से लिखवा कर दिलवाई कि जागनी श्री देवचन्द्र के तन से हो, परन्तु आवेश स्वरूप श्री कृष्ण जी ने एक भी चिट्ठी का उत्तर नहीं दिया क्योंकि –

रुहअल्ला करी बंदगी, तिन में उनकी मैं।
तो गुनाह कहया इन पर, इन मैं मांग्या हक पे।।

खिलवत ४/१०

क्योंकि, यह शोभा तो श्री राज जी ने पहले से ही इन्द्रावती के तन को देने का निश्चय कर दिया था, इसलिए न तो उन्होंने कुछ बंदगी, कसनी की और न कोई संकट सहे, क्योंकि बिना कुछ किए ही वह पूर्ण ब्रह्म अपनी पांचों शक्तियों सहित उस तन में विराजमान होकर कुरान और पुराण के छिपे गुझ भेदों को खोल कर सातों कयामत के निशान जाहिर किए। हिन्दू–मुसलमान सब को एक पारब्रह्म की पहचान कराये। सब को आठ बहिश्तों में कायम होने के दरवाजे खोल दिए। ब्रह्मसृष्टि को हक की साहेबी और इश्क क्या है? का ज्ञान इस तन से हुआ, जिससे अब किसी भी प्रकार का संशय पूर्णब्रह्म की पहचान में बाकी नहीं रह जाता और जागनी की शोभा भी इसी तन को मिली। इसलिए इस तन को ही विजियाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार प्राणनाथ जी की शोभा मिली। श्री इन्द्रावती जी कहती है–

मेरे न कछू बन्दगी, न कछू करी करनी।
ओ मैं मुझमें न रही, ए तो मैं हकें करी अपनी।।

खिलवत ४/११

मैंने न कुछ बंदगी की और न करनी की, इसलिए मेरे अन्दर वह अभिमान नहीं है, जो देवचन्द जी में कसनी और बंदगी करने के कारण था। अब हक श्री राज जी मेरे अन्दर विराजमान हैं तो मेरे मुख से जो मैं निकल रही है, यह मैं, उनकी अपनी मैं है।

क्यों मेहेर मुझ पर भई, ए थी दिल में सक।
मैं जानी मौज मेहबूब की, वह देत आप माफक।।

किरंतन ८२/५

Nijanand App

धाम धनी की मेहर मेरे ऊपर इतनी क्यों हुई? यह मेरे दिल में संशय था। अब मुझे मालूम हुआ कि उनकी मेहर भक्ति, कसनी, तपस्या, जप, तप से या बिलख बिलख कर रोने से भी नहीं मिल सकती। यह न्यामत वाहेदत की है, इसलिए यह धनी की अपनी मेहर है, जिसे आप माफक जब चाहें बना दे।

कुंजी भेजी हाथ रूहअल्ला, पर खोल न सके ए।
फुरमान खुले आखिर, हाथ सूरत हकी जे।।

खिलवत १४/७०

श्री राज जी महाराज ने श्यामा जी के हाथ तारतम ज्ञान की चाबी तो दी पर खोलने का हुक्म नहीं दिया, इसलिए वह कुरान के छिपे भेद नहीं खोल सके क्योंकि आखिरत के छिपे भेद खोलने की ताकत केवल हकी सूरत पारब्रह्म श्री प्राणनाथ जी को ही है। इसलिए वह कार्य श्री इन्द्रावती जी के तन में विराजमान होकर खुद किया और स्वयं परमधाम से ही निश्चित स्थान पद्मावतीपुरी को अपना धाम पांचों शक्तियों सहित विराजमान होकर दरगाहें मुकद्दस के रूप में जाहेर किया। आज भी गुम्मट साहिब के सामने एक ओर "निजनाम श्री कृष्ण जी अनादि अक्षरातीत" और दूसरी ओर "ला इलाह इलअल्लाह मुहम्मद रसूल अल्लाह" लिखा है और यह भी अंकित है कि "ब्रज रास जागनी लीला और नवतनपुरी भी है परना माहें" इस से स्पष्ट हो जाता है कि नवतनपुरी में श्री राजजी की जिस आवेश शक्ति ने श्री देवचन्द्र जी के तन में श्यामा जी के अन्दर प्रवेश किया, वह श्री देवचन्द्र जी के तन को छोड़ने के बाद श्री मेहेराज ठाकुर के तन में विराजमान हो गई, इसलिए बिहारी जी के धाम चलने के बाद उस गादी पर न कोई बैठ सका और न कोई बैठ सकेगा। आज वो स्थान केवल चाकला मन्दिर कहलाता है। गादी बन्द हो गई, क्योंकि अक्षरातीत की गादी (आसन) कुरान में और वाणी में मोमिनों का दिल कहा है न कि गादी।

आज हाल में नवतनपुरी में जो मन्दिर है, वह तो छत्रसालजी ने केसरबाई को बिहारी जी के धाम चलने के बाद भेजा, तो इसका नव निर्माण हुआ।

और पद्मावती पुरी धाम में पांचों शक्तियों के विराजमान होने से पता चल गया कि राज जी श्यामा जी, नूर (अक्षर की आत्मा) हुक्म के स्वरूप जबराईल और असराफील के साथ पूर्ण हकी सूरत के रूप में विराजमान हैं। अब नवतनपुरी को श्री पद्मावती पुरी की तुलना में रखने का प्रश्न ही नहीं उठता। नवतनपुरी के

Nijanand App

मन्दिर में केवल उनके ज्ञान का स्वरूप श्री कुलजम स्वरूप सिंहासन पर पधराये है जो बाकी सभी मन्दिरों में है, स्वरूप साहिब तो श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप को मानते है, अतः नवतनपुरी का मन्दिर दूसरे मन्दिरों की तरह प्राणनाथ जी का मन्दिर है। नवतनपुरी के लिए तो शास्त्रों में कोई प्रमाण भी नहीं है, पद्मावती पुरी में साक्षात् हकी सूरत श्री प्राणनाथ जी साक्षात् विराजमान हैं और नूरी झण्डा भी अपने हाथ से केवल वहां ही लगाया है, जिसका प्रमाण शास्त्रों के अनुसार सुन्दरी तन्त्र में लिखा है–

पद्मावती और केन नदी के बीच विन्ध्याचल पर्वत के धरातल पर इन्द्रावती नाम की आत्मा कलियुग में होगी।

अब ये तो साधारण बुद्धि वाला भी आदमी समझ सकता है कि धाम तो केवल पद्मावती पुरी है। बाकी सभी स्थान श्री प्राणनाथ जी की चौकियां हैं। चौकियां (थाने) कभी केन्द्र नहीं हो सकते।

''ठौर ठौर थाने दिए, मेला हुआ है मध देस।''

किरंतन ५५/१२

इसलिए सभी मंदिरों का नाम ''श्री प्राणनाथ जी मन्दिर'' ही होना चाहिए। यदि किसी ने अज्ञानतावश "कृष्ण प्रणामी मन्दिर" लिख भी दिया है तो समझ लेना चाहिए कि वे योगमाया के वृन्दावन वाले कृष्ण की ही कृपा के पात्र हो सकते हैं, प्राणनाथ जी की कृपा के नहीं। जितना हम श्री प्राणनाथ जी को जाहिर करेंगे, उतना ही शीघ्र परमधाम जाएंगे।

फिर दूसरा, जिस मन्दिर में भगवान हनुमांन की मुर्ति स्थापना होती है, तो उस मन्दिर का नाम हनुमान का मन्दिर और शिव की मूर्ति की स्थापना होने पर शिव मन्दिर कहलाता है। राम की मूर्ति की स्थापना से वह राम मन्दिर कहलाता है, तो जिस मन्दिर में श्री प्राणनाथ जी का साक्षात् स्वरुप ''स्वरुप साहेब'' पधराए हुए हैं, उस मन्दिर का नाम श्री प्राणनाथ जी का मन्दिर ही होना चाहिए। कृष्ण से अब हमारा सम्बन्ध ही नहीं है।

"पद्मावती केन शरदे विन्ध्य पृष्ठे विराजिता।
इन्द्रावती नाम सा देवी भविष्यति कलौयुगे।।"

Nijanand App

अब श्री देवचन्द्र जी और श्री इन्द्रावती जी के तन (मेहेराज ठाकुर) की लीलाओं के भेद वाणी के अनुसार निम्न है–

लीला दोऊ पेहेले करी, दूजे फेरे भी दोए।
बिना तारतम ए माएने, न जाने कोए।।

प्र० हि० ३१/२६

धाम धनी ने पहले फेरे में दो लीलाएं (ब्रज और रास की) की तथा दूसरे फेरे में भी दो लीलाएं की। एक नवतनपुरी में और दूसरी श्री पद्मावती पुरी "ठौर ठौर थाने दिए, मेला हुआ है मध देस।" में बिना तारतम वाणी के यह भेद कोई भी नहीं जान सकता है।

एक में उपज्या तारतम, दूजे मिने उजास।
सब बिध जाहेर होएसी, जागनी प्रकांस।।

प्र० हि०–३१/२७

एक तन (श्री देवचन्द्र जी) के अंदर तारतम ज्ञान आया और दूसरे तन (श्री इन्द्रावती जी) के अंदर निज बुद्धि के ज्ञान का उजाला हुआ। (जिससे परमधाम की वाहेदत, खिलवत एवं शोभा श्रृंगार का वर्णन हुआ) इस तरह से अब यह जागनी की लीला सब तरह से जाहिर हो जायेगी।

आवेस जाको मैं देखे पूरे, जोगमाया की नींद होए।
पर जो सुख दीजे जागनी, हम बिना न जाने कोए।।

क० हि० २३/४६

श्री इन्द्रावती जी कहती हैं कि मैंने सतगुरू श्री देवचन्द्र जी को श्री राजजी के आवेश का स्वरूप जाना था, किन्तु जिस तरह से हमें योगमाया में धनी की सुध तो थी, परन्तु घर की सुध नहीं थी, उसी तरह से सतगुरू श्री देवचन्द्र जी को तारतम ज्ञान से घर की सुध तो थी, किन्तु परमधाम की वाहेदत, खिलवत, इश्क की हकीकत और जागनी की सुध नहीं थी। जागनी के सुखों को मेरे बिना और कोई भी नहीं जानता है।

ए पैए बतावे पार के, नहीं तारतम को अटकल।
आवेस जागनी हाथ पिया के, एह हमारा बल।।

क० हि० २३/४६

तारतम ज्ञान कोई अटकल का ज्ञान नहीं है। तारतम ज्ञान से ही निराकार से परे की सम्पूर्ण पहचान परमधाम तक होती है। आवेश से जो जागनी होती

Nijanand App

है, वह तो धाम धनी के हाथ में है, जो उन्होंने मुझे बख्शी है और यही मेरी (श्री इन्द्रावती जी की) ताकत है।

अब कहो जी बाकी क्या रहया, निसान कयामत का जाहेर कहया।
पातसाही ईसा बरस चालीस, लिख्या सिपारे अठाईस।।

बड़ा कयामत नामा १/५

कुरान के २८ वे सिपारे में लिखा है कि ईसा रूहअल्ला (श्यामा जी) ४० वर्ष तक बादशाही करेंगे। जब श्यामा जी ने अपना दूसरा जामा श्री इन्द्रावती जी के तन को धारण किया, तो संवत् १७३५ से संवत् १७७५ तक चालीस वर्ष तक उनकी बादशाही हुई, अर्थात् ग्यारहवीं के दस वर्ष और बारहवीं के तीस वर्ष होते हैं।

तारतम के सुख साथ आगे, बिध बिध पिया ने कहे।
पीछे ए सुख इंद्रावती को, दया कर सारे दिए।।

कलस हि० २३/५०

श्री राजजी, श्री देवचन्द्र जी के तन में बैठ कर तरह तरह के तारतम के सुख और क्षर से परे नित्य वृन्दावन में अखण्ड कृष्ण की लीला के सुख सुन्दर साथ से कहे। इस के बाद यह सारे सुख (तारतम के और आवेश के जिससे जागनी होती है) श्री इन्द्रावती जी को धाम धनी ने कृपा करके दिए।

धन पिया धन तारतम, धंन धंन सखी जो ल्याई।
धंन सखी मैं सोहागनी, जो मों में ए निध आई।।

कलस हि० २३/५१

मेरे धनी धन्य धन्य है। तारतम ज्ञान धन्य धन्य है। तारतम ज्ञान को लाने वाली श्री श्यामा जी धन्य हैं, परन्तु निज बुद्धि तारतम, आवेश और जागनी की सुध की न्यामत मेरे अन्दर आई, जिससे मैं सुहागिन हो गई।

पिया ल्याए मुझ कारने, और हुआ न काहूं जान।
मैं लिया पिया विलसिया, विस्तारिया प्रमान।।

कलस हि० २३/५२

श्री इन्द्रावती जी कहती है कि मेरे पिया परमधाम से निज बुद्धि (हकीकत, वाहेदत, खिलवत और मारफत का ज्ञान ले कर आए, जिसके द्वारा सब ग्रन्थों

Nijanand App

के भेद खुलते हैं।) ला कर मेरे अन्दर विराजमान हुए और इस बात का किसी को पता नहीं चला। मैंने अपने पिया से परमधाम के सब सुख प्राप्त किए। अब उसी ज्ञान का विस्तार हो रहा है। यही इसका प्रमाण है कि श्री राज जी महाराज मेरे अन्दर विराजमान है।

एक सुख सुपन के, दूजे जागते ज्यों होए।
तीन लीला पेहेले ए चौथी, फरक एता इन दोए।।

कलस हि० २३/७५

एक सुख तो सपने का होता है जो वास्तव में नहीं होता है और एक सुख जागृत में होता है जो साक्षात् होता है, इस तरह से ब्रज की लीला में धनी के सुख सपने जैसे थे। रास में धनी की पहचान तो थी, परन्तु घर की पहचान नहीं थी। अब इस ब्रह्मांड में श्री देवचन्द्र जी के तन की लीला ब्रज की तरह सपने की है और श्री इन्द्रावती जी के तन से लीला परमधाम के अखण्ड जागृत सुखों की है। यह ही दोनों में अन्तर है।

डिजां संडेहो सिंधडी, तूं धणूं बलही इमाम।
सिंध हिंद माधा थेई, पोरया जेदां रुम स्याम।।

सनंध ३५/१०

हे सिंधडी इन्द्रावती। तुम इमाम मेहंदी (श्री राज जी) को बड़ी प्यारी हो। अब तुम ही सब को तारतम वाणी का ज्ञान दो। सिन्ध की सखी इन्द्रावती, हिन्द की सखी सुन्दरबाई को हरा कर आगे हो गई। अब बिहारी जी के अनुयायी चाकला मन्दिर के सभी लोग चाकला मन्दिर को छोड़ कर श्री प्राणनाथ जी को अपना धनी मान कर चरणों में आयेंगे।

दसमी के सवा नवा बरस, ता दिन पैदा सरूप सरस।
पीछे जो तीसरा हुआ तमाम, वह चांद ए सूरज आखिरी इमाम।।

बड़ा कयामतनामा प्र० १२ चौ० ४

दसवीं सदी में जब सवा नौ वर्ष बाकी थे, अर्थात् संवत् १६३८ में, श्यामा जी श्री देवचन्द जी के तन में प्रगटीं। उनके बाद तीसरे हकी स्वरूप इमाम मेहंदी के नाम से जाहिर हुए। कुरान में मलकी स्वरूप श्री देवचन्द्र जी को चन्द्रमा (पूर्णमासी का) और हकी स्वरूप (श्री प्राणनाथ जी) को सूर्य कहा गया है।

कहों कुरान देखियो अंदर, पट उड़ाऊं आड़ा अंतर।

Nijanand App

उस ईसे पीछे जो उस्तुवारी, सो तो कायदे खुदा के सिफत सारी।।

बड़ा कयामत नामा प्र १२ चौ० ५

कुरान के इन रहस्यों को आत्मा की दृष्टि से देखना। जाहिरी नज़र का ही तुम्हारे ऊपर पर्दा है। जिसे मैं समाप्त कर देती हूँ। रूह अल्लाह श्री देवचन्द्र जी के बाद श्री प्राणनाथ जी की लीला हुई, जिनकी सिफ़त खुदा के बराबर है अर्थात् वे खुद खुदा हैं।

लरी सुंदरबाई पिउ सों, इन आगम के कारन।

पर पाया नहीं पड़ उत्तर, एक आधा भी सुकन।।

सनंध प्र० ४१, चौ० २०

सुन्दरबाई (श्यामा जी) जागनी के लिए धनी से बहुत लड़ीं कि जागनी मेरे हाथ से कराइए, परन्तु धनी की तरफ से उन्हें इस बात का जरा भी उत्तर नहीं मिला।

इन पड़ उतर वास्ते, बाईजीऐं किए उपाए।

बिलख बिलख वचन लिखे, सो ले ले रूहें पोहोंचाए।।

सनंध प्र० ४१, चौ० २१

अपने तन से जागनी करवाने की अर्जी का उत्तर लेने के लिए श्यामा जी ने कई उपाय किए तथा रो–रोकर वचन पातियों में लिखे और धनी के प्रगट होने पर (आड़िका लीला में श्री कृष्ण का रूप धारण करने पर) सुन्दर साथ द्वारा पहुंचवाई।

यों उनहत्तर पातियां, लिखियां धाम धनी पर।

तब सैयां हम भी लिखीं, पर नेक न दई खबर।।

सनंध प्र० ४१ चौ० २२

इस तरह ६६ चिट्ठियाँ श्री कृष्ण के रूप में लीला करते हुए धाम के धनी श्री राजजी को दीं। फिर पीछे हमने (श्री इन्द्रावती जी ने) भी लिखा परन्तु एक का भी उत्तर नहीं दिया।

कुंजी भेजी हाथ रूहअल्ला, पर खोल न सके ए।

फुरमान खुले आखिर, हाथ सूरत हकी जे।।

Nijanand App

खिलवत प्र० १४, चौ० ७०

श्री राजजी ने श्री श्यामा जी के हाथ तारतम ज्ञान की चाबी देकर भेजा परन्तु वे कुरान के भेद नहीं खोल सके। कुरान के छुपे रहस्य आखिर में हकी सूरत इमाम मेहंदी श्री प्राणनाथ जी के द्वारा ही खुले।

साहेब तेरी साहेबी भारी।

कौन उठावे तुझ बिन तेरी, सो दई मेरे सिर सारी।।

किरंतन प्र० ६१, चौ० १

श्री इन्द्रावती जी कहती हैं, हे धाम धनी! श्री राज जी! आपकी साहेबी बड़ी भारी है। इस साहेबी का बोझ आपके बिना और कोई दूसरा नहीं उठा सकता है। इतनी बड़ी साहेबी की शोभा आपने मुझे (श्री इन्द्रावती जी) को दे दी है।

यह सातवीं तरंग समाप्त हुई।

Nijanand App

आठवीं तरंग

'श्री कृष्ण और श्री प्राणनाथ' में अन्तर

श्रीमद्भागवत में व्यास जी ने अपनी पहुंच के अनुसार नित्य वृन्दावन वाले श्रीकृष्ण को इष्ट मानकर इस प्रकार नमन किया है–

इस विश्व की उत्पत्ति, पालन और विनाश के कारण रूप एवं शारीरिक, मानसिक एवं जीव के जन्म–मरण (आध्यात्मिक, आधिदैविक तथा आधिभौतिक) इन तीनों प्रकार के कष्टों को मिटाने वाले सच्चिदानन्द के रूप श्रीकृष्ण को हम प्रणाम करते हैं।

भा० अ० १/१

बृहत्सदाशिव संहिता श्लोक ७ में कहा गया है कि सत्, चिद्, आनन्द लक्षणों से युक्त सत्ता से व्यापक श्री कृष्ण ही अक्षरातीत हैं, जिन्होंने प्रियाओं के द्वारा प्रार्थना किए जाने पर वृन्दावन में प्रेम से रमण किया।

द्वापर के बाद ही भागवत, पुराण संहिता, माहेश्वर तन्त्र आदि ग्रन्थ लिखे गए हैं। संवत् १६७८ से पहले इस ब्रह्मांड में जागृत बुद्धि ही नहीं थी, अतः इन सभी ग्रन्थों में श्री कृष्ण जी को जो पूर्ण ब्रह्म कहा गया है, वह गलत नहीं है जिसके लिए स्वामी जी ने भी कहा है–

निज नाम सोई जाहेर हुआ, जाकी सब दूनी राह देखत।
मुक्त देसी ब्रह्मांड को, आए ब्रह्म आतम सत।।

किरंतन ६३/१

जागृत बुद्धि से श्री प्राणनाथ जी ने अपने निज स्वरूप की पहचान कराई कि मैं पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द प्राणनाथ हूं, मुझे नाम, तत्व, गुण नहीं लगते है और ग्रन्थों में भी यह लिखा है कि– तारतम के बिना कोई भी पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द की पहचान नहीं करा सकता, तो दुःख इस बात का है कि आप तारतम को लेकर भी सपने की बुद्धि अपरा शक्ति के ज्ञान का आसरा लेकर क्यों भटकते फिरते हैं? अब तो जागृत बुद्धि का सूर्य तुम्हारे लिए ही उगा हुआ है, फिर तुम

"तारतम्येन जानाति सच्चिदानन्द लक्षणम्।"

Nijanand App

प्राणनाथ जी की वाणी के दुश्मन क्यों बने बैठे हो? सूर्य का दुश्मन कौन होता है–

उल्लू न चाहे ऊग्या सूर, जिन अंधों का दुस्मन नूर।

ए सुन वाका जो न ल्यावे इमान, सोई चमगीदड़ उल्लू जान।।

कयामतनामा ७/२०

जो उगे हुए सूरज को देख कर भी रात्रि के ही गुण गा रहे हैं, वे अपने प्रति स्वयं सोचें।

इस खेल में श्री प्राणनाथ जी की भाषा सरल और सुगम है। साहित्यिक और कठिन अर्थ वाली भाषा नहीं है। इस दुनिया से बिल्कुल परे वह परमधाम है, जहां की बोली और भाषा ही अलग है।

श्री कृष्ण नाम हिन्दू संस्कृति एवं यहां की भाषा के आधार पर रखा गया नाम हैं। अरबी, फ्रांसीसी या चीनी आदि भाषाओं में इस तरह के नाम पारब्रह्म के लिए नहीं रखे जा सकते हैं, बल्कि इन शब्दों का जो अर्थ है उसके आधार पर अलग–अलग भाषाओं में अलग अलग नामों की मान्यता हो जाती है। हिन्दी में जिसको करुणाशील और दयालु कहते हैं। अरबी में उसे रहमान और रहीम कहते हैं, किन्तु अंग्रेजी में Kindest and Pityful कहते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि सभी भाषाओं में तो कहने का भाव एक ही होता है, किन्तु शब्दों के उच्चारण में अन्तर होता है, यद्यपि किसी भी नाम को कहीं की भी भाषा में बिना हेर फेर किए वहां की लिपि में लिखा जा सकता है, किन्तु नाम की कल्पना तो वहां की संस्कृति, सभ्यता एवं साहित्य पर निर्भर करती है। प्राचीन भारतीय संस्कृति में राम और श्याम नाम रखे गए और अंग्रेजों की संस्कृति में चर्चिल और पीटर रखा जा सकता है किन्तु यह अंग्रेजी नाम भारतीय संस्कृति में रखे ही नहीं जा सकते है। पारब्रह्म हिन्दू, मुसलमान, ईसाई सभी का है।

इसलिए हिन्दुस्तान में तो नाम कृष्ण रखा गया, ब्रज और रास खेल कर अरब में गए तो उस तन का नाम वहां के अनुसार मुस्तफा बेग रखा गया, तो फिर यदि श्री कृष्ण को पूर्णब्रह्म कहते हैं, तो मुस्तफा बेग को पूर्णब्रह्म क्यों नहीं मानना चाहिए? इसका प्रमाण वाणी में भी है कि– **''ब्रज रास खेल के, आए बरारब स्याम।''**

वहीं अक्षर की आत्मा तथा धनी का जोश जो रास में लीला कर रहा था,

Nijanand App

रास की लीला के बाद अरब में आकर मुस्तफा बेग (पंडित अब्दुला के लड़के) में प्रवेश किया। बाद में भले ही उनको मुहम्मद की शोभा मिली, लेकिन गुरूनानक देव जी ने इस विषय में स्पष्ट कहा है।

पारजात गोपी ले अइया, वृन्दावन में रमण किया।
ले नीले कपड़े वस्तर पहने, तुर्क पठाणी अमल किया।।

गुरू ग्रन्थसाहिब

जिसका प्रमाण भागवत और कुरान से बराबर मिलता है। भागवत में नन्द जी के घर रहते हुए इन्द्र के प्रकोप होने पर गोवर्धन पर्वत उठाकर जो लीला की, वही लीला अरब में हूद नबी के घर तूफान आने पर की और जो श्रीमदभागवत में ब्रज से वृन्दावन में जाते समय ब्रह्मांड का प्रलय करना लिखा है, वही कुरान के अन्दर नूह नबी के घर तूफान आने पर किस्ती पर चालीस जुत्थों को बिठाकर पार करने का वर्णन आता है। जिसको श्री प्राणनाथ जी ने खुलासे में कहा है– "महम्मद श्री कृष्ण जी स्याम।" तो यह विरोध जो श्रीकृष्ण और मुहम्मद में है। उनमें है, जिनकी दृष्टि शरीर में है और जो सपने की बुद्धि रखते हैं, वे लोग ही श्रीकृष्ण नाम का झगड़ा खड़ा कर समाज और लोगों को टुकड़ों में बांट रहे है। अब यदि कृष्ण और मुस्तफा बेग के दोनों नामों को हटा कर इन दोनों के अन्दर बैठी शक्ति को देखें, तो वही अक्षर की आत्मा और धनी का जोश है, जो सब का खुदा और मालिक है। यह बातें समझ लेने से सबके विरोध खत्म हो जाते हैं, तो स्पष्ट है कि जो पूर्णब्रह्म के नाम को ही पकड़ रहे है और उन से विरोध कर रहे हैं, तो उनको इस मिथ्या जगत का कोई स्वार्थ है, जो उन्हें दुखी कर रहा है। बाइबिल में भी लिखा है–

सच्चिदानन्दरूपाय विश्वोत्पत्त्यादिहेतवे।
तापत्रय विनाशाय श्रीकृष्णाय वयं नुमः।।

भा० १/१

कृष्ण एवाक्षरातीतः सच्चिदानन्दलक्षणः।
प्रियाभिः प्रार्थितः प्रेम्णा रेमे वृन्दावने विभुः।।

बृ० सदाशिव संहिता श्लोक ६

The God which relates with only a one community is not a God.

Nijanand App

वह परमात्मा, जो किसी एक समाज का या किसी एक धर्म का है, वह कभी भी पूर्णब्रह्म नहीं हो सकता। पूर्णब्रह्म तो उसी को कहा जा सकता है जो सब का एक है। वेदों के अनुसार–ब्रह्म एक ही है, दूसरा नहीं।

कुरान के अनुसार– सारी दुनियां का खुदा एक है।

गुरूनानक जी के अनुसार–"नानक एको सुमरिए, जन्म मरण दुःख जाए।" अर्थात् उस एक पारब्रह्म का ही स्मरण करना चाहिए, जो जन्म मरण से छुड़ाता है। बाइबिल के अनुसार–

वह पूर्ण ब्रह्म परमात्मा सब का एक है।

अब सुन्दर साथ जी! आप ही बताइये ऊपर दिए हुए पूज्य ग्रन्थों के सार को सत्य मानें या कुछ संस्कृत के पढ़े स्वार्थी पंडितों और भ्रम में डालने वाले विद्वानों को, जो स्वयं पारब्रह्म को नहीं पहचानते और केवल एक तन में आकर जो लीला की, उस तन के नाम श्री कृष्ण का जाल बिछा कर तरह तरह के अपने रहस्य की अपने मन से गाथायें बना कर भ्रमित कर रहे हैं। वे तो अपने पेट की अग्नि को पूरा करने के लिए यह भी कह रहे हैं कि एक खीजड़े का वृक्ष अक्षरातीत का अंश है और वही खीजड़े का वृक्ष गुरू पुत्र अर्थात श्री देवचन्द्र जी का सुपुत्र है। ऐसे लोगों को, जो धर्म या धर्म गुरू की गादियां दे रहे हैं तो बताइये! ऐसे गुरूओं को मानने वाले अनुयायियों का ठिकाना कहां होगा? वैसे स्वामी जी ने ऐसे गुरूओं के बारे में वाणी में लिखा है–

बैठत सतगुरू होए के, आस करें सिष्य केरी।

सो डूबे आप सिष्यन सहित, जाए पड़े कूप अंधेरी।।

कि. २६/६

द्वापर के अन्त से लेकर और कलियुग में सम्वत् १६७८ तक जब तक नवतनपुरी में जागृत बुद्धि प्रगट नहीं हुई तब तक के जितने शास्त्रों–श्री मदभागवत, पुराण संहिता और माहेश्वरतन्त्र में श्री कृष्ण को ही पार ब्रह्म कहा है, वह सत्य है। परन्तु उस समय तक जागृत बुद्धि, जिसने आकर रूप और

"एको ब्रह्म द्वितीयो न अस्ति।"

"कुल्ल हु अल्ला अहद।"

"The Supreme truth God is only one."

Nijanand App

स्वरूप (मिथ्या तन जिसमें आकर कोई बैठता है वह तन रूप कहलाता है) और उसका नाम होता है, जो अन्दर कृष्ण के तन में शक्ति (अक्षर की आत्मा और अक्षरातीत का जोश था) थी, वह तो नाम, तत्व, गुण से परे हैं, इसलिए पूर्णब्रह्म का नाम श्री कृष्ण नहीं है और वह तो साक्षात पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द प्राणनाथ हैं। भले ही उन्होंने मिथ्या नाटक की लीला श्री कृष्ण के तन में या मुस्तफाबेग के तन में या देवचन्द्र के तन में या मेहराज ठाकुर के तन में की, किन्तु शोभा उनके तनों की है, किन्तु वे तन शोभा लेकर ओझल हो गए। परन्तु प्राणनाथ तो जन्म मरण से परे हैं। जो शास्त्रों में भी कहा गया है कि पूर्ण ब्रह्म परमात्मा जन्म मरण से परे है। कई संसारी लोग प्राणनाथ जी की पांचवे दिन की लीला में तन छोड़ने पर समझ बैठे हैं कि प्राणनाथ जी चले गए। उनका उपवास रखते हैं और स्वयं परम भक्त कहलाते हैं। भले ही वह किसी स्थान पर रहते हैं।

कृपया! विचार करके देखें, तो आज भी श्रावण वदी चौथ वाले दिन श्री जी ने अपने तन को छोड़ते समय श्री कुलजम स्वरूप साहब को अपनी गादी पर गादीअभिषेक करवाया। उसकी खुशी में पन्ना जी में सुन्दर साथ के घर घर में प्रसाद बांटा जाता है और स्वामी जी ने भी वाणी में स्पष्ट कह दिया, ताकि सुन्दर साथ यह न समझे कि श्री प्राणनाथ जी कहीं चले गए है।

दिन एते हक जस गाइया, लदुन्नी का बेवरा कर।
हकें हुकम हाथ अपने लिया, जो दिया था महंमद के सिर पर।।

सिनगार प्र० १/६५

श्री इन्द्रावती जी कहती है कि बस इतने ही दिन तक श्री राजजी को मेरे तन से काम लेना था। जो मेरे तन से वाणी को विस्तार करवाया और मेरे मुख से धनी का गुणगान करवाया। अब वह कार्य (हकी सूरत वाला) मेरे तन से समाप्त हो गया तथा अब वह हुक्म उन्होंने अपने हाथ में ले लिया और–

अब हुकमें द्वारा खोलिया, लिया अपने हाथ हुकम।
दिल मोमिन के आए के, अर्स कर बैठे खसम।।

सिनगार प्र० २ चौ० १

मेरे तन को छोड़ने के बाद अब श्री राजजी महाराज ने मोमिनों को जागनी करने के लिए दरवाजा खोल दिया है। परन्तु जिस तन में वे अर्स करके बैठेंगे, उस तन से ही जागनी होगी। इससे और ज्यादा कह दिया–

Nijanand App

अब साथ न छोडूं एकला, साथ मुझे छोड़े क्यों।

कहया मेरा साथ न लोपे, साथ कहे करूं मैं त्यो।।

कलस हिन्दुस्तानी २१/१६

अर्थात् मैं अपने परमधाम के किसी भी साथ को अकेला नहीं छोडूंगा। सबको मैं अपनी मेहर के नीचे रखूंगा। जिस साथ को मेरी पहचान हो जाएगी, वह मुझसे कभी अलग नहीं होगा। जो मैंने वाणी में जागृत बुद्धि के ज्ञान से खुलासा कर दिया। अब सुन्दरसाथ उसके विरूद्ध नहीं चलेगा और मैं भी सुन्दरसाथ जो कुछ चाहेगा, उसको पूरा करूंगा। आज लोग वाणी का मंथन नहीं करते, क्योंकि आज दिन तक (३०० वर्षों से) रूमालों में लपेटकर हमें उस प्राणनाथ जी के स्वरूप से जुदा कर अछूता बनाया गया और सूतक का डर दिखाने से सुन्दर साथ इतने भटक गए कि फिर त्रैगुण फांस, कर्मकाण्ड, सांसारिक देवी–देवताओं का पूजन और श्री प्राणनाथ जी की वाणी से विमुख होकर चलने को ही उन्होंने अपना धर्म बना लिया। ऐसे गुरूओं को मानना या झुकना अपने–अपने सोचने की बात है।

साथ में ऊपर से और डराया गया कि पहले वाणी की तालीम लो। इस खुदाई इल्म की तालीम तो खुदा जिसके तन में बैठकर दें, उसी को प्राप्त होती हैं।

ए हक बातन की बारीकियां, सो हक के दिए आवत।

ना सीखे सिखाएं ना सोहबतें, हक मेहेरें पावत।।

सिनगार ४/१२

स्वयं श्री प्राणनाथ जी कहते हैं कि इस कुलजम स्वरूप की वाणी के गुझ भेद श्री राजजी महाराज की मेहर जिस पर हो उसको ही मालूम होते हैं। यह सीखने से, तालीम लेने या गुरूओं की सेवा करने से ये प्राप्त नहीं होती।

महामत कहें ए मोमिनों, ए ऐसी कुंजी इलम।

ए मेहेर देखो मेहेबूब की, तुमको पढ़ाएं आप खसम।।

सागर प्र० १३, चौ० ५३

आप श्री महामति जी कहते हैं कि परमधाम की निज बुद्धि का ज्ञान परमधाम की ऐसी कुंजी है, धनी जिसे मोमिनों के दिल में बैठकर स्वयं पढ़ा

Nijanand App

रहे है, क्योंकि इस ज्ञान को आज दिन तक न किसी ने समझा है और न जाना है। धनी की इस मेहर को तुम देखो।

अब सवाल यह होता है कि श्रीराज जी हमारे दिल में कैसे बैठें? तो यह साधारण सी बात है कि जब हम किसी को जान लेते हैं, पहचान लेते हैं, घनिष्ठ सम्बन्ध कर लेते हैं तो वह हमारे दिल से कभी भी निकल नहीं सकता। उस पारब्रह्म श्री राजजी को अपने हृदय में बिठाने का सुगम रास्ता श्यामा महारानी ने तारतम के अन्दर स्पष्ट बता दिया है, जिसे हम केवल पढ़ते रहते हैं, परन्तु करते नहीं। आप ही सोचिए कि यदि किसी कागज पर हम लिख कर केवल कहते रहे कि मैं तुमसे प्रेम करती हूं, मै तुमसे प्रेम करती हूं तो क्या वह हमारे दिल में आ जाएगा? आप कहोगे कि नहीं। तब क्या करना है?

''ए सत वाणी मथ के, लेऊं जो इनको सार।''

इन सार में कई सत सुख, सो मैं निरने करूं निरधार।।

पर हम तो केवल माला के मनके पर या नहाते समय ही पढ़ते है। कभी अपने दिल और आत्मा से नहीं पूछा कि क्या कभी वाणी खोल कर मंथन किया? जब तक मंथन नहीं करोगे, तब तक उस प्राणनाथ की पहचान नहीं होगी, और जब तक यह पहचान नहीं होगी कि वे मेरे धनी है और मैं उनकी अंगना हूं तब तक हमारे दिल में विरह की तड़प नहीं उठेगी। और जब विरह की तड़प आपके दिल में उठेगी, तब श्री प्राणनाथ तुरन्त आपके दिल में आकर विराजमान हो जाएंगे क्योंकि उन्होंने खुद कहा है कि–

मैं लिख्या है तुमको, जो एक करो मोहे साद।

तो दस बेर मैं जी जी कहूं, कर कर तुमें याद।।

सिनगार २६/२३

जो रूहें तड़प तड़प कर याद करती हैं, पहचान कर अपने सम्बन्ध से पुकारती है तो धनी उन से कभी भी जुदा नहीं हो सकते।

रेहे ना सकों मैं रूहों बिना, रूहें रहे ना सकें मुझ बिन।

जब पेहेचान होवे वाको, तब सहे ना बिछोहा खिन।।

खिलवत १५/५

तूं आपे न्यारी होत है, पिउ नहीं तुझसे दूर।

Nijanand App

परदा तूं ही करत है, अंतर न आड़े नूर।।

किरंतन १३२/५

ए मेरी आत्मा! तुम मुझे एक मनुष्य तन में बैठा देख कर यह समझती हो कि मैं मर चुका हूं। तुम मेरे लिए व्रत और उपवास करती फिरती हो। तुमने ही मुझसे परदा कर रखा है। मैं तो तुमसे एक पल के लिए भी जुदा नहीं हो सकता। स्वामी जी वाणी में कहते हैं–

कोई बात खुदा से न होवहीं, ऐसे न कहियो कोए।

पर एक बात ऐसी बका मिने, जो हक से भी न होए।।

खिलवत १६/३२

ए मेरी आत्माओं! हे मेरी रूहों! ए मेरे सुन्दर साथ जी! भला आप ही सोचो कि क्या कोई भी कार्य ऐसा है, जो पारब्रह्म अपने हुक्म से नहीं कर सकते, पर एक बात ऐसी मूल सम्बन्ध परमधाम से है कि वह पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द प्राणनाथ अपनी आत्माओं से कभी भी जुदा नहीं हो सकते। उनकी ताकत से बाहर है।

इससे यह सिद्ध हो जाता है कि पारब्रह्म हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख और इसाई सभी का है। उनके ज्ञान का सन्देश सभी भाषाओं में व्यक्त किया जा सकता है, किन्तु वह शब्दों से भी परे है। वह किसी विशेष जाति, सम्प्रदाय और भाषा से बन्धे हुए नहीं है।

अछर अछरातीत कहावहीं, सो भी कहियत इत सब्द।

सब्दातीत क्यों पावहीं, ए जो दुनियां हद।।

किरंतन प्र० १०७, चौ० ७

अक्षर और अक्षरातीत भी यहां के शब्दों में ही कहा जाता है, ऐसे शब्दातीत पारब्रह्म को भला यह हद की दुनियां कैसे पा सकती है?

श्री मुख वाणी के अनुसार आत्मा के अनादि, अखंड, मूलपति को ही "प्राणनाथ" कहते है इसी प्रकार "श्री राज" शब्द का अर्थ होता है–चमकना, जगमगाना, शानदार या सुन्दर प्रतीत होना, प्रमुख (सिरदार) होना, राजा इत्यादि। इन लक्षणों के आधार पर पारब्रह्म को श्री राज जी कहते है। यद्यपि "राज" शब्द संस्कृत साहित्य के अनेक ग्रन्थों में है, किन्तु पारब्रह्म के नाम के रूप में केवल श्री मुखवाणी और बीतक साहिब में ही है। श्री मुख वाणी और बीतक साहिब के अतिरिक्त अन्य सभी धर्मग्रन्थों में इस शब्द का प्रयोग पारब्रह्म से अलग दूसरे

Nijanand App

नामों और अर्थों में किया गया है। जब श्री इन्द्रावती जी के तन से वाणी अवतरित होने लगी, तो वाणी के अंदर धाम धनी ने स्वयं अपने मुखारविन्द से खुद को "श्री राज" कहा, इसलिए इस नाम पर संशय करने का प्रश्न ही नहीं होता। जब श्री राज जी ब्रज और रास की लीला में आए, तब उनका नाम श्री कृष्ण पड़ा। जब श्याम जी के मन्दिर में उन्होंने अपने आवेश स्वरूप से प्रगट होकर श्री देवचन्द्र जी को अपनी पहचान दी तब कहा कि–

"निजनाम श्री कृष्ण जी, अनादि अछरातीत"।

श्री देवचन्द्र जी से अपना नाम "श्री कृष्ण" कहने का मुख्य कारण यह था कि श्री कृष्ण नाम से ही श्री राजजी ने ब्रज और रास में लीला की थी और उस समय तक के हिन्दू धर्म शास्त्रों (भागवत, पुराण संहिता, माहेश्वर तन्त्र आदि) में श्री कृष्ण नाम से ही पारब्रह्म की पहचान थी। श्री देवचन्द्र जी भी इसी नाम के आधार पर अखंड गोलोक का ध्यान किया करते थे। बाल मुकुन्द और बांके बिहारी अखंड तो हैं, किन्तु अनादि नहीं है क्योंकि अनादि पदार्थ की कभी भी उत्पति नहीं होती है। बाल मुकुन्द और बांके बिहारी के तन पहले योगमाया में नहीं थे इसलिए अपनी पहचान कराते हुए श्री राजजी ने कहा कि इस योगमाया के ब्रह्माण्ड से परे अक्षर ब्रह्म है और उससे भी परे मैं अक्षरातीत हूं। यह तारतम है, जो हद से लेकर परमधाम की पहचान कराता है, किन्तु–

तारतम का जो तारतम, अंग इंद्रावती विस्तार।
पैए देखावे पार के, तिन पार के भी पार।।

क० हि० प्र० २३ चौ. ७२

खिलवत, परिकरमा, सागर और सिनगार यह चारों किताबें "तारतम का तारतम" है। जिसको धाम धनी ने श्री इन्द्रावती जी के अन्दर विरामजान हो कर स्वयं कहा है। इन चारों किताबों में धनी ने परमधाम की वाहेदत, खिलवत, शोभा और श्रृंगार का खुलासा किया है, इसलिए ये चारों किताबें तारतम का भी तारतम कहलाती हैं। इन चारों किताबों में कहीं भी "श्री कृष्ण" शब्द नहीं है। कुलजम स्वरूप और बीतक साहिब में एक भी ऐसी चौपाई नहीं है, जिसमें यह लिखा हो कि मूल मिलावे में सिंहासन पर बैठे हुए श्री कृष्ण जी अपनी रूहों को यह माया का खेल दिखा रहे है, जबकि "श्री प्राणनाथ" और "श्री राज जी" का हर जगह वर्णन है।

Nijanand App

सुंदरबाई कहे अछरातीत से, खेल में आया साथ।

दोए सुपन ए तीसरा, देखाया प्राणनाथ।।

किरंतन प्र० ६४ चौ० ६

इस चौपाई की तरह कहीं भी श्री कृष्ण को खेल दिखाने वाला नहीं लिखा है। प्राणनाथ कोई व्यक्ति विशेष नहीं, बल्कि मूल मिलावे में विराजमान साक्षात् धाम धनी श्री राज जी ही श्री प्राणनाथ है। यद्यपि प्रकाश गुजराती प्रकरण ३३ चौपाई २३ में–

घर श्री धाम अने श्री कृष्ण, ए फल सार तणों तारतम। कहा गया है, किन्तु इसका भाव यह है कि तारतम ज्ञान से योगमाया में स्थित श्री कृष्ण तथा उस परमधाम और श्रीराजजी के जाहिरी नाम अक्षरातीत श्री कृष्ण की हकीकत का पता चला, जो बिना तारतम के आज तक सम्भव नहीं हो सका था। प्रकाश हिन्दुस्तानी में इसी के समान अर्थ वाली चौपाई है–

अछरपार घर अछरातीत, धाम के यामें सब चरित्र।

प्रकास हि० प्र० ३५ चौ० २७

निज नाम सोई जाहेर हुआ, जाकी सब दुनी राह देखत।

मुक्त देसी ब्रह्माण्ड को, आंए ब्रह्म आतम सत।।

किरंतन प्र० ७६ चौ० १

अर्थात् अक्षर से परे अक्षरातीत के धाम की सभी लीलाओं का जाहिर होना ही जागनी का सार है।

आज दिन तक दुनियां जिस नाम के इन्तजार में थी कि उसके मिलने से अखण्ड मुक्ति मिलेगीं। वह मुक्ति देने वाली ब्रह्मसृष्टियां और भवसागर से जीवों को पार उतारने वाला पारब्रह्म का जाहिरी नाम (निजनाम श्री कृष्ण जी अनादि अक्षरातीत) आ गया है, जिससे सारे ब्रह्माण्ड को ब्रह्मसृष्टि मुक्ति देगी।

दुनी नाम सुनत नरक छूटत, इनों पे तो असल नाम।

दिल भी हकें अर्स कहया, याकी साहेदी अल्ला कलाम।।

सिनगार २१/८४

दुनियां तो पारब्रह्म के लौकिक नाम "श्री कृष्ण" (अनादि अक्षरातीत) सुनने से आवागमन के चक्कर से छूट कर अखण्ड हो जायेगी परन्तु रूहों के पास

Nijanand App